आदिवासी एक्सप्रेस

आमजन का एक मात्र हिंदी दैनिक अखबार

रांची, रविवार
04 मई 2025
वर्ष: 38, अंक: 152
पृष्ठ: 12, मूल्य: 3रु
RNI NO.: 49065/1989
DAVP CODE: 130961

फीचर

'अदाएं तेरी' में नोरा फतेही और ईशान खट्टर ने मचाया धमाल! दर्शक उनकी ऑन-स्क्रीन अदाओं के हुए दीवाने

झारखंड

उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक ने की नीट परीक्षा के सफल आयोजन को लेकर बैठक किए

हज़ारीबाग

विभावि में आयोजित हुआ एक देश- एक चुनाव विषयक गोष्ठी, बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए सांसद मनीष जायसवाल

झारखंड में वकीलों की हो गई बल्ले-बल्ले: फायदा देने वाला पहला राज्य बना

राजनीतिक संवाददाता द्वारा

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शनिवार को राज्य के वकीलों को बड़ी सौगात देते हुए उनके लिए मुख्यमंत्री अधिवक्ता स्वास्थ्य बीमा योजना शुरू की। इस योजना के अंतर्गत लाभार्थी अधिवक्ता और उसके परिवार को 5 लाख रुपए तक का स्वास्थ्य बीमा दिया जाएगा। वहीं गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए यह राशि 10 लाख रुपए तक रहेगी। यह योजना निःशुल्क होगी, यानी लाभार्थी अधिवक्ता को बिल्कुल भी प्रीमियम राशि नहीं देना होगी। इस योजना को शुरू करने के साथ ही झारखंड वकीलों को यह सुविधा देने वाला देश का पहला राज्य बन गया है।

योजना के बारे में बताते हुए अधिकारियों ने कहा कि यह देश में ऐसी पहली योजना, जिसमें अधिवक्ताओं को इस तरह के स्वास्थ्य बीमा योजना का लाभ दिया जा रहा है। योजना के लाभार्थी के अतिरिक्त उनके आश्रितों को भी योजना का लाभ दिया जाएगा। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस योजना का लाभ झारखण्ड उच्च न्यायालय के स्तर पर गठित झारखण्ड अधिवक्ता कल्याण निधि न्यासी समिति के अंतर्गत निबंधित अधिवक्ताओं को मिलेगा। इस समिति से जुड़े वकील वेबसाइट https://sehis.jharkhand.gov.in पर जाकर बीमा योजना का लाभ ले सकते हैं। पहले चरण में इस योजना से राज्य के 15 हजार अधिवक्ताओं को जोड़ा गया है।

योजना की शुरुआत के मौके पर बोलते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा, आज इस कार्यक्रम के जरिए मैं कहना चाहता हूं कि सरकार की चिताएं राज्य के हर वर्ग के लिए है। हमने हमेशा कोशिश की है कि सरकार की आवाज और सरकार की योजनाएं सभी तक पहुंचे। झारखण्ड, देश का सबसे पिछड़ा प्रदेश है यह सुनकर बड़ी तकलीफ होती है। दिन-रात हमारी कोशिश रहती है कि झारखण्ड को इस कलंक से बाहर निकालें। अबुआ सरकार का हर एक क्षण, हर एक घड़ी, राज्य की जनता के लिए समर्पित है।

सीएम सोरेन ने कहा, राज्य के हमारे अधिवक्तागण और उनके परिवारजनों के सुरक्षित भविष्य के प्रति संवेदनशीलता के साथ अबुआ सरकार आगे बढ़ी है। आज आपका दिन है, आपके उत्साह का दिन है। आपकी कई चिंताओं और जिम्मेदारियों का बोझ कम कर हमने आज अपने कंधे पर लेने का काम किया है। उन्होंने कहा, न्याय व्यवस्था के क्रियान्वयन का जिम्मा आप सभी के कंधों पर होता है। मैंने बहुत करीब से आप सभी की वास्तविक, पारिवारिक और सामाजिक स्थिति को देखा है। हमारे आलोचक कहते हैं कि हम वोट बैंक के लिए काम करते हैं, जबकि मेरा मानना है कि हम काम करेंगे तो लोग स्वाभाविक रूप से हमसे जुड़ेंगें। यही कारण रहा कि हमें पूर्व की अपेक्षा इस बार आप सभी समेत राज्य की जनता ने भरपूर आशीर्वाद दिया है।

आगे उन्होंने कहा, झारखण्ड, देश का पहला राज्य बना है जहां राज्य के सभी अधिवक्ताओं को सामाजिक सुरक्षा से जोड़कर उनके भविष्य को सुरक्षित किया जा रहा है। आप सभी को मुख्यमंत्री अधिवक्ता स्वास्थ्य बीमा योजना शुभारंभ कार्यक्रम के आज के इस शुभ और ऐतिहासिक अवसर पर बहुत-बहुत बधाई, शुभकामनाएं और जोहार।

बीमा योजना की पूरी जानकारी =

बीमा योजना का फायदा पाने वाले प्रति अधिवक्ता के लिए वार्षिक प्रीमियम राशि 6 हजार रुपए का भुगतान राज्य सरकार झारखंड अधिवक्ता कल्याण कोष निधि न्यासी समिति को करेगी। जिसके द्वारा राशि JSAS को हस्तांतरित किया जाएगा।

अधिवक्ताओं के आश्रितों को भी बीमा लाभ मिलेगा। जिसमें पति/पत्नी/पुत्र/वैध दत्तक पुत्र (25 साल तक और बेरोजगार हो), पुत्री (अविवाहित/विधवा/परित्यक्ता पुत्री), नाबालिग भाई एवं अविवाहित बहन एवं आश्रित माता-पिता (पेंशनर के मामले में प्रतिमाह 9 हजार रुपए और उस पर तत्समय अनुमान्य महंगाई राहत से कम पेंशन प्राप्त करने वाले)

दिव्यांग आश्रितों को आजीवन स्वास्थ्य बीमा। महिला अधिवक्ता के मामले में माता-पिता अथवा सास-ससुर में से कोई एक पक्ष। पति-पत्नी दोनों के राज्य सरकार के कर्मी होने की

मंत्री के करीबी से जुड़े कारोबारियों के ठिकानों पर 30 घंटे तक चली छापामारी

क्राइम संवाददाता द्वारा

चाईबासा। झारखंड सरकार में राजस्व एवं परिवहन मंत्री दीपक बिरुवा के करीबी झारखंड खैनी के मालिक नितिन प्रकाश, पंकज चिरानियां और डिस्ट्रीब्यूटर पिंटू अग्रवाल के ठिकानों पर जीएसटी इंटेलिजेंस का छापा देर शाम तक जारी रहा।डायरेक्टरेट जनरल ऑफ गुड्स एंड सर्विस टैक्स इंटेलिजेंस (डीजीजीआई) के एडीजी आशीष कुमार मिश्रा के निर्देश पर यह छापेमारी की जा रही है। डीजीजीआई के पश्चिमी बंगाल के दुर्गापुर स्थित रिजनल यूनिट को खैनी के कारोबार में करोड़ों रुपये की जीएसटी चोरी किये जाने की सूचना मिली थी।

इसके बाद संयुक्त निदेशक दुर्गेश तिवारी के नेतृत्व में एक टीम का गठन कर दुर्गापुर से पश्चिमी सिंहभूम जिला मुख्यालय चाईबासा स्थित झारखंड खैनी के मालिक नितिन प्रकाश और पार्टनर पंकज चिरानिया के आवास, कार्यालय और फैक्ट्री में शुक्रवार को दोपहर तीन बजे के बाद अलग-अलग टीमों ने एक साथ धावा बोला।

इसमें जमशेदपुर जीएसटी ऑफिस के लगभग एक दर्जन इंस्पेक्टर की मदद ली गयी। छापेमारी के दौरान किसी तरह की विपरित परिस्थितियों को संभालने के लिए सीआरपीएफ के जवानों को भी टीम साथ लेकर पहुंची।

टीमों ने गुरुवार की रात लगभग 12 बजे तक कारोबार से संबंधित दस्तावेजों को खंगाला। इसके उपरांत शुक्रवार को झारखंड खैनी के डिस्ट्रीब्यूटर पिंटू अग्रवाल के नीमडीह स्थित आवास और कार्यालय में भी छापेमारी के लिए टीम पहुंची।

दिनभर की जांच : शुक्रवार को जीएसटी अधिकारियों ने दिन भर जांच की। नितिन प्रकाश के न्यू कॉलोनी नीमडीह स्थित आवास में शुक्रवार की दोपहर लगभग दो बजे जांच पूरी की।

इसके बाद जमशेदपुर से आयी टीम वापस लौट गयी, जबकि दुर्गापुर की टीम देर शाम तक कंपनी के सदर बाजार के खिरवाल मार्केट स्थित कार्यालय में डटी हुई थी।

इस संबंध में पूछे जाने पर डायरेक्टरेट जनरल ऑफ गुड्स एंड सर्विस टैक्स इंटेलिजेंस से जुड़े एक अधिकारी ने बताया कि हमारी दुर्गापुर यूनिट को गुप्त सूचना मिली थी कि झारखंड खैनी का करोड़ों रुपये का कच्चा कारोबार किया जा रहा है। इससे सरकार को बड़े राजस्व का नुकसान हो रहा है।

इस सूचना को सत्यापित करने के लिए झारखंड खैनी से जुड़े चाईबासा, बंगाल और ओडिशा में कारोबार की पड़ताल की जा रही है।

इस क्रम में खैनी का स्टाक, उससे संबंधित कागजात, पिछले पांच साल में हुए लेन-देन से जुड़े दस्तावेजों को देखा गया है। दोनों पार्टनर नितिन प्रकाश और पंकज चिरानिया से भी पूछताछ की जा रही है।

सभी जगहों की टीमों के लौटने के उपरांत पूरा मिलान किया जायेगा। इसके बाद ही यह स्पष्ट हो पायेगा कि कितने रुपये की जीएसटी की हेराफेरी संबंधित लोगों ने की है।

इसमें दो दिन का समय लगेगा। सोमवार को मुख्यालय में रिपोर्ट सौंपने के बाद ही सारी स्थितियों को स्पष्ट किया जायेगा।

3 बच्चों की मां केरल से अपने 19 साल के प्रेमी के पीछे आ पहुंचीं गिरिडीह

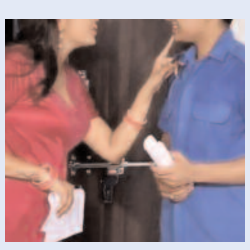

क्राइम संवाददाता द्वारा

गिरिडीह: प्यार अंधा होता है, ये बात सच है। प्यार में उम्र, जात-पात या भाषा का कोई बंधन नहीं होता। झारखंड के एक लड़के और केरल की एक महिला की प्रेम कहानी इसका उदाहरण है। महिला अपने से छोटे लड़के से प्यार करने के लिए 2500 किलोमीटर से ज्यादा दूर केरल से झारखंड आ गई। गिरिडीह जिले के खोरी महुआ अनुमंडल के बैरिया के पास सोना पहाड़ी का रहने वाला सरफुद्दीन केरल के एक होटल में काम करता था। होटल में काम करते समय होटल की मालकिन सजना को सरफुद्दीन से प्यार हो गया। सजना तीन बच्चों की मां है। उसे अपने स्टाफ से प्यार हो गया, जो उससे उम्र में छोटा था. धीरे-धीरे दोनों का प्यार बढ़ने लगा। सरफुद्दीन अपनी मालकिन का चहेता बन गया। सजना हर काम के लिए दूसरे कर्मचारियों की जगह सरफुद्दीन को ज्यादा महत्व देने लगी। सरफुद्दीन भी अपनी मालकिन की हर बात मानने लगा। जब सजना के पति को नौकर और मालकिन के बीच प्यार की जानकारी हुई, तो उन्होंने सजना को घर से निकाल दिया। घर से निकलने के बाद भी सजना सरफुद्दीन के संपर्क में रही।

सरफुद्दीन ने सजना को अपने घर का पता बताया और उसे कोडरमा में रहने के लिए कहा। सजना केरल से कोडरमा आकर एक होटल में रहने लगी। उसने चार दिनों तक सरफुद्दीन का इंतजार किया। इस बीच सरफुद्दीन ने सजना से कोई संपर्क नहीं किया। इसके बाद सजना गिरिडीह में उसके घर पहुंच गई। जैसे ही सजना सरफुद्दीन के घर पहुंची, वहां आसपास के लोगों की भीड़ जमा हो गई। सजना की भाषा वहां कोई नहीं समझ पा रहा था और न ही सजना उनकी भाषा समझ पा रही थी। वह सिर्फ मलयालम भाषा समझती थी, जिससे बहुत परेशानी हुई। सजना ने अपनी भाषा में कहा कि वो सरफुद्दीन के घर उसकी मां के साथ सुरक्षित हैं और जब तक सरफुद्दीन नहीं आता, उसी के घर में रहूंगी।

जमशेदपुर : एमजीएम में छज्जा गिरने से तीन मरीज मलबे में दबे

क्राइम संवाददाता द्वारा

जमशेदपुर: कोल्हान का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल MGM अस्पताल के क्व्ब्लॉक का एक हिस्सा गिरा गया है. इसमें कई मरीजों के दबे होने की आशंका है, इसमें एक महिला की हालत गंभीर बताई जा रही हैजमशेदपुर के एमजीएम अस्पताल में एक वार्ड की छत गिर जाने से अफरा तफरी मच गई है. कहा जा रहा है कि साकची में स्थित एमजीएम के मेडिसिन विभाग का पहले से जर्जर भवन का हिस्सा अचानक से गिर गया. इसमें चार मरीज दब गए. चार मरीजों के दबे होने की आशंका. रेस्क्यू टीम की मदद से मलबे में दबी बुजुर्ग महिला को निकाल लिया गया है. जिसकी हालत गंभीर हैं. वहीं एक पुरुष को भी सुरक्षित निकाला लिया गया है जो घायल है.

प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि अस्पताल का ये हिस्सा काफी पहले से जर्जर स्थिति में था, लेकिन इसके बाद भी वहां मरीजों को रखा जा रहा था. लोगों का कहना है जर्जर हिस्से को लेकर कई बार शिकायत भी की गई थी. लेकिन इसके बाद भी उसकी मरम्मत नहीं हुई थी.

हादसे के बाद पूरे अस्पताल में अफरा तफरी मच गई. वहां पर जो मरीज थे वहां से भागने लगे और वार्ड से निकल कर अस्पताल परिसर के मैदान में ही बैठ गए. मामले की जानकारी मिलते ही प्रशासन की टीम मौके पर पहुंच कर राहत और बचाव कार्य में लग गई. जमशेदपुर का एमजीएम अस्पताल कोल्हान का सबसे बड़ा सरकारी अस्पताल है. यहां पर हर रोज हजारों मरीज अपना इलाज कराने के लिए पहुंचते हैं.

हादसे को लेकर एमजीएम अस्पताल के उपाधीक्षक नकुल चौधरी ने कहा कि यह भवन 40 साल से भी ज्यादा पुराना है. इस घटना में जो भी मरीज दबे हैं, सभी लावारिस हैं. उनका कोई परिचय नहीं है. दो को सुरक्षित बाहर निकल गया है जबकि अन्य की जानकारी अभी तक नहीं है. उन्होंने बताया कि दूसरी मंजिल का कोरिडोर का एक हिस्सा गिरा है. दो मरीज को बाहर निकाला गया हैं जिनमे एक महिला हैं और दूसरा पुरुष. उन्होंने बताया कि दोनों का कोई परिजन नहीं है. अन्य लोग दबे हैं या नहीं इस मामले मे NDRF की टीम कार्रवाई कर रही है. इस घटना की जानकारी विभाग को दे दी गई है.

मामले की जानकारी मिलते ही जमशेदपुर पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के विधायक सरयू राय घटनास्थल पर पहुंचे और इस हादसे के लिए सरकार और प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया. वहीं, जमशेदपुर पूर्वी विधानसभा क्षेत्र की विधायक पूर्णिमा साहू भी घटनास्थल पर पहुंची और मामले की जानकारी ली.

आपको बता दें कि राज्य सरकार के तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने मनगो डिमना रोड स्थित MGM मेडिकल कालेज के पास 500 बेड का नया अस्पताल बनवाया है, जिसका उद्घाटन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने किया. इस अस्पताल में पुराने स्व्र्रूअस्पताल के मरीजों को शिफ्ट करना था, लेकिन पानी की कमी और अन्य तकनीकी कारणों से वह शिफ्टिंग नहीं हो पाई है.

आंतक के केस में 10 जेल गया, आते ही फिर जुट गया रांची का याशर

क्राइम संवाददाता द्वारा

रांची। झारखंड में हिज्ब-उत-तहरीर के संदिग्ध आतंकी अम्मार याशर 10 साल जोधपुर के जेल में रहा। मई 2024 में वह छूटा था। इसके बाद उसने फिर से आतंकी संगठन से जुड़कर जिहाद व देश में खिलाफत के उद्देश्य से हिज्ब-उत-तहरीर ज्वाइन किया। एटीएस ने धनबाद से गिरफ्तार आरोपी गुलफाम हसन, आयान जावेद, मो शहजाद और शबनम परवीन की निशानदेही पर अम्मार याशर को गिरफ्तार किया था। एटीएस ने शुक्रवार को उसे जेल भेज दिया। अब उसे रिमांड पर लेकर पूछताछ की जाएगी। पता चला है कि साल 2013 में इंडियन मुजाहिदीन की गतिविधियां देशभर में चल रही थी। पटना के गांधी मैदान ब्लास्ट के बाद देशभर में फैले इंडियन मुजाहिदीन के नेटवर्क पर दबिश डालने की शुरुआत हुई। तब मार्च 2014 में पहली बार अम्मार याशर एजेंसियों के हत्थे चढ़ा था। दिल्ली पुलिस के स्पेशल सेल ने याशर को शाहीनबाग से हिरासत में लिया था, लेकिन तब राजनीतिक दबाव में उसे छोड़ दिया गया था।

धनबाद निवासी अम्मार याशर को मई 2014 में राजस्थान एटीएस ने शेरघाटी से गिरफ्तार किया था। उस समय वह जयपुर में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा था। इसी दौरान वह इंडियन मुजाहिदीन के नेताओं के संपर्क में आकर प्रतिबंधित संस्था में शामिल हो गया था। जयपुर के एसओजी, लालकोटी और जोधपुर के प्रतापनगर थाने में उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी। इन मामलों में वह पूरे 10 साल जेल में रहा। इसके बाद मई 2024 में कोर्ट ने उसे जमानत दी थी। जमानत पर छूटने के बाद वह इंडियन मुजाहिदीन छोड़कर हिज्ब-उत-तहरीर में शामिल हो गया था।

एटीएस को जानकारी मिली है कि गिरफ्तार आयान जावेद के साथ अम्मार याशर का नियमित संपर्क था। आयान की निशानदेही पर ही याशर का नाम सामने आया था। गिरफ्तारी के बाद अम्मार याशर के मोबाइल से प्रतिबंधित संगठन से संबंधित दस्तावेज मिले हैं। एटीएस अब इस लिंक के आधार पर हिज्ब-उत-तहरीर के बड़े हैंडलर्स तक पहुंचने की जुगत में है।

कांग्रेस की संविधान बचाओ रैली को लेकर राजधानी में जबरदस्त तैयारी

राजनीतिक संवाददाता द्वारा

रांची: राजधानी रांची में 6 मई को आयोजित होने वाली संविधान बचाओ रैली को ऐतिहासिक और जन-सैलाब से भरा बनाने के लिए झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने पूरी ताकत झोंक दी है. पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के नेतृत्व में गठित समितियां दिन-रात तैयारी में जुटी हैं.

रैली को लेकर हर स्तर पर गंभीरता और संकल्प दिख रहा है, चाहे वह राजधानी के मोहल्लों की बैठकें हों या सुदूर प्रखंडों में आमजन से सीधा संवाद. प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय से लेकर शहर के हर चौक-चौराहे तक, रैली को लेकर जनजागरूकता फैलाई जा रही है.

जातिगत जनगणना के लिए जननायक राहुल गांधी आभार, जय बापू, जय भीम, जय संविधान और झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए जैसे नारे वाले होर्डिंग्स पूरे रांची में लगाए जा रहे हैं, जो न सिर्फ कार्यक्रम का संदेश दे रहे हैं, बल्कि जनता को भावनात्मक रूप से जोड़ने का कार्य भी कर रहे हैं.

रैली की तैयारियों का जमीनी जायजा लेने के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव एवं झारखंड प्रभारी डॉ. बेला प्रसाद स्वयं रांची में मौजूद हैं और पल-पल की मॉनिटरिंग कर रहे हैं. रविवार की सुबह 6:30 बजे ही उन्होंने पुराना विधानसभा मैदान का निरीक्षण किया.

बेला प्रसाद के साथ प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, प्रदेश महासचिव आलोक कुमार दुबे, वरिष्ठ नेता शशिभूषण राय, हिमांशु, संजय प्रसाद और मेहुल दुबे भी मौजूद रहे. सभी नेताओं ने मंच निर्माण, सुरक्षा व्यवस्था, कार्यकर्ताओं की बैठने की व्यवस्था, मीडिया एरिया, मेडिकल सहायता केंद्र समेत हर पहलू की बारीकी से समीक्षा की.

रैली के बाद होटल बीएनआर में पॉलीटिकल अफेयर्स कमेटी, जिला कांग्रेस अध्यक्षों और प्रदेश कार्यकारिणी की अलग-अलग महत्वपूर्ण बैठकें आयोजित की जाएंगी. इन बैठकों में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल और झारखंड प्रभारी के. राजू की उपस्थिति तय है. वे सभी नेताओं के साथ सीधा संवाद स्थापित करेंगे और आगामी रणनीति पर गहन विमर्श करेंगे.

इस बीच कांग्रेस भवन में एक और महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें जिला अध्यक्षों एवं नोडल ऑफिसरों के साथ संवाद कर यह सुनिश्चित किया गया कि राज्य के हर कोने से कार्यकर्ताओं की भागीदारी हो.

बैठक में आलोक कुमार दुबे, लाल किशोर नाथ शाहदेव, सूर्यकांत शुक्ला,डॉ राजेश गुप्ता,सुंदरी तिर्की, अख्तर अली, प्रभात कुमार, जितेंद्र त्रिवेदी, निरंजन पासवान, जगदीश साहू, फिरोज रिजवी मुन्ना और कामेश्वर गिरी सहित कई वरिष्ठ नेता मौजूद रहे.

तैयारी की समीक्षा के उपरांत मीडिया कर्मियों से बात करते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव आलोक कुमार दुबे ने कहा कि नेशनल हेराल्ड मामले में क्लीन चिट दिए जाने के बावजूद, अहमदाबाद अधिवेशन में देश भर से जुटे कांग्रेसजनों की हुंकार से घबरा कर प्रधानमंत्री ने ईडी के माध्यम से सोनिया गांधी और राहुल गांधी पर आरोप गठित किए. कहा कि यह न सिर्फ लोकतंत्र का अपमान है, बल्कि संविधान और संवैधानिक संस्थाओं का माखौल उड़ाने जैसा कृत्य है. इसी के विरोध में 6 मई को राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे रांची की धरती से हुंकार भरेंगे.

झारखंड प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता लाल किशोर नाथ शाहदेव ने कहा, ÷जिस तरह से जातीय जनगणना के मुद्दे पर केंद्र की सरकार को कांग्रेस के फोरम पर आना पड़ा, वह इस बात का संकेत है कि अब जनता की आवाज दबाई नहीं जा सकती. वह दिन दूर नहीं जब संविधान एवं संवैधानिक संस्थाओं के रास्ते पर देश को आगे ले जाने के 75 वर्षों के संकल्प को फिर से दोहराना पड़ेगा.

राजेश गुप्ता ने इसे आमजन की आवाज बताते हुए कहा कि हर तबके का प्रतिनिधित्व इस रैली में दिखेगा. यह रैली सिर्फ एक आयोजन नहीं, बल्कि देश के लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और समानता के पक्ष में एक मजबूत राजनीतिक हस्तक्षेप है.

रांची में दिनदहाड़े लूट: 3 लाख रुपये से भरा बैग छीन ले गए बाइक सवार

क्राइम संवाददाता द्वारा

रांची: राजधानी रांची में इन दिनों चेन स्नैचिंग और लूट की वारदातें लगातार बढ़ रही हैं। अपराधी खुलेआम दिनदहाड़े वारदातों को अंजाम दे रहे हैं। ताजा मामला शनिवार दोपहर का है, जब बाइक सवार दो अपराधियों ने एक शख्स से पैसों से भरा बैग छीन लिया। यह घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। यह घटना अरगोड़ा थाना क्षेत्र के सहजानंद चौक के पास की है। मिली जानकारी के मुताबिक, मनोरंजन मिश्रा नामक व्यक्ति एसबीआई की कचहरी शाखा से 3 लाख रुपये निकालकर खेलगांव की ओर जा रहे थे। रास्ते में सहजानंद चौक के पास एक जूस की दुकान के सामने कुछ काम से रुके ही थे कि तभी दो बाइक सवार बदमाशों ने झपट्टा मारकर उनका बैग छीन लिया और फरार हो गए। सीसीटीवी फुटेज में यह साफ देखा जा सकता है कि बाइक पर सवार दोनों अपराधी पीड़ित का पीछा कर रहे थे। इससे अंदेशा जताया जा रहा है कि बैंक से ही रेकी की गई थी और मौका मिलते ही अपराधियों ने लूट की वारदात को अंजाम दिया। हटिया डीएसपी पीके मिश्रा खुद इस मामले की जांच में जुटे हैं। इलाके में नाकेबंदी की गई है। पुलिस को शक है कि यह घटना उड़ीसा के किसी गैंग द्वारा अंजाम दी गई हो सकती है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर अपराधियों की पहचान करने की कोशिश शुरू कर दी है।

रेलवे ने दो नई ट्रेनों के परिचालन का किया फैसला, कार्यकारी निदेशक ने बताई खूबी

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय रेलवे ने दो नई ट्रेनों के परिचालन का फैसला किया है। रेलवे के सूचना एवं प्रचार विभाग के कार्यकारी निदेशक दिलीप कुमार ने समाचार एजेंसी इसकी जानकारी दी। उन्होंने देश में रेलवे नेटवर्क को बढ़ाने की दिशा में हो रहे कार्यों के बारे में बताया। दिलीप कुमार ने कहा, पूरे देश में रेलवे नेटवर्क की मजबूती के लिए हम प्रयासरत हैं और इसी क्रम में देश में नई सेवाओं का परिचालन लगातार किया जा रहा है। दो नई ट्रेनों को चलाने का फैसला लिया गया है। इनमें एक ट्रेन एमजीआर चेन्नई से भगत की कोठी, जोधपुर (राजस्थान) तक सप्ताह में पांच दिन चलेगी। यह सोमवार, मंगलवार, गुरुवार, शुक्रवार और रविवार को चलेगी। वहीं भगत की कोठी से वापस इस ट्रेन का परिचालन सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और रविवार को किया जाएगा। दूसरी ट्रेन सेवा जोधपुर से पुणे के बीच है। यह सप्ताह में सातों दिन चलेगी। ट्रेन के फीचर्स की तारीफ करते हुए उन्होंने बताया, ‘पहली ट्रेन एमजीआर चेन्नई सेंट्रल से भगत की कोठी जाएगी। इसका नंबर 20625 (अप) और 20626 (डाउन) है। इसमें 22 कोच हैं, सभी कोच एलएचबी हैं। इसमें न सिर्फ सफर आरामदायक होगा, बल्कि एनहैंस्ड सेफ्टी फीचर्स लगे हुए हैं। ये कोच हाल ही में बनकर तैयार हुए हैं।

चन्नी के सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगने पर भाजपा नेता हमलावर, ‘देश का गद्दार’ बताया

नई दिल्ली। लोकसभा सांसद एवं पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी के सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांगने पर भाजपा हमलावर है। दिल्ली के भाजपा नेता नवीन कुमार जिंदल और भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने उन्हें देश का गद्दार करार दिया है। दरअसल, जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादी हमले के बाद सबकी नजर सरकार की कार्रवाई पर है। इसी बीच, पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस सांसद चरणजीत सिंह चन्नी ने सरकार से 2016 में हुए सर्जिकल स्ट्राइक के सबूत मांगे, जिस पर भाजपा हमलावर है। नवीन कुमार जिंदल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स' पर चरणजीत सिंह चन्नी का वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा, अभी सेना का मनोबल बढ़ाने का समय है, लेकिन कांग्रेस नेता चन्नी को देखिए... फिर सेना के शौर्य पर सवाल उठाते हुए सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत मांग रहे हैं। ये देश के गद्दार हैं। पाकिस्तान खुद मान चुका है कि सर्जिकल स्ट्राइक हुई थी।

रूस की सेना में भर्ती हुए युवकों के परिजन विदेश मंत्रालय के डायरेक्टर से मिलेंगे

नई दिल्ली। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान रूसी सेना में शामिल हुए या लापता युवकों के परिवार के सदस्य 5 मई को दोपहर 3 बजे दिल्ली में विदेश मंत्रालय में यूरेशिया विभाग के डायरेक्टर राकेश पांडे से मुलाकात करेंगे। रूस जाकर आए परिवार के सदस्यों ने बताया है कि भारत सरकार और विदेश मंत्रालय की तरफ से उन्हें रूस में किसी भी तरह की मदद नहीं दी गई। परिजनों के मुताबिक, युद्ध के दौरान सेना में शामिल हुए या लापता हुए उनके परिवार के युवाओं और लोगों के बारे में पूरी जानकारी नहीं दी जा रही है। इन सभी मुद्दों को लेकर वे सोमवार (5 मई) को राकेश पांडे से मुलाकात करेंगे। पंजाब में जालंधर के गोराया कस्बे के जगदीप कुमार ने बताया कि वह पिछले महीने 3 अप्रैल को रूस गए थे और वहां कई दिनों तक रुके थे ताकि अपने भाई मनदीप कुमार की तलाश कर सकें, जो पिछले एक साल से भी ज्यादा समय से रूसी सेना में भर्ती हैं। लेकिन उन्हें अब तक अपने भाई के बारे में पूरी जानकारी नहीं मिल पाई है, न ही भारतीय दूतावास और न ही रूसी दूतावास ने उनकी कोई मदद की है। हालांकि रूस के आम लोगों ने उनकी पूरी मदद की है। उन्होंने बताया कि वह सिर्फ रूसी सेना में अपने भाई का कॉन्ट्रैक्ट ही हासिल कर पाए हैं और इसके अलावा वह अपने भाई मनदीप के बारे में कुछ पता नहीं लगा पाए हैं। इसी तरह उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ से उनके साथ गए अजय के मामा और अजीमुद्दीन के भाई के बारे में भी कोई जानकारी नहीं मिल पाई है।

सोनिया गांधी ने गिरिजा व्यास के निधन पर जताया शोक, बताया ‘अपूरणीय क्षति’

नई दिल्ली। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी ने वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने गिरिजा व्यास के परिजनों को पत्र लिखकर अपनी संवेदनाएं प्रकट कीं और उनकी सेवाओं को याद किया। भाई गोपाल कृष्ण शर्मा को संबोधित करते हुए सोनिया गांधी ने लिखा, आपकी बड़ी बहन, कांग्रेस की वरिष्ठ नेता, पूर्व मंत्री, साहित्य जगत की सशक्त हस्ताक्षर लेखिका, प्रसिद्ध कवियित्री सौम्य स्वभाव एवं मृदुभाषी डॉ. गिरिजा व्यास जी लगभग एक माह पूर्व एक भीषण दुर्घटना की चपेट में आने की वजह से अहमदाबाद में चल रहे इलाज के दौरान उनके निधन के समाचार से मैं स्तब्ध हूं। उनका हम सबके बीच से जाना उनके परिवार, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, साहित्य जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है। राजनीतिक, सामाजिक और शिक्षा के क्षेत्र में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सिद्धांतों और विचारधारा पर उनकी अपनी अंतिम सांस तक अडिग आस्था रही।

डॉ जितेन्द्र सिंह ने दीर्घकालिक नवाचार के माध्यम से उद्योग की भागीदारी बढ़ाने पर दिया जोर

एजेंसी

नई दिल्ली। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) के 55वें स्थापना दिवस के अवसर पर केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने भारत के उभरते वैज्ञानिक परिदृश्य को रेखांकित किया। इसके साथ उन्होंने दीर्घकालिक नवाचार के माध्यम से उद्योग की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इंटरनेशनल अंबेडकर सेंटर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, डीएसटी की स्थापना विज्ञान के क्षेत्र में स्वतंत्रता के बाद के भारत की प्रगति को दर्शाती है, उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार विभाग ने अनुसंधान और शासन को जोड़ा है तथा दृष्टि को सत्यापन योग्य परिणामों में परिवर्तित किया है। डॉ. जितेंद्र सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि डीएसटी के हस्तक्षेपों ने न केवल विज्ञान को आगे बढ़ाया है, बल्कि

महिलाओं, बच्चों और हाशिए पर पड़े समुदायों पर ध्यान केंद्रित करते हुए जमीनी स्तर पर विकास को भी गति दी है। मंत्री ने डीएसटी के प्रभाव के एक उपाय के रूप में भारत की बढ़ती वैश्विक रैंकिंग पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वैश्विक नवाचार सूचकांक में एक लंबी छलांग लगाई है। 2015 में ये 81वें स्थान पर था जो अब 2024 में 39वें स्थान पर आ गया है। स्टार्ट-अप संख्या, विज्ञान और इंजीनियरिंग में पीएचडी और शोध प्रकाशनों में वैश्विक स्तर पर तीसरा स्थान हासिल किया है। भारत अब बौद्धिक संपदा फाइलिंग में भी दुनिया भर में छठे स्थान पर है। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि स्थायी नवाचार को निजी खिलाड़ियों द्वारा संचालित और वित्तपोषित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत में, केवल ज्ञान साझेदारी काम नहीं करती बल्कि उद्योग को खेल में शामिल होना चाहिए। वैज्ञानिक सफलता को बनाए रखने के लिए निजी क्षेत्र की भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने नवगठित वैधानिक निकाय, एएनआरएफ (अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन) की भूमिका पर भी प्रकाश डाला, जो अनुसंधान निधि को लोकतांत्रिक बनाने और विश्वविद्यालय की भागीदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक परिवर्तनकारी शक्ति है।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने एनसीबी की अमृतसर जोनल यूनिट को 547 करोड़ रुपये की ड्रग्स जब्त करने पर दी बधाई

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) की अमृतसर जोनल यूनिट को 547 करोड़ रुपये की ड्रग्स जब्त कर 15 लोगों को गिरफ्तार करने पर बधाई दी है।केंद्रीय गृह मंत्री कार्यालय ने एक्स पर पोस्ट कर कहा, ‘भारत निर्मम आक्रामकता के साथ ड्रग कार्टेल को खत्म कर रहा है। एनसीबी की अमृतसर जोनल यूनिट ने 4 राज्यों में 4 महीने तक चले ऑपरेशन के दौरान ड्रग डायवर्जन कार्टेल को खत्म किया, 547 करोड़ रुपये की ड्रग्स जब्त की और 15 लोगों को गिरफ्तार किया। यह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन के तहत ड्रग-मुक्त भारत के निर्माण की दिशा में एक बड़ा कदम है। एनसीबी की टीम को बधाई।’

आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता की आवश्यकताः लोकसभा अध्यक्ष

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि आतंकवाद की समस्या से निपटने के लिए सभी लोकतांत्रिक देशों को एकजुट होकर कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने यह टिप्पणी जापान के हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स के स्पीकर नुकागा फुकुशिरो के साथ बैठक के दौरान की। फुकुशिरो ने पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले की निंदा करते हुए भारत की लड़ाई में जापान के समर्थन की पुष्टि की। बिरला ने भारत और जापान की मित्रता को विश्व शांति और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण बताया और दोनों देशों के बीच क्वाड, जी-20 और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग की बात की। उन्होंने जापान में भारतीय कुशल कर्मियों के अवसरों का स्वागत किया और बौद्ध धर्म के प्रति साझा विरासत को भी रेखांकित किया। बिरला ने भारत के संविधान की भूमिका, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम-2016 और नारी शक्ति वंदन अधिनियम के महत्व पर भी चर्चा की। इस अवसर पर राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश और अन्य सांसद मौजूद थे।

यूजीसी ने केआईआईटी भुवनेश्वर में छात्राओं की आत्महत्या मामले पर फैक्ट फाइंडिंग कमेटी गठित की

एजेंसी

नई दिल्ली। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (केआईआईटी), भुवनेश्वर में छात्राओं की आत्महत्या मामलों की जांच के लिए फैक्ट फाइंडिंग कमेटी गठित की है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के पूर्व कुलपति प्रो. नागेश्वर राव की अध्यक्षता वाली यह कमेटी 10 दिनों के भीतर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

यूजीसी ने एक बयान जारी कर कहा कि केआईआईटी, भुवनेश्वर में 16 फरवरी और 1 मई को हुई लगातार दो आत्महत्या की घटनाओं से जुड़ी परिस्थितियों की जांच करने, छात्र कल्याण और सुरक्षा नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करने तथा भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के उपाय सुझाने के लिए एक फैक्ट फाइंडिंग कमेटी गठित करने का निर्णय लिया है। इग्नू के पूर्व कुलपति प्रो. नागेश्वर राव की अध्यक्षता वाली कमेटी में सदस्य के तौर पर राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (एनआईईपीए) की कुलपति प्रो. शशिकला वंजारी और दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया के पूर्व कुलपति प्रो. एच.सी.एस. राठौर शामिल हैं। इसके अलावा यूजीसी की संयुक्त सचिव डॉ. सुनीता सिवाच को समन्वय अधिकारी बनाया गया है।कमेटी छात्र आत्महत्या की घटनाओं से जुड़ी परिस्थितियों की जांच करेगी, जिसमें संस्थागत नीतियां,

शैक्षणिक दबाव, शिकायत निवारण तंत्र और छात्र सहायता संरचनाएं जैसे कारक शामिल हैं। कमेटी सुरक्षा प्रोटोकॉल, शिकायत निवारण तंत्र और उत्पीड़न विरोधी उपायों सहित प्रासंगिक छात्र कल्याण और सुरक्षा विनियमों के अनुपालन की समीक्षा करेगी।

भारत विश्व में बैठकों, प्रोत्साहनों, सम्मेलनों और प्रदर्शनियों की राजधानी बनने के लिए पूरी तरह तैयारः गजेन्द्र सिंह शेखावत

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने देश में प्रदर्शनी उद्योग के शीर्ष राष्ट्रीय निकाय भारतीय प्रदर्शनी उद्योग संघ (आईईआईए) द्वारा आयोजित दो दिवसीय सेमिनार का उद्घाटन किया। भारत मंडपम में भारत- तीव्र विकास की धरती विषय पर आधारित इस सेमिनार को संबोधित करते हुए गजेन्द्र सिंह ने कहा कि पर्यटन के नए क्षेत्र विकसित हो रहे हैं, जिसमें एमआईसीई पर्यटन सबसे महत्वपूर्ण है और यह देश में सबसे तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्र है। मुंबई, दिल्ली, हैदराबाद, बैंगलोर, जयपुर और यहां तक ??कि जी-20 सम्मेलन के बाद छोटे शहरों सहित पूरे देश में हम जो प्रदर्शनी और सम्मेलन का बुनियादी ढांचा देख रहे हैं, उससे पता चलता है कि भारत इस क्षेत्र के लिए मजबूत संभावनाओं की दहलीज पर खड़ा है। शेखावत ने

कहा कि भारत को एमआईसीई पर्यटन का केंद्र बनाने के लिए सरकार और निजी प्रदर्शनी उद्योग को मिलकर काम करना होगा। वैश्विक स्तर पर होने वाले कई कार्यक्रमों को कैलेंडर में शामिल करके भारत में लाया जा सकता है। भारत सड़क, विमानन और रेलवे क्षेत्रों में योजनाबद्ध विस्तार के साथ सम्मेलन और प्रदर्शनी का एक बड़ा सम्मेलन केंद्र भी बन रहा है। यह उद्योग देश के आर्थिक विकास के लिए एक शुभ संकेत है। शेखावत ने कहा कि वर्ष 2014 के बाद देश ने बुनियादी ढांचे में जबरदस्त वृद्धि दर्ज की है, चाहे वह 1,50,000 किलोमीटर से अधिक सड़कों का निर्माण हो, नए रेलवे स्टेशन हों, सेमी हाई-स्पीड ट्रेनें हों, अंतर्देशीय जलमार्ग हों या 150 से अधिक हवाई अड्डे हों, इन सभी ने एमआईसीई कार्यक्रमों के संबंध में देश की प्रगति में योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि जी-20 की अध्यक्षता के बाद देश में आत्मविश्वास बढ़ा है। आने वाले समय में भारत दुनिया की एमआईसीई राजधानी के रूप में उभरेगा। भारतीय प्रदर्शनी उद्योग संघ के अध्यक्ष सूरज धवन ने कहा कि भारतीय प्रदर्शनी उद्योग संघ (आईईआईए) सेमिनार और प्रदर्शनी सेवा एक्सपो भारतीय प्रदर्शनी उद्योग का वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन है, जिसमें देश के सभी क्षेत्रों और विदेशों से उद्योग प्रमुख भाग लेते हैं। यह कार्यक्रम व्यापार नेटवर्किंग, ज्ञान के आदान-प्रदान और उद्योग के भविष्य को आकार देने वाले उभरते रुझानों पर चर्चा के लिए अपनी तरह के एक सार्थक मंच के रूप में कार्य करता है।

शहजाद पूनावाला ने कांग्रेस पर लगाया ‘सेना के अपमान’ का आरोप, बोले ‘ये उनकी आदत’

एजेंसी

नई दिल्ली। सर्जिकल स्ट्राइक पर सबूत मांगकर कांग्रेस नेता और पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने एक बार फिर विवाद खड़ा कर दिया है। चन्नी के बयान के बाद भाजपा उन पर हमलावर हो गई है। भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि सेना का लगातार अपमान करना कांग्रेस की आदत बन गई है। न्यूज एजेंसी से बातचीत के दौरान भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि आज कांग्रेस पार्टी का नाम बदलकर एंटी नेशनल कांग्रेस कर देना चाहिए। कांग्रेस की आज एकमात्र पहचान यह है कि वह सेना का लगातार अपमान कर रही है और पाकिस्तान के समर्थन में बयान दे रही है। पाकिस्तान को अपना भाईजान बुलाना कांग्रेस को पसंद है। भाजपा प्रवक्ता ने आगे कहा कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुई आतंकी घटना के बाद ऑल पार्टी मीटिंग में कांग्रेस का दावा रहता है कि वह देश और सेना के साथ मजबूती के साथ खड़ी है और सख्त कार्रवाई की मांग की जाती है। लेकिन जैसे ही कांग्रेस के नेता मीटिंग से बाहर निकलते हैं, तो वे वोट बैंक की राजनीति को राष्ट्रीय हित से ऊपर उठा देते हैं। पहलगाम घटना के बाद कांग्रेस के नेताओं के बयान यह दिखाते हैं कि इनके नेता सेना पर सवाल खड़े कर पाकिस्तान को क्लीन चिट देने का काम कर रहे हैं। इनके नेता कहते हैं कि पाकिस्तान के साथ बातचीत होनी चाहिए। कांग्रेस अप्रत्यक्ष रूप से इस्लामिक जिहाद का समर्थन करके हमारे सशस्त्र बलों का मनोबल कमजोर कर रही है।

जन अभियान के माध्यम से ‘नक्शा’ कार्यक्रम का लाभ जन-जन तक पहुंचाना उद्देश्यः शिवराज

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय ग्रामीण विकास और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा समग्र कृषि और ग्रामीण विकास के लिए मैराथन बैठकों का दौर जारी है। कृषि भवन में वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में चौहान ने ग्रामीण विकास मंत्रालय के अंतर्गत ग्रामीण विकास एवं भूमि संसाधन विभाग की योजनाओं-कार्यक्रमों की समीक्षा की। केंद्रीय मंत्री चौहान ने भूमि संसाधन विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी आधुनिक तकनीक का जलग्रहण विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में बेहतर उपयोग करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मृदा व नमी संरक्षण डेटा के आधार पर निर्णय सहायता प्रणाली विकसित करके ग्राम समुदाय और व्यक्तिगत किसानों को उचित सलाह दी जाना चाहिए। शिवराज सिंह ने कृषि भूमि के लिए डिजिटल इंडिया भूमि अभिलेख आधुनिकीकरण कार्यक्रम (डीआईएलआरएमपी) तथा शहरी भूमि सर्वेक्षण के लिए नक्शा कार्यक्रम के तहत प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान बताया गया कि डीआईएलआरएमपी के तहत अधिकारों के अभिलेख 99 प्रतिशत तक कम्प्यूटरीकृत किए जा चुके हैं। भूकर मानचित्रों को लगभग 97 प्रतिशत तक डिजिटाइज किया जा चुका है। उप रजिस्ट्रार कार्यालयों को 95 प्रतिशत तक कम्प्यूटराइज किया जा चुका है। केंद्रीय मंत्री ने इस प्रगति की सराहना करते हुए आगे बेहतर प्रयास करने व अधिकाधिक लोगों तक कार्यक्रम की जानकारी पहुंचाने के उद्देश्य से जन अभियान शुरू करने को कहा। नक्शा कार्यक्रम को देश के 29 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों में 152 शहरी स्थानीय निकायों में चलाया जा रहा है, जिनमें से 61 में एरियल फ्लाइंग का काम पूरा हो चुका है।शिवराज सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के वाटरशेड विकास घटक (डब्ल्यूडीसी-पीएमकेएसवाई) के तहत जलग्रहण विकास परियोजनाओं को जनांदोलन की तरह क्रियान्वित किया जाना चाहिए। आम जनता, जनप्रतिनिधियों, गैर सरकारी संगठनों, कॉरपोरेट्स सहित सभी हितधारकों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाएं। स्प्रिंगशेड विकास पर भी चर्चा हुई, जिसे लेकर केंद्रीय मंत्री चौहान ने कहा कि पहाड़ी क्षेत्रों में स्प्रिंगशेड विकास किया जाना चाहिए, ताकि आबादी को कम पानी उपलब्धता वाले महीनों में पानी उपलब्ध कराया जा सके। स्थानीय आबादी को पीने का पानी उपलब्ध कराने के अलावा, यह प्रमुख नदी प्रणालियों के जल प्रवाह को भी बढ़ाएगा, जो अंततः मैदानी क्षेत्रों में रहने वाली बड़ी आबादी की मदद करेगा। अन्य प्रोजेक्ट्स की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा- डब्ल्यूडीसी-पीएमकेएसवाई अंतर्गत वाटरशेड विकास परियोजनाओं की प्रभावशीलता बढ़ाने हेतु मनरेगा, आरकेवीवाई, पीडीएमसी, एमआईडीएच जैसी योजनाओं के साथ अधिकतम अभिसरण सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

केंद्रीय गृह सचिव ने हरियाणा की तत्काल जल आवश्यकताओं पर चर्चा की

एजेंसी

नई दिल्ली। हरियाणा और राजस्थान के कुछ भागों की तत्काल जल आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हरियाणा को आठ दिनों के लिए अतिरिक्त 4500 क्यूसेक पानी जारी करने के भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बीबीएमबी) के निर्णय के कार्यान्वयन के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए नई दिल्ली में केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन की अध्यक्षता में एक बैठक आयोजित की गई। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि बैठक में इस मामले पर विचार-विमर्श किया गया और सलाह दी गई कि भाखड़ा बांधों से हरियाणा को अगले आठ दिनों के लिए 4500 क्यूसेक अतिरिक्त पानी छोड़ने के बीबीएमबी के निर्णय को लागू किया जाए ताकि उनकी तत्काल जल आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। यह भी सहमति हुई कि बांधों के भरने की अवधि के दौरान, बीबीएमबी पंजाब को उनकी किसी भी अतिरिक्त आवश्यकता को पूरा करने के लिए यह अतिरिक्त पानी उपलब्ध कराएगा। बीबीएमबी हरियाणा को अतिरिक्त पानी छोड़ने के कार्यान्वयन के तौर-तरीकों पर

काम करने के लिए तुरंत बोर्ड की बैठक बुलाएगा।बैठक में भारत सरकार, बीबीएमबी के साझेदार राज्यों- पंजाब, राजस्थान एवं हरियाणा और बीबीएमबी के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। उल्लेखनीय है कि बीबीएमबी की स्थापना 1966 में हुई थी। इसका मुख्यालय पंजाब के भाखड़ा में स्थित है। बीबीएमबी के कार्यों में बांध संचालन, जल संसाधन प्रबंधन, बिजली उत्पादन और बाढ़ नियंत्रण शामिल है।

बच्चों को भी प्रभावित कर रहा गठिया का रोग, एम्स के डॉक्टरों ने दिया जागरुकता पर जोर

एजेंसी

नई दिल्ली। अगर बच्चों को खेलने-कूदने में जोड़ों में दर्द व सूजन जैसी समस्या होने की शिकायत होती है तो इसे अनदेखा नहीं करना चाहिए। ये लक्षण जुवेनाइल इडियोपैथिक अर्थराइटिस के हो सकते हैं जो बच्चों और किशोरों में पाया जाने वाला सबसे आम प्रकार का गठिया रोग है। यह जानकारी एम्स दिल्ली के बाल चिकित्सा विभाग के गठिया रोग विशेषज्ञ डॉ. नरेंद्र बागड़ी ने दी। उन्होंने बताया कि जे.आई.ए. यानी जुवेनाइल इडियोपैथिक अर्थराइटिस रोग देशभर में बच्चों और किशोरों को तेजी से प्रभावित कर रहा है। जिसके चलते केवल एम्स दिल्ली में ही हर साल 250 से 300 मामले सामने आते हैं। इसके इलाज में अलग-अलग विशेषज्ञों का योगदान होता है जिनमें बाल गठिया विशेषज्ञ, हड्डी के विशेषज्ञ, आंख के विशेषज्ञ, कसरत के चिकित्सक शामिल हैं।उन्होंने बताया कि जे.आई.ए एक ऑटो इम्यून रोग है जो आमतौर पर हाथों, घुटनों, टखनों, कोहनी और कलाई में जोड़ों के दर्द और सूजन का कारण बनता है। लेकिन, यह शरीर के अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकता है। यह 16 वर्ष की उम्र से पहले शुरू होता है जो अनुवांशिक

कारणों एवं पर्यावरण कारणों (शायद संक्रमण) का मिला-जुला परिणाम है। अनुवांशिक कारणों के बावजूद यह बीमारी एक ही परिवार के दो बच्चों में बहुत कम पाई जाती है। डॉ. बागड़ी ने कहा, अगर बच्चे के जोड़ों में दर्द और सूजन जैसे लक्षण 6 सप्ताह से अधिक दिखाई दें तो चिकित्सकीय जांच कराएं और जे.आई.ए. की पुष्टि होने पर इलाज शुरू कर दें। हालांकि, जे.आई.ए. ज्यादातर जोड़ों और आसपास के ऊतकों को प्रभावित करता है, लेकिन यह आंखों, यकृत, हृदय और फेफड़ों जैसे अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकता है। जे.आई.ए. एक पुरानी स्थिति है, जिसका अर्थ है कि यह महीनों और सालों तक रह सकती है। डॉ. बागड़ी के मुताबिक जे.आई.ए. को जड़ से खत्म करने की कोई दवा नहीं है। बीमारी के इलाज का मकसद दर्द, थकावट, अकड़न को कम करना, जोड़ और हड्डी की खराबी को रोकना एवं कामकाज या शारीरिक गतिविधियों में सुधार करना है।

जाति जनगणना में विलंब ना करे सरकार, पारदर्शिता और सहभागिता सुनिश्चित करें : कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस ने केंद्र सरकार से मांग की है कि जाति आधारित जनगणना को और अधिक विलंबित न किया जाए और इसकी पूरी प्रक्रिया पारदर्शी और सहभागी हो। पार्टी का कहना है कि सभी राजनीतिक दलों को विश्वास में लेकर, तय समयसीमा में जातिगत जनगणना शुरू की जानी चाहिए, ताकि सामाजिक न्याय की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकें। कांग्रेस ने यह भी दोहराया कि संविधान के अनुच्छेद 15(5) को तुरंत लागू कर ओबीसी, दलितों और आदिवासियों को निजी शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण दिया जाए। पार्टी मुख्यालय में हुई कांग्रेस कार्यसमिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक में आज इस संबंध में प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक की अध्यक्षता पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने की। इसमें राहुल गांधी, सोनिया गांधी, के.सी. वेणुगोपाल, जयराम रमेश, भूपेश बघेल, सचिन पायलट, प्रियंका गांधी वाड्रा और अन्य वरिष्ठ नेताओं ने भाग लिया। सीडब्ल्यूसी ने अपने प्रस्ताव में कहा कि मोदी सरकार ने 11 वर्षों के विरोध और इनकार के बाद कांग्रेस की जातिगत जनगणना की मांग को मान तो लिया है, लेकिन अब तक न तो कोई स्पष्ट योजना बनाई गई है और न ही इसके लिए बजटीय प्रावधान किया गया है। कांग्रेस ने संसद में इस पर तत्काल बहस कराने और प्रत्येक चरण–प्रश्नावली, डेटा संग्रह, वर्गीकरण और प्रकाशन–के लिए स्पष्ट समयसीमा तय करने की मांग की है। पार्टी ने तेलंगाना मॉडल को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें पार्टी का कहना है कि जाति सर्वेक्षण के लिए परामर्श, जवाबदेही और जनभागीदारी की खुली प्रक्रिया अपनाई गई थी। कांग्रेस का मानना है कि जाति जनगणना को वैज्ञानिक और सहभागी तरीके से लागू किया जाए, तो यह आरक्षण, शिक्षा, कल्याण और रोजगार की नीतियों को अधिक न्यायसंगत बना सकता है।

संक्षिप्त समाचार

विधायक प्रदीप प्रसाद ने जनसमस्याओं के निदान हेतु जनता से किया सीधा संवाद

- सेवा कार्यालय बना जनसुनवाई का मंच, विधायक प्रदीप प्रसाद ने सुनी जन पीड़ा
- जनता का विश्वास ही मेरी ताकत है, जनसेवा ही मेरा धर्मः प्रदीप प्रसाद

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने शनिवार को सुबह 8 बजे से अपने विधायक सेवा कार्यालय परिसर में जनसुनवाई कार्यक्रम का आयोजन कर आम जनता की समस्याएं सुनीं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में नागरिक अपने विभिन्न व्यक्तिगत एवं सामुदायिक मुद्दों को लेकर विधायक से मिलने पहुंचे। जनता ने श्री विधायक के समक्ष मुख्यतः भूमि विवाद, बिजली आपूर्ति में बाधा तथा पेयजल संकट जैसी मूलभूत समस्याओं को रखा। श्री प्रसाद ने उपस्थित लोगों की बातों को पूरी गंभीरता से सुना और कई मामलों में मौके पर ही त्वरित निर्णय लेकर समाधान सुनिश्चित कराया। इसके अतिरिक्त जिन मामलों में विभागीय प्रक्रिया की आवश्यकता थी, उन्हें संबंधित अधिकारियों को तत्काल सूचित करते हुए शीघ्र कार्रवाई का निर्देश दिया। विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा कि आम जनता की समस्याओं का समाधान करना ही जनप्रतिनिधि का मुख्य दायित्व है। मेरे दरवाजे हर वर्ग के नागरिकों के लिए सदा खुले हैं। जनता का भरोसा ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है और उनकी सेवा मेरा प्रथम कर्तव्य है,जनसुनवाई कार्यक्रम में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों से आए नागरिकों ने बताया कि कई इलाकों में वर्षों से भूमि अतिक्रमण की समस्या बनी हुई है, वहीं कुछ स्थानों पर बिजली ट्रांसफार्मर जले हुए हैं और जलापूर्ति की व्यवस्था भी बाधित है। इन समस्याओं को प्राथमिकता पर लेते हुए विधायक ने संबंधित विभागों से समन्वय स्थापित कर त्वरित समाधान के लिए निर्देशित किया। विधायक सेवा कार्यालय परिसर में जनसुनवाई एक बार फिर यह साबित करती है कि प्रदीप प्रसाद जनप्रतिनिधि के रूप में केवल विधान सभा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे धरातल पर उतरकर जनता की पीड़ा को समझते हैं और उसके समाधान के लिए सक्रिय रहते हैं। अंत में उपस्थित लोगों ने विधायक प्रदीप प्रसाद को धन्यवाद दिया और उनके सक्रिय जनसंपर्क की सराहना की।

उत्तरी छोटानागपुर क्षत्रिय समाज की आकस्मिक बैठक संपन्न

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। दहेज उन्मूलन समिति क्षत्रिय महासभा उत्तरी छोटानागपुर हजारीबाग झारखंड की आकस्मिक बैठक मुंद्रिका कुंज भवन हजारीबाग के प्रांगण में हजारीबाग जिला अध्यक्ष दिनेश्वर सिंह की अध्यक्षता में की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य वार्षिक त्रिदिवसीय महाअधिवेशन वर्ष 2025 होलंग प्रगणा अंतर्गत ग्राम खंभवा में होना सुनिश्चित हुआ है। जिसे अच्छी तरह से सफल बनाने हेतु उस पर विचार विमर्श किया गया। जो इसी माह 29 मई 2025 से 31 मई 2025 तक होगा। कार्यक्रम का आरम्भ जय भवानी के नारे से किया गया। सभापति गोपाल सिंह अचानक अपने कुछ निजी कार्यों से बैठक में उपस्थित नहीं हो पाए। और समय विलंब होने के कारण फोन पर उपस्थित लोगों को दिशा निर्देश दिए की बैठक की कार्यवाही आरम्भ किया जाए। उपस्थित सभी लोगों की राय विचार विमर्श से कुछ प्रस्ताव लिए जिसे पारित भी किया गया। जो इस प्रकार है। इस कार्यक्रम में होने वाले सभी प्रकार के खर्च का आकलन किया गया। जो इस खर्च का सहयोग राशि पूर्व वर्ष कि भांति तीन प्रगणा चम्पा, होलंग एवं जगेसर प्रगना अंतर्गत के सभी क्षत्रिय ग्राम वासीगण करेंगें। यह भी निर्णय लिया गया है कि प्रत्येक घर 500/-? का सहयोग राशि प्रदान करेंगे। लिए गए निर्णय में क्षेत्र के सभी प्रगणा अध्यक्ष को यह दायित्व दिया जाता है कि अपने-अपने क्षेत्र के ग्राम में जानकारी देते हुए उक्त ग्राम के लोगो के सहयोग से राशि कि माँग कर कोष में जमा करें। सधन्यवाद ज्ञापन कर बैठक की कार्यवाही समाप्त की गई। इस अवसर पर मुख्य संरक्षक जगदीश सिंह, सचिव रामचंद्र सिंह, महासचिव राकेश कुमार सिंह, जिला अध्यक्ष दिनेश्वर सिंह, उपाध्यक्ष शिवनारायण सिंह, चम्पा प्रगणा अध्यक्ष बिनोदानंद सिंह, जगेसर प्रगणा अध्यक्ष मुरारी सिंह, होलंग प्रगणा अध्यक्ष कैलाशपति सिंह, महासचिव सत्येंद्र सिंह, मार्गदर्शन कमिटी के सदस्य सीश्र डीश्र सिंह, देवनारायण सिंह, बृजकिशोर सिंह, बच्चू सिंह, अमरेश सिंह, अरुण सिंह, ठाकुर दयाल सिंह आदि अन्य लोग उपस्थित थे।

टाटीझरिया के सदारो की बेटियों को सांसद ने भेंट किया लहंगा, शादी की दी बधाई

टाटीझरिया (हजारीबाग) प्रखंड के सदारो में हज़ारीबाग लोकसभा सांसद मनीष जायसवाल ने शनिवार को विवाह के अवसर पर दो बेटियों को लहंगा भेंटकर उन्हें बधाई दी। यह लहंगा नीतू कुमारी पिता तिलक अगेरिया और रेशमी कुमारी पिता बिरसा अगेरिया को दिया गया। इस दौरान सांसद ने कहा कि विवाह की तैयारियों में जुटे परिवारों को लहंगा प्रदान किया गया और परिवारजनों के साथ उनकी खुशियों में सहभागी बनकर मानवता का संदेश दिया। सामाजिक समरसता और जरूरतमंदों के सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से परिवारों के बीच विवाह के अवसर पर पारंपरिक लहंगे का वितरण किया जा रहा है। मौके पर मंडल अध्यक्ष कैलाशपति सिंह, प्रमुख सह सांसद प्रतिनिधि संतोष मंडल, रजनीकांत चौधरी, सहदेव यादव, कृष्णा साव, अधीरचंद्र तिवारी, अशोक यादव, सुरेश प्रसाद, प्रबील प्रसाद, महेश अग्रवाल, बिनोद अगेरिया, झुनझुन गुप्ता, प्रकाश साव आदि मौजूद रहे। नीतू कुमारी, रेशमी कुमारी और उनके माता-पिता ने सांसद मनीष जायसवाल के इस उपहार हेतु आभार जताया है। विष्णुगढ़ में आयोजित कलश यात्रा कार्यक्रम में शामिल होने के पश्चात वापसी के क्रम में सांसद मनीष जायसवाल ने टाटीझरिया में रूककर गुलाब जामुन का लुत्फ उठाया। उन्होंने कहा कि हजारीबाग संसदीय क्षेत्र का टाटीझरिया का गुलाबजामुन देश-विदेश में प्रसिद्ध है। यहां के दर्जनों गुलाबजामुन की दुकानों से स्थानीय लोगों को रोजगार मिला है।

विभावि में आयोजित हुआ एक देश- एक चुनाव विषयक गोष्ठी, बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए सांसद मनीष जायसवाल

वन नेशन, वन इलेक्शन को जनांदोलन बनाने की जरूरत : सांसद मनीष जायसवाल

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। वन नेशन वन इलेक्शन की प्रस्तावित व्यवस्था को एक जन आंदोलन बननी चाहिए। यह प्रत्येक नागरिक को प्रभावित करने वाला विषय है। उक्त बातें हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने कही। वह शनिवार को विभावि के विवेकानंद सभागार में बतौर मुख्य अतिथि इसी विषय पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का आयोजन राजनीति विज्ञान विभाग एवं आइक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में विभावि के स्वामी विवेकानंद सभागार में किया गया। सांसद मनीष जायसवाल ने कहा की इस व्यवस्था का उद्देश्य है लोकसभा और विधानसभा के चुनाव को एक साथ करवाना। स्वतंत्रता के समय से 1967 तक भारत में वन नेशन वन इलेक्शन की ही व्यवस्था लागू थी । परंतु उसके बाद उस समय की सरकारों ने राजनीतिक हित के लिए बार-बार अनुच्छेद 356 का दुरुपयोग किया। कई राज्य में सरकार गिरा दिए गए जिससे इस व्यवस्था को ध्वस्थ कर दिया गया। सांसद श्री जायसवाल ने बताया कि वर्तमान समय में वर्ष भर कहीं ना कहीं निर्वाचन होती रहती है और उसका खामियाजा पूरा देश भुगत रहा है। इससे हो रही असुविधा पर नागरिक अपने जनप्रतिनिधियों से शिकायत करते हैं। परंतु दुर्भाग्य से जनता ने कभी इसका प्रतिकार नहीं किया। इसके विरुद्ध कभी जन आंदोलन नहीं हुआ। उन्होंने आगे कहा कि अब जब वर्तमान सरकार ने इस बोझिल चुनाव प्रक्रिया को समाप्त कर एक राष्ट्र एक निर्वाचन के विचार को लाई है, तो नागरिकों को इसे समझना होगा।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में बनी कमेटी का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि इस समिति ने महत्वपूर्ण सुझाव दिए। जाने-माने अधिवक्ता पी.पी. चौधरी ने यहां तक कहा कि वह प्रत्येक राज्य में जाकर नागरिकों से इस संबंध में सुझाव इकट्ठा करेंगे। इसके बाद सांसद ने वन नेशन, वन इलेक्शन के क्या फायदे हैं उस पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इससे भ्रष्टाचार और महंगाई से निजात मिलेगा। आचार संहिता लागू होने से सरकारी तंत्र को बहुत नुकसान होता था जिससे आम लोग परेशान होते थे। यह भी समझना होगा कि एक राज्य में चुनाव होने से दूसरे राज्य भी कई प्रकार से प्रभावित होते है।

आलोचक तो फिर भी कुछ बिंदु निकालने का प्रयास करेंगे। देश के लोगों को किसी बहकावे में नहीं आना है किसी अफवाह पर भरोसा नहीं करना है। उन्होंने आह्वान किया कि देश के लोग इसके उद्देश्यों पर ध्यान दें, उसे समझ और देश के विकास में खुलकर सहयोग करने का संकल्प ले। अंत में उन्होंने जब सदन से पूछा कि कौन-कौन वन नेशन, वन इलेक्शन के समर्थन में है तो लगभग सभी लोगों ने हाथ उठाकर एकस्वर में अपना समर्थन व्यक्त किया।

इस गोष्ठी की अध्यक्षता विभावि के कुलपति प्रो.दिनेश कुमार सिंह ने, स्वागत भाषण राजनीति विज्ञान के प्रो. अजय बहादुर सिंह सहित मंच संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रो. सुकल्याण मोइत्रा ने किया। वहीं विशेषरूप से गोष्ठी को विभावि के कुलसचिव डॉ सादिक रज्जाक, हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो.कृष्ण कुमार गुप्ता सहित राजनीति विज्ञान विभाग के छात्रा अनन्या शर्मा, विधा कुमारी और पिंटू रजक ने वन नेशन वन इलेक्शन पर अपनी विस्तृत प्रतिक्रिया रखते हुए यह देश के लिए क्यों जरूरी है इसपर अपनी बात रखा। छात्र पिंटू रजक ने इसके साथ ही स्मार्ट इलेक्शन पर भी चर्चा करने की बात उठाई ।

वन नेशन वन इलेक्शन से समाज को बांटने वाली ताकतों पर लगेगा अंकुशः डॉ सादिक रज्जाक

वन नेशन वन इलेक्शन पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए समाजविज्ञान संकाय के अध्यक्ष सह विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ सादिक रज्जाक ने इसके मनोवैज्ञानिक पहलुओं को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय राजनीतिक दल कभी-कभी समाज को बांटने वाले मुद्दों को भी उठाते हैं जिसका असर चुनाव के बाद भी लंबे समय तक समाज पर रहता है। वन नेशन वन इलेक्शन से ऐसे मुद्दे बार-बार उठाने के अवसर नहीं मिलेंगे। इससे हम स्वस्थ भारत की कल्पना कर सकते हैं। विश्वविद्यालय पर पड़ने वाले प्रभाव की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि बार-बार के आचार संहिता से विश्वविद्यालय के कार्य भी बुरी तरह से प्रभावित होते हैं जिससे भी मुक्ति मिलेगी। अतः इस व्यवस्था के कई फायदे हैं। राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा इस ज्वलंत विषय पर संगोष्ठी आयोजित करने की उन्होंने सराहना की। मौके पर विशेषरूप से हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद प्रतिनिधि सत्येंद्र नारायण सिंह, हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी, मांडू विधानसभा के सांसद प्रतिनिधि द्वारिका सिंह उर्फ़ खोखा सिंह, मांडू विधानसभा की सांसद मीडिया प्रतिनिधि रीमा कुमारी, भाजपा नेता मनमीत अकेला सहित पत्रकारगण, विभावि के शिक्षाविद्, शोधार्थी, विद्यार्थी से पूरा विवेकानंद सभागार खचाखास भरा हुआ था।

विकसित भारत के लिए वन नेशन वन इलेक्शन को अपनाएः कुलपति प्रो. दिनेश कुमार सिंह

वन नेशन वन इलेक्शन पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर दिनेश कुमार सिंह ने कहा कि यह व्यवस्था दुनिया के कई विकसित देशों में पहले से ही लागू है। भारत यदि तृतीय अर्थव्यवस्था बनना चाहती है तो उसे इस व्यवस्था को अपनाना ही पड़ेगा। कुलपति ने कहा कि हमने विकसित भारत के लिए विजन 2047 का जो लक्ष्य निर्धारित किया है उसे प्राप्त करने में वन नेशन वन इलेक्शन कारगर साबित होगा। देश के लोगों को इस व्यवस्था को सही संदर्भ में समझते हुए बेझींझक इसे अपनानी चाहिए ।

विष्णुगढ़ में सात दिवसीय महायज्ञ सूर्य भगवान सह हनुमत प्रण प्रतिष्ठा का हुआ शुभारंभ

- हजारीबाग लोकसभा सांसद मनीष जयसवाल और मांडू विधायक कलश यात्रा में हुए शामिल

आदिवासी एक्सप्रेस

विष्णुगढ़ (हजारीबाग) विष्णुगढ़ के जमुनिया नदी उत्तरवाहिनी स्थित हनुमान धारा में श्री श्री 1008 सात दिवसीय महायज्ञ भगवान भास्कर सह हनुमत प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ। इस आयोजन में नवनिर्मित सूर्य भगवान के भव्य मंदिर एवं ऐतिहासिक तकरीबन 400 वर्ष से भी पूर्व में कुसुंभा रियासत के तत्कालीन जमींदार महंत घराने के महंत मोहन दास के द्वारा स्थापित हनुमान मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी। इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि हजारीबाग लोकसभा के सांसद मनीष जयसवाल एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में मांडू विधानसभा के विधायक निर्मल महतो उर्फ तिवारी महतो शामिल हुए। सात दिवसीय आयोजन का शुभारंभ शनिवार प्रातः कलश यात्रा के साथ की गई। चिलचिलाती धूप के बीच हनुमान धारा से 3100 कलश यात्री जल भरने के लिए करोंज मोड़, हॉस्पिटल चौक, सात माइल चौक, रमुआ देवी मंडप, कसेरा मोहल्ला, बोलियागंज होते हुए पुनः उत्तरवाहिनी जमुनिया नदी से जल उठाकर यज्ञ मंडप स्थल पहुंचा। इस दौरान कलश यात्रियों ने करीब 8 किमी दूरी तय किया। कलश यात्री अपने माथे में कलश धारण कर ललाट में जय श्री राम, नमः शिवाय, जय माता दी का पट्टी बांधकर पारंपरिक लाल-पीले परिधानों में गाजे-बाजे और डीजे के धुन पर भक्तिमय होकर नारे-जयकारे लगाते नजर आए। एक तरफ ऐतिहासिक हनुमान मंदिर तो दूसरी तरफ नवनिर्मित भगवान भास्कर का भव्य मंदिर, इस आयोजन से सम्पूर्ण विष्णुगढ़ भक्तिमय एवं भगवामय हो गया। बता दें कि नवनिर्मित सूर्य मंदिर एवं हनुमान मंदिर स्थल इतिहास के दौर से ही हनुमान धारा के नाम से प्रचलित है। कहा जाता है कि हनुमान मंदिर की वास्तविक मूर्ति स्वयं जमुनिया डैम के बीच से प्रकट हुई थी, तब वहां डैम का निर्माण नहीं हुआ था। जहां मूर्ति प्रकट हुई थी उसी जगह महंत मोहन दास के द्वारा सर्वप्रथम मंदिर का निर्माण किया गया था। बीतते समय के साथ 1954-55 में उक्त स्थल को तत्कालीन जमींदार महंत घराने के महंत बासुदेव दास के द्वारा जमुनिया डैम निर्माण हेतु तकरीबन 56 एकड़ जमीन दान दी गई और मंदिर का स्थान बदल कर वर्तमान स्थल में 1955 में निर्माण कराया गया। नदी की धारा के बीच से स्वयं प्रकट हुई मूर्ति के वजह से ही हनुमान धारा का नाम दिया गया। 11 अक्टूबर 2020 को हनुमान मंदिर की वास्तविक मूर्ति खंडित कर दी गई थी, जिसकी प्राण प्रतिष्ठा आज नवनिर्मित सूर्य मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के साथ हो रही है। कलश यात्रा में विष्णुगढ़, कुसुंभा, चेडरा, नवादा और बेड़ाहरियारा पंचायत के विभिन्न गांवों के करीब 10 हजार लोग जिसमें महिलाएं, युवा, बुजुर्ग और बच्चे भक्ति भाव में लीन होकर हाथों में भगवा ध्वज लहराते हुए नाचते-झूमते और भक्ति में लीन होकर कदम मिलाकर चल रहे थे। इस आकर्षक, भव्य और दिव्य कलश यात्रा में सांसद मनीष जयसवाल ने शामिल होकर लोगों का उत्साह बढ़ाया और इस धार्मिक अनुष्ठान के लिए आयोजकों को सफल आयोजन की अग्रिम शुभकामनाएं और अनंत बधाई दी। मौके पर मांडू विधानसभा सांसद प्रतिनिधि द्वारिका सिंह उर्फ खोखा सिंह, हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी, विष्णुगढ़ पश्चिमी मंडल सांसद प्रतिनिधि रविन्द्र कुमार वर्णवाल उर्फ दीपू भाई, पश्चिमी मंडल अध्यक्ष किशोर कुमार मंडल, मधुसुदन प्रसाद, दीपू अकेला, सुनील अकेला, राजू श्रीवास्तव, गौतम भारती, राजेश सोनी, यज्ञ समिति के रामेश्वर सिंह, आनन्द राम, नवलकिशोर वर्मा, विनोद सिंह, अजय कुमार, अजय साव, शंकर गोस्वामी, प्रयाग सोनी, त्रिवेणी स्वर्णकार, जगदीश स्वर्णकार, युगल स्वर्णकार, बबलू सिंह, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, सुरेश भगत, मोहनलाल बर्णवाल, गुरु प्रसाद साव, अनुज सोनी, अशोक कुमार गुप्ता, जुगल स्वर्णकार, शेखर सुमन, चमारी नायक, अनुज चंद्रवंशी, अजय बरनवाल, बच्चन राम, भीम राम, बिनोद सिंह, हेमलाल साव, पुरण प्रसाद साव, निर्मल कुमार, शशि लहकार, प्रकाश सिंह, बबीता बरनवाल, दीपा बरनवाल, प्रमोद साव समेत भारी संख्या में स्थानीय गणमान्य एवं जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

गणित विभाग में तीन सप्ताह के वर्कशॉप का भव्य शुभारंभ

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। विनोबा भावे विश्वविद्यालय के गणित विभाग में तीन सप्ताह के वर्कशॉप का भव्य शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर डॉ. दिनेश कुमार सिंह थे, जबकि गेस्ट ऑफ ऑनर विज्ञान संकायाध्यक्ष डॉ. एच.एन. सिन्हा रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता, पूर्व विभागाध्यक्ष और अवकाश प्राप्त शिक्षक डॉ. राजीव कुमार द्विवेदी ने कृत्रिम बुद्धिमत्ता में उपयोग होने वाले आधुनिक गणित पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि 1965 में प्रोफेसर जेद्दा द्वारा प्रारंभ की गई यह विधा आज मशीन लर्निंग, वाशिंग मशीन और चालक रहित कारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

मुख्य अतिथि डॉ. दिनेश कुमार सिंह ने अपने उद्बोधन में जेनेटिक्स में गणित के उपयोग पर चर्चा की। उन्होंने अपने कार्यक्षेत्र में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न गणितीय सिद्धांतों की जानकारी साझा की और छात्रों को इस क्षेत्र में नए शोध और योगदान के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन स्नातकोत्तर की छात्रा सोनल गुप्ता और छात्र गौरी शंकर कुमार ने किया। मंच पर कंट्रोलर ऑफ एग्जामिनेशन डॉ. पंकज कुमार मांझी उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में सहायक राजेश कुमार और अमरेश यादव का विशेष योगदान रहा।

कार्यक्रम का समापन विज्ञान संकायाध्यक्ष डॉ. एच.एन. सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया। इस अवसर पर वाणिज्य संकायाध्यक्ष डॉ. अग्रवाल, अर्थशास्त्र विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. उमेंद्र सिंह, बॉटनी विभागाध्यक्ष डॉ. अविनाश कुमार, राजनीति विज्ञान विभाग के सह प्राध्यापक डॉ. सुकल्याण मोइत्रा, और गणित विभाग के शोधार्थी विवेक तिवारी, मीनू मेहरा , शिल्पा कुमारी समेत स्नातकोत्तर छात्र उपस्थित थे। नीतीश, गौतम, प्रियंका, उषा, अभिषेक, विक्की, विकास, अनिल और रविकांत सहित कई छात्रों ने कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उनकी भागीदारी ने इस वर्कशॉप को और भी सार्थक और सफल बनाया।

चरही घाटो मार्ग में सड़क दुर्घटना में दो लोगों की मौत

- आक्रोशित ग्रामीणों ने किया सड़क को जाम
- मांडू अंचलाधिकारी भी घटनास्थल पर पहुंचे

संवादाता चरही

चरही। चरही-घाटो मुख्य मार्ग पर शुक्रवार की रात लगभग 9 बजे तेज रफ्तार अज्ञात स्कॉर्पियो वाहन की चपेट में आने से दो लोगों की मौत हो गई। तापिन नॉर्थ पिंडरा गांव के समीप दो युवक सड़क किनारे आपस में बातचीत कर रहे थे इसी क्रम में चरही की ओर से आ रही तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने दोनों युवक राजू और करण को अपनी चपेट में ले लिया जिसके बाद आनन-फानन में स्थानीय ग्रामीणों द्वारा इसकी सूचना चरही पुलिस को दी। उक्त स्थल पर पहुंच कर पुलिस ने दोनों गंभीर रूप से जख्मी युवकों को बेहतर इलाज के लिए हजारीबाग शेख भिखारी मेडिकल अस्पताल भेजा दिया। जहां हजारीबाग ले जाने के क्रम में ही दोनों युवकों ने दम तोड़ दिया। जिसके बाद आक्रोशित ग्रामीणों द्वारा सड़क को जाम कर दिया गया और देखते ही देखते सड़क पर गाड़ियों की लंबी कतार लग गई। टक्कर के बाद फरार गाड़ी को पकड़ने की मांग करते हुए ग्रामीणों ने पुलिस के साथ जम कर हुज्जत की। वहीं घंटों लगे जाम के बाद थाना प्रभारी एवं मांडू अंचलाधिकारी विमल कुमार सिंह ने लोगों को खूब समझाने का प्रयास किया लेकिन ग्रामीण घटना के बाद उग्र थे और किसी तरह की कोई बात सुनने को तैयार नहीं थे। मांडू अंचलाधिकारी ने ग्रामीणों के विभिन्न मांगों एवं मृतकों की मुआवजा से संबंधित आश्वासन लिखित रूप से दिया तब ग्रामीणों ने सड़क पर लगी जाम की हटाया। इन सब के बीच पुलिस और अंचलाधिकारी को खासा मशक्कत करना पड़ा और रात के लगभग 2 बजे जाम खुला। थाना प्रभारी और मांडू अंचलाधिकारी ने कहा है कि सरकारी प्रावधान के तहत जो भी लाभ है वो जल्द से जल्द मृतकों के परिजन को दिलवाने का प्रयास किया जाएगा। इधर ग्रामीणों ने ये भी मांग की कि इस सड़क पर ट्रांसपोर्टिंग में चलने वाले हाईवा की गति इतनी अधिक होती है कि हमेशा सड़क दुर्घटना का खतरा बना रहता है साथ ही ग्रामीणों ने कहा कि हमें किसी भी तरह की कोई मेडिकल सुविधा नहीं मिलती है ना ही कोई एंबुलेंस की सुविधा जिससे हमलोगों को काफी दिक्कत होती है। इस बिंदु पर अंचलाधिकारी ने कहा कि आप लोगों के इस मांग पर मैं सबसे पहले संज्ञान लेकर इसको ठीक करने का प्रयास करूंगा।मृतक राजू की पत्नी विकलांग है राजू के बच्चों में दो बेटी और एक बेटा है सभी बच्चे अभी छोटे हैं और करण अविवाहित था। चरही घाटो रोड में कई स्थान ऐसे हैं जहां घनी आबादी क्षेत्र है और ऐसे में तीव्र गति से चलने वाली भारी मालवाह वाहनों से हमेशा ही सड़क दुर्घटना का डर बना रहता है और कई सड़क दुर्घटनाएं होती भी हैं जिनमें करण और राजू जैसे कई लोगों को अपनी जान गंवानी पड़ी है।

संक्षिप्त समाचार

सिलठा बी में कलश यात्रा के साथ ही श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह ज्ञान महायज्ञ का हुआ शुभारंभ

रामगढ़/रामजी साह
रामगढ़ प्रखंड के सिलता भी पंचायत के सिलता गांव में मां लक्ष्मी मंदिर परिसर में आज भव्य कलश यात्रा के साथ ही श्रीमद् भागवत कथा सप्ता ज्ञान महायज्ञ का शुभारंभ हो गया 251 महिलाओं तथा कुमारी कन्याओं ने सिलठा के सरोवर में जल भरकर पूरे वैदिक मंत्रोउच्चारण तथा गाजेवाजे के साथ राधे-राधे जय घोष के साथ गांव का भ्रमण करते हुए अपने-अपने कलश को यज्ञशाला में स्थापित किया वही प्रतिदिन संध्या 6:00 बजे से रात्रि 11:00 बजे तक अयोध्या से पधारे साध्वी अमृतात्रिपाठी द्वारा कथा प्रवचन किया जाएगा। 7 दिनों तक चलने वाले श्रीमद् भागवत कथा सप्ताह ज्ञान महायज्ञ का आयोजन सिलठा के समस्त ग्रामीणों द्वारा आयोजित किया जा रहा है। इस आयोजन को लेकर क्षेत्र में भक्ति का माहौल देखा जा रहा है।

डीएमएफटी फंड में लूट कभी भी विभागीय पदाधिकारी कार्य स्थल में मौजूद नही रहते हैं

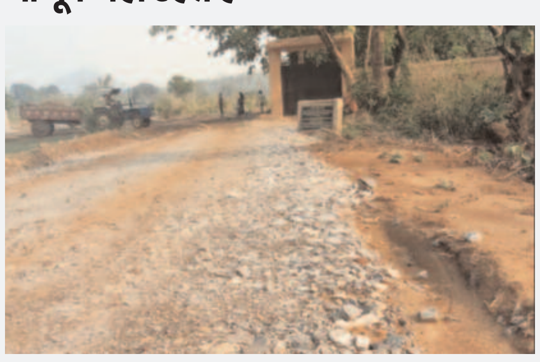

गोमो। झारखंड सरकार के डीएमएफटी योजना अंतर्गत तोपचांची में जीटी रोड चलकरी के जाहिर थान से नरकोपी तक पथ एवं पुलिया निर्माण कार्य जोरों से चल रहा है.इस योजना को टुंडी के लोकप्रिय विधायक मथुरा प्रसाद महतो ने की थी.यह पथ ग्रामीणों के लिए अति महत्वकांछी योजना है.यह पथ बनने से किसान,ग्रामीणों,रैयतों को काफी लाभ होगा तथा मुख्य सड़क से गांव आसानी से जुड़ पाएगा,लेकिन इस कार्य को देखने के लिए न तो विभाग का एग्जीक्यूटिव इंजीनियर और न कनीय अभियंता और न हीं विभागीय कोई पदाधिकारी कार्य क्षेत्र पहुंचे हैं.संवेदक पथ को एस्टीमेट के अनुसार नहीं बन रहा है.सड़क की गुणवत्ता घटिया है. इसमें बालू,गिट्टी,पत्थर तथा अन्य सामग्री एस्टीमेट के अनुसार कहीं भी उपयोग नहीं हुआ है.पथ अभी से ही जहां-तहां फट रहा है.इस पर आजसू के युवा नेता सदानंद महतो ने कहा कि डीएमएफटी फंड का लूट हैकभी भी विभागीय पदाधिकारी कार्य स्थल में मौजूद नहीं रहते हैं पथ के दोनों साइड में मोटाई दिखाया गया लेकिन बीच में दो से तीन इंच तक की डलाई नहीं है, हम विभाग से मांग करते हैं ,इस पथ की गुणवत्ता को जांच करें तथा दोषियों पर कार्रवाई हो।

बाबा मंदिर में भक्ति की बयार: वैशाखी महोत्सव में गूंजे भजन, श्रद्धालुओं ने किया रात्रि जागरण

देवघर। बाबा बैद्यनाथ धाम में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी वैशाखी महोत्सव 2025 का आयोजन श्रद्धा और भक्ति के साथ संपन्न हुआ। आयोजन देवघर की सांस्कृतिक संस्था कृष्ण कन्हैया जागरण मंच द्वारा किया गया, जिसमें भजन संध्या एवं कीर्तन कार्यक्रम का भव्य आयोजन बाबा मंदिर परिसर में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत जय लंबोदर जैसे मंगलाचरण भजन से हुई, जिसे प्रसिद्ध भजन गायक एवं पत्रकार कन्हैया खवाड़े ने सुमधुर स्वर में प्रस्तुत किया। देवघर बिराजे गौरा साथ बाबा भोलनाथ भजन पर श्रद्धालु झूमने लगे और सारा वातावरण भक्तिमय हो उठा। इसके बाद लोकगायिका रोशनी राज ने जेकर नाथ भोलेनाथ जैसे भजनों से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। तनिष्का कुमारी ने सत्यम शिवम सुंदरम भजन प्रस्तुत कर बाबा मंदिर परिसर को एक आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। वहीं, गायिका रिंकू घोष ने हे शंभू बाबा भजन गाकर श्रद्धालुओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक नारायण दास भी उपस्थित रहे, जिन्होंने कलाकारों को कीर्तनीय सम्मान प्रदान कर उनकी प्रतिभा का सम्मान किया। पूरे कार्यक्रम का संगीत संचालन म्यूजिशियन रॉकी एंड ग्रुप ने किया। देर रात तक चले इस भक्ति जागरण में देशभर से आए तीर्थयात्रियों ने हिस्सा लिया और बाबा के दरबार में भक्ति रस में डूबे रहे। बता दें कि कृष्ण कन्हैया जागरण मंच हर वर्ष बाबा बैद्यनाथ मंदिर परिसर में वैशाखी महोत्सव का आयोजन विश्व शांति और जनकल्याण की भावना से करता है।

झिमड़ी प्रकरण मामले की उच्चस्तरीय जांच तथा नीमडीह थाना प्रभारी व दोषी पदाधिकारियों पर विभागीय कार्रवाई हो- शैलेंद्र महतो

चांडिल। नीमडीह थाना क्षेत्र के झिमड़ी प्रकरण मामले में शनिवार को कुड़मी सेना चैरिटेबल ट्रस्ट ने शैलेंद्र महतो के अगुवाई में निर्दोष ग्रामीणों को रिहा कर केस वापस करने के लिए अनुमंडल कार्यालय में एसडीएम विकास राय से मिले तथा राज्य पाल के नाम एक ज्ञापन सौंपा।जिसमें बताया गया है कि बीते 26 अप्रैल को झिमड़ी गांव में मुस्लिम युवक द्वारा बंदूक की नोक पर दूसरे समुदाय की एक लड़की को अगवा कर ले गया। उसके बाद लड़की का परिवार के द्वारा नीमडीह थाना में लिखित शिकायत देने के बावजूद कई कारवाई नहीं हुई। इस बात को लेकर लड़की के परिवार वाले लड़का के निवास पर अपनी पुत्री की जानकारी लेने पहुंची तब बात बढ़ गई एवं मुस्लिम समुदाय द्वारा कड़ा रुख अपनाते हुए दबंगई करने लगे। लड़की के बारे में जानकारी नहीं दिया। जिसके कारण लड़की के परिवार दुखी व नाराज हुए। इसके बाद दोनों समुदाय के लोगों ने एक दूसरे का नुकसान पहुंचाया है। अब पुलिस अपनी नाकामी छिपाने के लिए 20-25 निर्दोष ग्रामीणों पर नामित झूठा मुकदमा कर दिया है। 7 लोगों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। अन्य का खोज जारी है। घटना की उच्चस्तरीय जांच कर निर्दोष ग्रामीणों के विरुद्ध किए गए केस वापस लेने एवं निर्दोष ग्रामीणों को रिहा करने तथा नीमडीह थाना प्रभारी एवं अन्य दोषी पदाधिकारियों के विरुद्ध विभागीय कार्रवाई करने की मांग किया है।इस मौके पर शैलेंद्र महतो, रतन महतो, सलील महतो आदि मुख्य रूप से मौजूद थे।

दक्षिणी छोटानागपुर के दलित और आदिवासी समाज ने आज भी जिंदा रखा है अपनी सनातन परंपरा

- दहकते अंगारों पर चलकर सैकड़ों शिव भक्तों ने दी भक्ति की परीक्षा
- तुपुदाना में मंडा पूजा फुलखुन्दी और झूलन के साथ संपन्न

झारखंड का पारम्परिक लोकपर्व मंडा पूजा धूमधाम और पूरी विधि विधान से तुपुदाना में सम्पन्न। इस लोक पर्व में तुपुदाना और आसपास के सदान,आदिवासी जनजाति और अनुसूचित जाति के सैकड़ों शिवभक्तों ने दहकते अंगारे में चलकर अपनी 11 दिनों की कड़ीं तपस्या और आस्था का परिचय दिया।इस पर्व को राज्य में अच्छी बारिश, खेत-बारी और समृद्धि के लिए मनाया जाता है. मंडा पूजा में शिव भक्त भगवान भोले शंकर को अपनी भक्ति की शक्ति से खुश करने के लिए 11 दिनों से पूरी नियम का पालन करते हुए भोक्ता शिव आराधना में लीन रहते है. भोक्ता 11 दिनों तक दिन में एक बार भोजन करते है. दिन में दो बार नहाते है एवं

सुबह और शाम महादेव की पूजा अर्चना करते है. इन 11 दिनों तक भोक्ता नियम के साथ रहते है. इन 11 दिनों में वे कोई भी अधार्मिक कार्य या अधार्मिक बातें तक नही करते है. 11 दिनों तक सात्विक भोजन करते है और नंगे पांव ही रहते है. सभी भोक्ता फुलखुन्दी के दिन निर्जला उपवास रहते है तथा शाम को दहकते अँगारे पर चल कर अपनी भक्ति की शक्ति को साबित करते है. दहकते अँगारे पर चलने से पहले महादेव बाबा की पूजा की जाती है.सभी भोक्ता शाम को नौ बार स्नान करते है फिर हर बार महादेव बाबा की पूजा की जाती है.दहकते अंगारे पर चलने को फुलखुन्दी कहा जाता है। इस दिन भोक्ताओं के घर की महिला सदस्य जिसे सोखताइन कहा जाता है वे भी उपवास रखती है और महादेव मंडप में अपने घर के भोक्ता को बारी बारी से नौ बार अपने लोटा से उनके ऊपर जल छिड़कर शुद्ध करती है.महादेव जी की पूजा के उपरान्त उल्टा लटकर धुआँसी में झूलते है.उसके बाद दहकते अंगारे पर चलते है. पूजा के दौरान बुजुर्ग से लेकर बच्चे तक दहकते अंगारों पर चलते हैं।

मंडा पूजा में शामिल होने वाले भोक्ता दो प्रकार के होते है.एक वैसे भोक्ता जिनकी मनोकामनाएं पूरी हो गयी है और दूसरे वे जो भोलेनाथ से मन्नत मांगते है वे ही भोक्ता बनते है. फुलखुन्दी के उपरांत मेले में छऊ नाच का भी आयोजन किया गया जो रात भर चला।

आसमानी बिजली ने मचाया तबाही, ठनका गिरने से एक युवक की मौत दो झुलस कर हुए घायल

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

इटखोरी (चतरा)। इटखोरी प्रखंड के कनौदी गांव के एक 15 वर्षिय बच्चा विकास कुमार की वज्रपात के चपेट में आने से घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मृतक विकास अशोक भुइयां का पुत्र था। वहीं इस दुर्घटना में इसी गांव के दीपक भुइयां पिता कोमल भुइयाँ घायल हो गया। इसके अलावे दो अन्य इस घटना में बाल बाल बच गए। घटना शनिवार दोपहर पश्चात की है। घटना के बाद बाल बाल बचे बच्चे गांव लौटे और गांव में मृतक के परिजनों और गांव वालों को इसकी सूचना दी। फिर गांव वाले घटनास्थल पर पहुंचकर विकास को इटखोरी अस्पताल में भर्ती कराया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत्यु घोषित

कर दिया। मृतक के परिजनों ने बताया कि चारों बच्चे गांव के आसपास बक्सा डैम जंगल की ओर घूमने गए थे। इसी दौरान वज्रपात होने से विकास की मौत हो गई। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम की तैयारी में जुटी हुई है। वहीं राजपुर थाना क्षेत्र के ठनका गिरने से चौरठ गांव निवासी अर्जुन यादव पिता रामेश्वर यादव घायल हो गया। जिसके बाद इटखोरी अस्पताल में भर्ती कराया गया जहाँ इलाज चल रहा है । घटना की सुचना पाकर अस्पताल पहुंचे प्रखंड विकास अधिकारी सोमनाथ बांकिरा और इटखोरी थाना प्रभारी अभिषेक कुमार सिंह घायलों का हाल चाल लिया और दोनों को बेहतर इलाज का निर्देश दिया।

काली मंदिर प्राण प्रतिष्ठा में शामिल हुए, प्रखंड प्रमुख व पलामू जिला पैक्स अध्यक्ष

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता- लालू कुमार यादव

हुसैनाबाद, पलामू। हुसैनाबाद प्रखंड अंतर्गत पंचायत कोशी के ग्राम चन कार गोपाल में काली मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा हेतु जलयात्रा का आयोजन किया गया जिसमें हुसैनाबाद व्यापार मंडल अध्यक्ष सह पलामू जिला पैक्स अध्यक्ष संघ के जिला अध्यक्ष कृष्णा बैठा ,प्रखंड प्रमुख श्रीमती राजकुमारी देवी ,पूर्व जिला परिषद मदन पासवान ,पूर्व मुखिया प्रत्यासी प्रमोद कुमार रजक ,मुखिया विजय राम, पोलडीह मुखिया प्रतिनिधि सह समाजसेवी अशोक यादव, पूर्व मुखिया सह राजद के प्रखंड अध्यक्ष सुदेश्वर राम, विनोद पासवान, रामस्वरूप मेहता, अखिलेश सिंह,पूर्व मुखिया प्रेम पासवान, भरत पासवान ,गोपाल सिंह, सतेंद्र सिंह, किसान मित्र अजय सिंह, मंदीप पासवान, गीता देवी, पूजा कुमारी ,गायत्री

देवी, मधु सिंह, पैक्स अध्यक्ष अजय सिंह, लालमोहन सिंह, जयश्री सिंह, ललन सिंह, सतेंद्र सिंह, मनीष कुमार सिंह, अनुज कुमार सिंह, विजय सिंह, अधिवक्ता संजय कुमार सिंह, छोटू सिंह, श्रवण पासवान, कुर्मीपुर पैक्स अध्यक्ष सत्यनारायण सिंह, विजय सिंह, यज्ञ मुख्य विद्वान आचार्य रमेश मिश्र मृदुल एवं बाल व्यास राजेश मिश्र तथा मुख्य यजमान बिंदेश्वरी सिंह एवं सैकड़ों श्रद्धालु शामिल होकर गाजे बाजे हाथी घोड़ा के साथ गणना धाम मंदिर का परिक्रमा करते हुए करारबार नदी से जलभरी किया गया। क्षेत्र सहित दुनिया के तमाम देवताओं एवं प्रभु श्री राम का जयघोष करते रहे सभी श्रद्धालु। यह कार्यक्रम 9 मई तक चलेगा और उसी दिन पूर्णाहुति एवं भंडारा का भी आयोजन किया गया है।बैठा ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम होने से क्षेत्र में सुख शांति और समृद्धि कायम होती है। सनातन धर्म को बरकरार रखने के लिए इस तरह के कार्यक्रम सभी क्षेत्रों में होनी चाहिए।

जीसीपीए कॉलेज में कदाचार मुक्त माहौल में चल रही स्नातक परीक्षाएं

- पुलिस निगरानी और प्रशासनिक सतर्कता से परीक्षा केंद्र पर शांतिपूर्ण वातावरण

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

छतरपुर, पलामू। छतरपुर अनुमंडल स्थित गुलाबचंद प्रसाद अग्रवाल (जीसीपीए) कॉलेज में स्नातक सत्र 2023-27 के सेमेस्टर-2 एवं सत्र 2022-26 के सेमेस्टर-3 की परीक्षाएं नीलाम्बर-पीताम्बर विश्वविद्यालय के निर्देशानुसार 22 अप्रैल से दोनों पालियों में शांतिपूर्ण एवं कदाचार मुक्त वातावरण में संचालित हो रही हैं।

परीक्षा केंद्र पर सख्त निगरानी और स्पष्ट निर्देश

केंद्राधीक्षक-सह-प्रभारी प्राचार्य प्रो. अखिलेश कुमार सिंह ने जानकारी दी कि परीक्षाओं के सफल आयोजन के लिए वीक्षकों और परीक्षार्थियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि किसी भी प्रकार की गड़बड़ी या कदाचार को किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कदाचार मुक्त परीक्षा कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

पुलिस प्रशासन एवं मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में शांतिपूर्ण परीक्षा संचालन*
परीक्षा केंद्र पर पुलिस प्रशासन और दंडाधिकारी की कड़ी निगरानी में सभी व्यवस्थाएं चाक-चौबंद हैं। कॉलेज के कर्मियों के सक्रिय सहयोग से अब तक की सभी परीक्षाएं बिना किसी व्यवधान के संपन्न हो रही हैं।

इंग्लिश इलेक्टिव परीक्षा में 23 विद्यार्थी अनुपस्थित

इंग्लिश इलेक्टिव विषय की परीक्षा में कुल 593 विद्यार्थियों को सम्मिलित होना था, जिनमें से 23 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे।

कॉलेज सचिव ने किया निरीक्षण

परीक्षा के दौरान कॉलेज के सचिव डॉ. अमित कुमार अग्रवाल ने भी विभिन्न परीक्षा कक्षों का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया और केंद्राधीक्षक से परीक्षा संचालन की जानकारी ली।

शनिवार को अचानक मौसम बदली हुई रिमझिम बारिस

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

इटखोरी (चतरा)। इटखोरी में शनिवार को झमाझम बारिश हुई। अचानक मौसम बदला और बारिश शुरू हो गया। बारिश के बाद मौसम सुहाना हो गया। एक घंटे तक लगातार बारिश हुई। बारिश से तापमान में गिरावट आई है। लोगों ने गर्मी से राहत मिली। वहीं किसान खूश है। बारिश से गलीयो में किचड़ उत्पन्न हो गया।

सोहेया पहाड़ में अपराधियों जलाई 80 लाख के पोकलेन मशिन

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता- लालू कुमार यादव

पलामू। हुसैनाबाद के सोहया पहाड़ स्थित एक क्रेसर प्लांट में बीती रात्रि बाइक सवार अपराधियो ने पोकलेन में लगाई आग, आग लगाकर फायरिंग कर दहसत फैलाते हुए घटना स्थल से भागे अपराधी, सूचना मिलते ही पुलिस पहुच छानबीन में जुटी, हुसैनाबाद थाना क्षेत्र की है घटना।

अज्ञात वाहन के चपेट में आने से 30 वर्षीय व्यक्ति की मौत

मांडर। राष्ट्रीय राजमार्ग 75 पर प्रारंभिक के निकट शुक्रवार की देर रात हुई ,सड़क हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई, 35 वर्षीय एक व्यक्ति प्रारंभिक चौक के निकट से जा रहा था इसी दौरान उसे एक अज्ञात बहन ने अपनी चपेट में ले लिया सड़क पर गिरने के कारण उसे गंभीर चोट आई थी घटना की जानकारी मिलते ही मांडर पुलिस ने उसे इलाज के लिए रेफरल अस्पताल मांडर पहुंचा जहां से प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए उसे रिम्स रेफर कर दिया गया रिम्स में देर रात इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई ,उसकी पहचान नहीं हो पाई थी मांडर पुलिस के अनुसार उसके पॉकेट से कोई आईडी भी नहीं मिली है।

वहीं दूसरी ओर ब्रांडेड ठाकुरगांव पथ पर मामा ईट भट्ठा के निकट हुए, सड़क हादसे में गोगरी निवासी 17 वर्षीय विशेष उरांव घायल हो गया मिली जानकारी के अनुसार वह बाइक से काम करने ठाकुर गांव जा रहा था इसी दौरान उपयुक्त स्थान के निकट एक ऑटो ने उसे अपनी चपेट में ले लिया प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए उसे भी रिम्स रेफर किया गया है।

वाहिद खान ने की संविधान बचाव रैली में शामिल होने की अपील

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददात

पलामू। झारखंड प्रदेश अल्पसंख्यक कांग्रेस कमेटी के प्रदेश अध्यक्ष मंजूर अंसारी के निर्देशानुसार राज्य स्तरीय संविधान बचाव रैली 6 मई को पुराना विधानसभा मैदान धुर्वा रांची में आयोजित की जा रही है। इस रैली में कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महासचिव, प्रदेश प्रभारी समेत कई सम्मानित लोगों के उपस्थित रहने की संभावना है।

कांग्रेस नेता की अपील

कांग्रेस नेता वाहिद खान ने लोगों से अपील की है कि इस रैली में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित हों और संविधान बचाव के इस महाअभियान में अपना समर्थन दें। उन्होंने कहा कि मंजूर अंसारी के नेतृत्व में झारखंड प्रदेश कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग लगातार सक्रिय है और इस रैली के माध्यम से अपनी एकता और मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने की तैयारी में हम सब लोग लगे हुए हैं।

प्रमुख उपस्थित लोग

श्री खान ने कहा इसको लेकर मुख्य रूप से खालिद खान, मो. सगीर अंसारी, मो. सुल्तान, मूशर्रत जबीं, मो नाजीर, मुस्लिम अंसारी, आलम, मारूफ, हसन, नाजीर हुसैन, मुखतार अंसारी, ताज मोहम्मद की अहम भूमिका है।

रैली का उद्देश्य

इस रैली का उद्देश्य संविधान की रक्षा करना और सभी समुदाय के अधिकारों की रक्षा करना है। कांग्रेस पार्टी इस रैली के माध्यम से अपनी एकता और मजबूत उपस्थिति दर्ज कराने की तैयारी में है।

निष्कर्ष

झारखंड प्रदेश अल्पसंख्यक कांग्रेस कमेटी की संविधान बचाव रैली 6 मई को पुराना विधानसभा मैदान धुर्वा रांची में आयोजित की जा रही है। इस रैली में कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महासचिव, प्रदेश प्रभारी समेत कई सम्मानित लोगों के उपस्थित रहने की संभावना है। कांग्रेस नेता वाहिद खान ने लोगों से अपील की है कि इस रैली में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित हों और संविधान बचाव के इस महाअभियान में अपना समर्थन दें।

संक्षिप्त समाचार

नीट परीक्षा को लेकर उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक ने किया सभी परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण, सुरक्षा और सुविधाओं का लिया जाएजा

● सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छता, सीसीटीवी व बिजली व्यवस्था दुरुस्त रखने का दिया गया निर्देश

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक ने दोनों परीक्षा केंद्रों का दौरा कर वहां उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं की स्थिति की जांच की।उपायुक्त ने शांतिपूर्ण, नकल विहीन, पारदर्शिता से परीक्षा को लेकर सुरक्षा के सभी इंतजाम को दुरुस्त रखने का निर्देश केन्द्र व्यवस्थापकों को दिया। साथ ही परीक्षा केंद्रों पर मूलभूत सुविधाओं की स्थिति के साथ परीक्षार्थियों के बायोमेट्रिक उपस्थिति, पेयजल सीसीटीवी व बिजली व्यवस्था दुरुस्त रखने का निर्देश दिया।

परीक्षार्थियों से अपील, समय पर पहुंचे परीक्षा केंद्र–डीसी
उपायुक्त मनीष कुमार ने परीक्षा देने वाले छात्रों से अपील की है कि वे परीक्षा के दिन समय पर अपने परीक्षा केंद्र पर पहुंचे और सभी निर्धारित निर्देशों का पालन करें। उन्होंने कहा कि प्रशासन और पुलिस द्वारा सभी व्यवस्था पूरी तरह से सुनिश्चित की गई है ताकि उम्मीदवारों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

प्रभारी जिला परियोजना प्रबंधक, ई0 पंचायत द्वारा शहरकोल एवं इशाकपुर ग्राम पंचायत में जलमीनार मरम्मती का किया निरीक्षण

● प्रोजेक्ट जीवनधारा अंतर्गत सभी जलमीनारों का किया जा रहा है मरम्मती

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
शनिवार को प्रभारी जिला परियोजना प्रबंधक, ई0 पंचायत आनंद प्रकाश द्वारा प्रोजेक्ट जीवनधारा अंतर्गत पाकुड़ प्रखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत शहरकोल एवं इशाकपुर में 14 एवं 15 वें वित्त आयोग द्वारा निर्मित खराब हो चुके जलमीनार के मरम्मती कार्य का निरीक्षण किया। ठीक हो चुके जलमीनारों का नियमित देखभाल एवं जल निकासी हेतु सोक पीट बनाने का निदेश दिया गया। साथ ही मरम्मती हेतु लंबित जलमीनारों को एक सप्ताह के अंदर ठीक करवाने का निर्देश दिया गया।

मतीभ्रस्ट इंसान क़ो इंसानियत फाउंडेशन के सदस्यों ने पहनया नया पोशाक

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
पाकुड़ नया वल्लभपुर मे पिछले कई वर्षो से परिवार से बिछड़कर रह रहे एक ऐसा इंसान जो दुसरो पर आश्रित है घर ठिकाना कुछ पता नहीं है। यह के स्थानीय लोग इनका देखरेख करते आ रहे है। मानवता का परिचय देते हुए इंसानियत फाउंडेशन के सदस्यों प्रत्येक त्यौहार मे नहला दुलाकर नया कपड़ा, सैण्डल खाना आदि का व्यवस्था करके देते है। इंसानियत फाउंडेशन सचिव बानिज शेख ने कहा हमारे संस्था सभी जाति धर्मो के लोगों क़ो निस्वार्थ भाव से रक्तदान, राशन वितरण, कपड़ा वितरण, असहाय लोगों क़ो दवा खरीदने के लिए राशि आदि दान किया जाता है। यह सब ग्रुप के सदस्यों किया जाता है एवं आगे मे सेवा करते रहेंगे। सब इंसान एक समान है मौक़े पर सेताब शेख, काबिजुल शेख, मुसलोद्दीन शेख, असिकुल शेख, केबलू साहा, राजीव मंडल, हाजी अब्दुल रहीम, मोसराफ शेख, आदि लोग मौजूद रहे।

झारखंड के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष ने चित्रा स्थित गेस्ट हाउस में की बैठक

मिशन सारठ, ...नई सोच नई उमंग नया सफर नया जोश के साथ

कृष्णा गोस्वामी, देवघर
झारखंड के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष ने चित्रा स्थित गेस्ट हाउस में शनिवार को किया बैठक। वहीं इस बैठक की अध्यक्षता कर रहे पूर्व विधानसभा स्पीकर शशांक शेखर भोक्ता की अध्यक्षता में की गई। आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर मिशन सारठ की तैयारी को लेकर पूर्व स्पीकर ने अपने सारठ विधानसभा क्षेत्र के सैकड़ो की संख्या मे उपस्थित चहेते कार्यकर्ताओं के संग बैठक की गई। जिसमें उन्होंने निर्णय लिया कि सारठ विधानसभा की जनता जनार्दन

का सहयोग के ही बदौलत बगैर पार्टी चुनाव लड़ने की बात कही। साथ ही उन्होंने कहा कि हमने पार्टी को छोड़ नहीं बल्कि पार्टी सामंतवादी विचारधारा की लोगों के आने से पार्टी में उस तरह की मान सम्मान मर्यादा नहीं रह गई जिसको लेकर उन्होंने कहा कि जनता के दिलों पर अपनी छाप छोड़ने का काम करेंगे जिससे आने वाली विधानसभा चुनाव में पार्टी नहीं बल्कि प्रत्याशी मायने रहेंगे । चाहे वह किसी भी संगठन से क्यों ना हो। इस तरह बातों से कार्यकर्ताओं मैं काफी उत्साह देखने को मिला।

अभी प्रशांत शेखर भोक्ता निर्दलीय के तौर पर करेंगे राजनीतिक
युवा नेता प्रशांत शेखर भोक्ता ने कहा कि हम अपना संगठन बनाके 2029 के चुनाव के लिये आगे बढ़ेंगे और जितना भी हो सके पूरी तरह से सभी पंचायत में जाकर संगठन को मजबूत करेंगे। अभी पार्टी का चयन नहीं किया गया है कि मैं किस पार्टी से चुनाव लड़ेंगे। अभी पूरी तरह से निर्दलीय के तौर पर जाने का एलान हुआ है। आपने देखा कि आज जितने भी कार्यकर्ता मौजूद थे। वह सभी 10 साल के बाद भी हमसे जुड़े हुए हैं। जितना हो सके लोगों को, युवाओं को हमारे साथ जोड़ा जाए और संगठन को पंचायत लेवल पर मजबूत करके हर घर तक पहुँचना है। वहीं कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए पूर्व विधायक और वर्तमान विधायक को भी आड़े हाथ लिया।

वहीं समारोह में उपस्थित संबोधित
कार्यक्रम संबोधन करने वाले में राम मोहन चौधरी, राजेश राय, धनंजय यादव, हसन अंसारी, आनंद महतो, रतन दास, कृष्णा सिंह मुजम्मिल अंसारी, इकराम अंसारी, बलराम भंडारी, प्रकाश यादव, त्रिघुन मिर्धा, नित्यानंद राय, संतोष राय, गोलक अंसारी, छब्बी मियां, अशोक चौधरी, निरंतर मिश्रा, सत्यनारायण राय सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।

सल्फास बना ज़हर का दूसरा नामः पाकुड़ में बेखौफ़ बिक रही मौत की गोलियाँ

पाकुड़ में खुलेआम बिक रहा सल्फासः ज़हर के सौदागरों पर कब गिरेगी गाज ?

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
पाकुड़ जिले में सल्फास टेबलेट से हो रही लगातार मौतें अब एक गंभीर चेतावनी बन चुकी हैं। बीते दिनों ही एक पति-पत्नी ने सल्फास खाकर अपनी जान गंवा दी एक ऐसा अंत जो रोका जा सकता था।
सल्फास टेबलेट सिर्फ कृषि कार्य के लिए उपयोग की जाने वाली कीटनाशक है। इसे किसी मेडिकल स्टोर पर बेचना मना है। यह केवल अधिकृत कृषि बीज भंडारों से ही किसानों को बेचा जा सकता है, वो भी कड़े नियमों के तहत। लेकिन अफसोस, आज पाकुड़ जिले में यह जानलेवा ज़हर खुलेआम, बिना जांचे-परखे, किसी को भी बेचा जा

रहा है।

क्या सल्फास अब सामान्य प्रोडक्ट बन गया है ?
यह सवाल अब हर नागरिक और प्रशासन के सामने खड़ा है। ऐसी लापरवाही न केवल कानून की अवहेलना है, बल्कि सीधे-सीधे ज़िंदगियों से खिलवाड़ है। सल्फास की आसान उपलब्धता ने आत्महत्या को जैसे एक विकल्प बना दिया है

- THE NEWS POST आग्रह करती है-
पाकुड़ जिला उपायुक्त से निवेदन है कि सल्फास की बिक्री को लेकर कड़ा नियम लागू किया जाए।
टेबलेट देने से पहले दो गवाहों की उपस्थिति में लिखित पत्र लिया जाए। पत्र में साफ तौर पर लिखा हो कि इसका उपयोग केवल कृषि कार्य में किया जाएगा। किसी भी दुरुपयोग की स्थिति में वही दोनों व्यक्ति जिम्मेदार होंगे।
सल्फास कोई आम दवा नहीं – यह ज़हर है। और जब ज़हर कानून से ऊपर हो जाए, तो मौत का खेल शुरू हो जाता है।
अब वक्त है चेतने का – ताकि अगली मौत से पहले हम ज़िम्मेदार बनें।

गांव की प्यास बुझाने में टैंकर मददगार, 15 वें वित्त से जिलेभर के गांवों में भेजा जा रहा टैंकर

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो
पाकुड़- तपती धूप और भीषण गर्मी में गले का सुखना और देह से पसीना निकलता लाजमी है। गांवों में पेयजलापूर्ति की समस्या को लेकर उपायुक्त मनीष कुमार लगातार मॉनिटरिंग कर जिले के लिट्टीपाड़ा प्रखंड के सभी ग्राम पंचायतों एवं अमड़ापाड़ा प्रखंड के डुमरचीर पंचायत, महेशपुर प्रखंड के तेलियापोखर, पाकुड़िया प्रखंड के बनियापसार, खाकसा पंचायत के अंजनगरिया ग्राम सहित अन्य

ग्रामों में ग्रामीणों को टैंकर के माध्यम से जरूरतमंद को पीने का पानी उपलब्ध कराया गया है जिससे ग्रामीणों में खुशी का माहौल देखी जा रही है। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन के प्रति आभार प्रकट किया। जिला पंचायत राज पदाधिकारी श्रीमती प्रीतिलता मुर्मू ने बताया कि उपायुक्त के आदेशानुसार 15 वें वित्त आयोग योजना से जिला प्रखंड के सभी ग्राम पंचायतों में टैंकर उपलब्ध है। यदि किसी भी ग्रामीण को पेयजलापूर्ति की आवश्यकता हो तो इसके लिए ग्राम पंचायत के पंचायत सचिव या मुखिया से सीधे सम्पर्क कर सकते हैं ताकि समय से पेयजल उपलब्ध कराई जा सके।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम अंतर्गत मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन पर जागरूकता कार्यशाला का हुआ आयोजन

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो
पाकुड़- शनिवार को जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, पाकुड़ की अध्यक्षता में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम अंतर्गत मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन विषय पर कार्यशाला/बैठक आयोजित की गई। जिसमें जिला शिक्षा पदाधिकारी शामिल हुई।
जिला समाज कल्याण पदाधिकारी के द्वारा कार्यशाला में पाकुड़ जिला अन्तर्गत कार्यरत सभी महिला पर्यवेक्षिकाओं को मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन के अवयव पर

प्रशिक्षण दिया गया।
जिला शिक्षा पदाधिकारी द्वारा आस्वश्त किया गया कि पाकुड़ जिला अंतर्गत सभी कस्तुरबा विद्यालयों में भी मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जायेगा एवं बाल विवाह संबंधी विषय पर विस्तार से जानकारी दिया गया।
इसके पश्चात जिला समाज कल्याण पदाधिकारी ने विभाग द्वारा संचालित सभी योजनाओं की समीक्षा किया जिसमें सभी महिला पर्यवेक्षिकाओं को निर्देश दिया गया कि संचालित सभी जन कल्याणकारी योजनाओं में प्रगति लाना सुनिश्चित करेंगे एवं प्रशिक्षणोपरांत अपने- अपने परियोजना में कार्यरत सभी सेविकाओं/ सहायिकाओं एवं किशोरियों को मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन पर प्रशिक्षण देना सुनिश्चित करेंगे।

पालोजोरी के शिखर नावाडीह में लगी आग हजारों की संपत्ति जलकर खाक

● परिजनों ने शॉर्ट सर्किट का दिया हवाला

कृष्णा गोस्वामी, देवघर
पालोजोरी प्रखंड सह अंचल अंतर्गत महुआडाबर पंचायत के शिखर नावाडीह के एक घर में आग लगने से हजारों की संपत्ति जलकर खाक हो गई। बताया जाता है की यह घटना शुक्रवार की देर रात की बताई जा रही है। वहीं इस घटना को लेकर पीड़ित परिजन तमीना बीबी ने बताया की सभी लोग घर पर सो रहे हैं। इसी बीच एकाएक देर रात करीब 11.30 बजे के आसपास घर में आग लग गई जिसके साथ ही पूरा घर में धुआं का गुब्बारा भर गया। साथही उन्होंने कहा की घर पर सिर्फ़ हम तीन जन ही सो रहे थे, ननद भौजाई के अलावा एक वृद्ध बूढ़ी अम्मा भी थी जो किसी तरह से उनको व अपनी जान बचाकर घर से बाहर निकल खड़े हुवे। घर एस्बेस्टर के होने के कारण ओर भी जोर जोर से आवाजें के साथ साथ आग की लपटे भी काफ़ी भयावह थी। वहीं उन्होंने हो हल्ला कर आप पड़ोस को बुलाने की कोशिश की परन्तु,आग की लपटे इतनी भयावह थीं उस आग ने अपनी आगोश में घर के भीतर रखें हर एक बेस कीमती वस्तुओं को जलाकर राख कर दिया। वहीं आस पड़ोस के लोगों ने हो हल्ला को सुनते ही आग लगी घर की ओर दौड़ पड़े। जबकि तबतक घर का लगभग सारा समान जलकर खाक हो चुका था। वहीं लोगों ने चापाकल, कुआं के मदद से पानी ला ला कर आग बुझाने का काम किया तब जाकर आग पर काबू पा सका। जबकि वहीं इस घटना को लेकर परिजनों ने शॉर्ट सर्किट का हवाला देते कहा की देर रात लाइट कभी बंद कभी चालू हो रही थी। वहीं इसकी सूचना मिलते ही महुआडाबर पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि मनोज सोरेन सुबह उक्त पीड़ित परिजनों से मिलने पहुंचे व हर संभव मदद की बात कही गई। जबकि वहीं पीड़ित तमिना बीबी पति मलाउद्दीन मियां जो परदेश कमाने के लिए बाहर गए हुवे हैं। वही पीड़ित तमिना बीबी ने बताया की हमने अंचलाधिकारी के नाम आवेदन पत्र दे दिए हैं। जबकि अंचलाधिकारी अमित कुमार भगत ने कहा उक्त पीड़ित परिजनों को हरसंभव मदद की जायेगी।

बीडीओ ने मनरेगा, आवास योजनाओं की समीक्षा कर दिए प्रगति करने के निर्देश

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
हिरणपुर (पाकुड़) शनिवार को घाघरजानी स्थित हिरणपुर प्रखंड सभागार में मनरेगा एवं आवास योजना की समीक्षा बैठक प्रखंड विकास पदाधिकारी श्री टुडू दीलिप की अध्यक्षता में हुई जिसमें सभी पंचायतों के रोजगार सेवक, पंचायत सचिव, कनीय अभियंता उपस्थित हुए। मनरेगा के तहत विभिन्न मापदंडों पर समीक्षा की गई जिसमें अबुआ आवास में शत प्रतिशत डिमांड, शत प्रतिशत एबीपीएस, बिरसा हरित ग्राम योजना अंतर्गत गड्ढा खुदाई, ट्रेंच कटिंग, सामाजिक अंकेक्षण का एटीआर अपलोड, योजना पूर्णता, आंगनबाड़ी केंद्र भवन निर्माण, पोटो हो खेल मैदान में कार्य प्रगति दो दिनों के अंदर करने का निर्देश दिया।
बीडीओ ने कहा कि सामुदायिक योजनाओं जैसे पोटो हो खेल मैदान, आंगनबाड़ी केंद्र भवन निर्माण में एनएमएमएस कराना अनिवार्य है। इसके लिए मेट को सहयोग करने हेतु रोजगार सेवक को निर्देश दिया गया। सभी अबुआ आवास योजना में कार्य प्रगति की समीक्षा की गई तथा प्रतिदिन पूर्णता का लक्ष्य सभी पंचायत को दिया गया। सभी जनमन आवास योजना की पूर्णता तथा प्रधानमंत्री आवास योजना स्वीकृति हेतु निर्देश दिया गया। मौके पर प्रभारी प्रखंड समन्वयक, रवि रंजन राज, प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी ट्विंकल चौधरी उपस्थित रहे।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अमड़ापाड़ा फतेहपुर में मिशन परिवार विकास कार्यक्रम का शुभारंभ

● मिशन परिवार विकास जागरूकता रथ को किया गया हरी झंडी दिखाकर रवाना

सौरभ भगत
अमड़ापाड़ा- सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अमड़ापाड़ा फतेहपुर में प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ खालिद अहमद के द्वारा विधिवत फीता काट कर मिशन परिवार विकास कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।इस अवसर पर मिशन परिवार विकास जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना भी किया गया।यह कार्यक्रम स्वास्थ्य विभाग द्वारा हर वर्ष अप्रैल से मई माह के बीच आयोजित किया जाता है,जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन के महत्व को प्रचारित करना और जनसामान्य को जागरूक करना है।जागरूकता रथ अमड़ापाड़ा प्रखंड के अंतर्गत आने वाली सभी पंचायतों के प्रत्येक गांव का भ्रमण करेगा और लोगों को परिवार नियोजन के विभिन्न साधनों जैसे कि गर्भनिरोधक गोलियाँ,अंतरा इंजेक्शन,छाया गोली,नसबंदी आदि की जानकारी देगा।

उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक ने की नीट परीक्षा के सफल आयोजन को लेकर बैठक किए

● पाकुड़ राज +2 स्कूल, पाकुड़ एवं डिस्ट्रिक्ट सी0एम0 स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, बालिका पाकुड़ में बनाए गए परीक्षा केन्द्र में 458 परीक्षार्थी होंगे शामिल, पुख्ता रहेगी सुरक्षा व्यवस्था ● परीक्षा केंद्रों पर पेयजल एवं दिव्यांग परीक्षार्थियों के लिए व्हील चेयर की व्यवस्था

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
समाहरणालय स्थित सभागार में उपायुक्त मनीष कुमार एवं पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार द्वारा राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (NEET) 2025 के सुचारू, निष्पक्ष एवं कदाचारमुक्त आयोजन हेतु बैठक किया गया। जिला अंतर्गत 2 केन्द्रों में परीक्षा आयोजित की जाएगी जिसमें 458 परीक्षार्थी शामिल होंगे। अपराह्न 2 बजे से 5 बजे तक परीक्षा आयोजित की जाएगी। केन्द्र में परीक्षार्थियों का प्रवेश पूर्वाह्न 11:40 बजे से शुरू हो जाएगा, अपराह्न 01:30 बजे के बाद प्रवेश निषेध रहेगा।
बैठक के दौरान उपायुक्त मनीष कुमार ने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि परीक्षा केंद्रों पर सख्त निगरानी रखी जाए तथा किसी भी प्रकार की अनुचित गतिविधि को

रोकने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएं। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे की व्यवस्था और सतत निगरानी के अलावा प्रवेश द्वार पर कड़ी जांच और पहचान पत्र का अनिवार्य सत्यापन करें।उन्होंने कहा कि महिला अभ्यर्थियों की जांच महिला टीम एवं पुरूष अभ्यर्थियों की जांच पुरूष टीम द्वारा कराएं, ताकि अभ्यर्थी परीक्षा केन्द्र में किसी प्रकार की कोई अवांछित वस्तु, चिट-पुर्जा आदि परीक्षा केन्द्र के अंदर नहीं ले जा सकें। उपायुक्त ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित नीट परीक्षा को कदाचारमुक्त संपन्न कराना जिला प्रशासन की प्राथमिकता है। निर्धारित एसओपी के अनुरूप परीक्षा का संचालन हो, किसी भी स्तर पर कोई चूक नहीं करें, किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। परीक्षा तिथि को परीक्षा केन्द्र के अलावे परीक्षा पूर्व में भी आसपास के वातावरण, घटनाओं और संदिग्ध गतिविधियों पर भी सख्त निगरानी रखी जाए। उन्होंने प्रशासनिक- पुलिस पदाधिकारियों एवं सभी परीक्षा केंद्र अधीक्षकों को सख्त निर्देश दिया कि किस समय रिपोर्टिंग, सुगम प्रवेश, परीक्षा के दौरान शांति व्यवस्था बनाए रखने और किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने हेतु पूर्व तैयारी सुनिश्चित करें। किसी भी स्तर पर संवादहीनता की स्थिति नहीं हो यह सुनिश्चित करेंगे। संवेदनशीलता और सतर्कता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि सभी परीक्षार्थी को बिना किसी असुविधा के परीक्षा में सम्मिलित होने का अवसर मिलना चाहिए, इसके लिए आवश्यकतानुसार हेल्प डेस्क की स्थापना और समुचित सूचना बोर्ड लगाए जाएं। परीक्षा केन्द्रों पर एंबुलेंस के साथ मेडिकल टीम की प्रतिनियुक्ती करने का निर्देश सिविल सर्जन को दिया है। वही समाज कल्याण पदाधिकारी को परीक्षा केंद्रों पर आने वाले दिव्यांग परीक्षार्थियों के लिए पर्याप्त संख्या में व्हीलचेयर की व्यवस्था करने का निर्देश दिया है। परीक्षा के सफल संचालन को लेकर सभी पदाधिकारियों को समन्वय के साथ कार्य करने का निर्देश दिया गया। प्रतिनियुक्त पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बल संबंधित परीक्षा केन्द्र पर निर्धारित तिथि को समय से पहुंचकर केन्द्राधीक्षक/पर्यवेक्षक के निदेशानुसार आवश्यक सुरक्षात्मक कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे।
पाकुड़ पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार द्वारा बताया गया कि सुरक्षा व्यवस्था के लिए प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर पर्याप्त संख्या में पुलिस बल तैनात किए जाएंगे। परीक्षार्थी केवल एडमिट कार्ड और फोटो के साथ परीक्षा केन्द्र में इंट्री लेंगे, किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक गैजेट, स्टेशनरी, ऑर्नामेंटस आदि लेकर नहीं आएंगे। परीक्षा केंद्र के अंदर केवल परीक्षा संचालन से संबंधित पदाधिकारी एवं वीक्षक तथा कर्मी ही प्रवेश करें। कोई भी गैर व्यक्तियों को परीक्षा केंद्र के अंदर प्रवेश नहीं करने देने का निर्देश दिया है।पुलिस उपाधीक्षक को होटल, रेस्तरां तथा अन्य आश्रयस्थलों की जांच करने का निर्देश दिया।
बैठक में उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी, सिविल सर्जन, जिला आपूर्ति पदाधिकारी, जिला पंचायत राज पदाधिकारी, विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला शिक्षा अधीक्षक, मुख्यालय डीएसपी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी पाकुड़, एनडीए समन्वयक सहित अन्य पदाधिकारी, केन्द्राधीक्षक, स्टैटिक दंडाधिकारी, उड़नदस्ता- सह-गश्ती दंडाधिकारी, पुलिस पदाधिकारी आदि उपस्थित रहे।

केरल में भाजपा की ईसाई-पहुंच योजना को लगा झटका

>> विचार

> " भाजपा सरकार देश में अल्पसंख्यकों को संविधान द्वारा दी गयी गारंटी और सुरक्षा को कमजोर कर रही है। चर्च द्वारा संचालित दीपिका ने संपादकीय में कहा कि हालांकि आरएसएस ने लेख वापस ले लिए हैं, लेकिन ऑर्गनाइजर ने अभी तक यह स्वीकार नहीं किया है कि उसके द्वारा प्रकाशित जानकारी गलत है। यह केवल उन लेखों के बारे में नहीं है जिन्हें आरएसएस ने वापस ले लिया है या अस्वीकार कर दिया है। यह जिन विचारों को आगे बढ़ाता है और जो कार्य करता रहता है, वे देश में अल्पसंख्यकों, जिनमें ईसाई भी शामिल हैं, की समान नागरिकता की भावना के लिए हानिकारक है। लेख में उत्तरी भारत में ईसाइयों पर चल रहे हमलों को भी उजागर किया।

पी. श्रीकुमारन

ईसाई परिवार अब इस बात से नाराज हैं कि भाजपा और केंद्र सरकार ने उन्हें धोखा दिया है। मानो यह काफी नहीं था, आरएसएस ने अपने मुखपत्र ऑर्गनाइजर में ईसाई समुदाय और चर्च को निशाना बनाते हुए लगातार दो लेख प्रकाशित करके आग में घी डालने का काम किया। संक्षिप्त हनीमून खत्म हो गया और भाजपा-आरएसएस गठबंधन की राजनीतिक चालाकी ने ईसाई समुदाय के गुस्से को फिर से भड़का दिया। केरल में भाजपा के बहुचर्चित ईसाई-पहुंच कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) द्वारा किये गये आत्मघाती गोल के कारण गहरा झटका लगा है, यद्यपि संसद द्वारा वक्फ (संशोधन) विधेयक पारित किये जाने के बाद, भाजपा को केरल में ईसाई समुदाय में सेंध लगाने में थोड़ी सफलता मिली थी। वास्तव में, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर का एर्नाकुलम जिले के मुनंबम में ईसाई समुदाय के एक वर्ग द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया। भाजपा और केंद्रीय मंत्री किरेनरिजिजू ने मुनंबम में 600 से अधिक ईसाई परिवारों के बीच उम्मीद जगायी थी, जो केरल वक्फ बोर्ड (केडब्ल्यूबी) के साथ कानूनी लड़ाई में उलझे हुए हैं। बोर्ड ने इस आधार पर उनकी संपत्ति पर दावा किया है कि यह संपत्ति उसकी है। केंद्रीय मंत्री ने ईसाई परिवारों का पक्ष लेने के लिए मुनंबम का दौरा भी किया। भाजपा ने शुरू में यह दावा करके उनकी उम्मीदें जगायी थीं कि विधेयक के कानून बन जाने पर इसका पूर्वव्यापी प्रभाव पड़ेगा और इससे उन्हें लाभ होगा। वास्तव में, भाजपा केरल कैथोलिक बिशप काउंसिल (केसीबीसी) को इसी आधार पर वक्फ (संशोधन) विधेयक का समर्थन करने के लिए राजी करने में सफल रही थी। लेकिन मुनंबम के ईसाइयों को, हालांकि थोड़ी देर से ही सही, यह एहसास हो गया है कि कानून से उन्हें कोई लाभ नहीं होगा। रिजिजू ने खुद स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि कानून से मुनंबम के निवासियों को केडब्ल्यूबी के साथ उनकी कानूनी लड़ाई में मदद मिलेगी। ईसाई परिवार अब इस बात से नाराज हैं कि भाजपा और केंद्र सरकार ने उन्हें धोखा दिया है। मानो यह काफी

नहीं था, आरएसएस ने अपने मुखपत्र ऑर्गनाइजर में ईसाई समुदाय और चर्च को निशाना बनाते हुए लगातार दो लेख प्रकाशित करके आग में घी डालने का काम किया। संक्षिप्त हनीमून खत्म हो गया और भाजपा-आरएसएस गठबंधन की राजनीतिक चालाकी ने ईसाई समुदाय के गुस्से को फिर से भड़का दिया। संसद में वक्फ (संशोधन) विधेयक पारित होने के तुरंत बाद, लेखों के प्रकाशन का समय महत्वपूर्ण है, जिसे उनके द्वारा किये गये हंगामे के बाद वापस ले लिया गया है। लेकिन नुकसान हो चुका है। केसीबीसी के आधिकारिक प्रवक्ता फादर थॉमस थारायिल ने स्वीकार किया कि लेख के प्रकाशन का समय निश्चित रूप से चिंता का विषय है। लेख में दावा किया गया था कि भारत में कैथोलिक चर्च के स्वामित्व वाली भूमि देश में वक्फ संपत्तियों से कहीं अधिक है। लेख में यह भी कहा गया था कि ब्रिटिश शासकों ने चर्च को लगभग सात करोड़ हेक्टेयर भूमि पट्टे पर दी थी, और बताया कि 1965 का एक नियम अभी तक लागू नहीं हुआ है, जो औपनिवेशिक युग के चार्टर, वसीयत, पट्टे और किराये के समझौतों को निरर्थक बनाता है। संसद द्वारा पारित विधेयक केंद्र सरकार को शैक्षणिक और धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए मुस्लिम धार्मिक बंदोबस्त को विनियमित करने का अधिकार देता है। बेशक, सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप ने सरकार को कानून के तत्काल कार्यान्वयन के साथ आगे बढ़ने से रोक दिया है। सुप्रीम कोर्ट 5 मई को इस मुद्दे पर सुनवाई फिर से शुरू करेगा। विपक्षी दलों ने चर्च की संपत्तियों पर नियंत्रण करने के केंद्र सरकार के कदम की कड़ी निंदा की है। उनका कहना है कि मुसलमानों के बाद, मोदी सरकार अब अपने अल्पसंख्यक विरोधी एजेंडे के तहत ईसाइयों को निशाना बना रही है। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराईविजयन, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, केरल में विपक्ष के नेता वीडीसतीशन और केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी (केपीसीसी) ने कहा कि लेख भाजपा-आरएसएस के असली इरादों को उजागर करते हैं, और वह है अल्पसंख्यकों को परेशान करना। विजयन ने अल्पसंख्यक समूहों को एक-एक करके निशाना बनाने और उन्हें चरणबद्ध तरीके से नष्ट करने की एक बड़ी योजना देखी। भाजपा सरकार देश में अल्पसंख्यकों को संविधान द्वारा दी गयी गारंटी और सुरक्षा को कमजोर कर रही है। चर्च द्वारा संचालित दीपिका ने संपादकीय में कहा कि हालांकि आरएसएस ने लेख वापस ले लिए हैं, लेकिन ऑर्गनाइजर ने अभी तक यह स्वीकार नहीं किया है कि उसके द्वारा प्रकाशित जानकारी गलत है। यह केवल उन लेखों के बारे में नहीं है जिन्हें आरएसएस ने वापस ले लिया है या अस्वीकार कर दिया है। यह जिन विचारों को आगे बढ़ाता है और जो कार्य करता रहता है, वे देश में अल्पसंख्यकों, जिनमें ईसाई भी शामिल हैं, की समान नागरिकता की भावना के लिए हानिकारक हैं। लेख में उत्तरी भारत में ईसाइयों पर चल रहे हमलों को भी उजागर किया गया है, साथ ही केंद्र सरकार की चुप्पी की भी आलोचना की गयी है, जो ईसाई समुदाय के खिलाफ हिंसा करने वालों को बढ़ावा दे रही है। इसके अलावा, इंडिया करंट्स, जोउत्तरी भारत के क्रिस्ट ज्योति प्रांत के कैपुचिन्स के संरक्षण में प्रकाशित एक प्रकाशन है, और जो एक धार्मिक मण्डली तथा चर्च के बढ़ते डर को प्रतिध्वनित करती है, के संपादकीय में कहा गया कि कई समूह, यहां तक कि कुछ जिन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, इसे जीत के रूप में मना रहे हैं। लेकिन यह वास्तव में जीत है, या केवल एक दुःस्वप्न की प्रयोगात्मक शुरुआत है। इस सबका एक संचयी प्रभाव यह हुआ है कि राज्य में ईसाई वोट बैंक में अधिक से अधिक पैठ बनाने के भाजपा के श्रमसाध्य प्रयासों को बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ा है। फिर इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि सीपीआई (एम) के नेतृत्व वाले वाम लोकतांत्रिक मोर्चे (एलडीएफ) और कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) इस मुद्दे पर भाजपा की तीव्र बेचैनी से खुश हैं। दोनों को यकीन है कि ईसाइयों का वह वर्ग जो भाजपा के जाल में फंस गया था, अब अपने कदम पीछे खींच लेगा, क्योंकि भगवा पार्टी की धोखाधड़ी उजागर हो गयी है।

संपादकीय

शहीदों का अपमान

पहलगाम आतंकी हमले और उसमें जान गंवाने वालों के परिजनों का दुख समूचा देश महसूस कर रहा है और आतंकियों के खिलाफ सबमें आक्रोश है। सभी यही चाहते हैं कि आतंकवादियों और उन्हें संरक्षण देने वालों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई हो। मगर व्यापक स्तर पर ऐसी भावनाएं अगर अनियंत्रित होने लगें और उसकी मार ऐसे लोगों पर पड़ने लगे, जिनका आतंकवाद से कोई लेना-देना न हो, तो वाजिब दुख और आक्रोश की दिशा भटक जाना स्वाभाविक है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद आक्रोश के नतीजे में एक अफसोसनाक प्रतिक्रिया यह देखी गई कि कई जगहों पर बिना किसी वजह के मुसलिम पहचान वाले लोगों को उनका नाम पूछ कर निशाना बनाया गया, उनके साथ मार-पीट गई या उनके व्यवसाय को नुकसान पहुंचाया गया। यह न केवल भावुकता के दिशाहीन हो जाने का सबूत, बल्कि देश की कानून-व्यवस्था के सामने एक गंभीर चुनौती भी है। सवाल है कि क्या इस तरह की प्रतिक्रिया देश की लोकतांत्रिक परंपरा के सामने चुनौती नहीं खड़ी कर रही है। पहलगाम हमले में जान गंवाने वाले लेफ्टिनेंट विनय नरवाल की पत्नी ने अपने पति के लिए न्याय और आतंकियों के लिए सजा सुनिश्चित करने की मांग जरूर की है, लेकिन उन्होंने सिर्फ आक्रोश की वजह से निर्दोष लोगों को निशाना बनाने और नफरत भरे बयान देने की प्रवृत्ति पर अपनी आपत्ति जाहिर की। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में लोगों से सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने व मुसलमानों या कश्मीरियों को निशाना न बनाने तथा सिर्फ शांति की अपील की। अपने ऊपर दुख का पहाड़ टूटने के बावजूद उन्होंने जिस तरह अपनी संवेदना और अपने धैर्य को संतुलित बनाए रखा, वह मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी आस्था को दर्शाती है। जम्मू-कश्मीर में पिछले कई दशक से आतंकवादियों ने जो किया है, उसका मुकम्मल और ठोस हल निकालने की जरूरत है, चाहे इसके लिए कानूनी दायरे में हर स्तर पर सख्ती बरतनी पड़े। मगर आतंकियों की हरकतों की प्रतिक्रिया में अगर कुछ लोग उत्तेजना में निर्दोष नागरिकों के खिलाफ अराजक होने लगें, तो यह न केवल मानवीय संवेदनाओं और मूल्यों के विपरीत होगा! ऐसे लोग शहीदों का अपमान कर रहें हैं।

जाति जनगणना के लिए मजबूर हुई मोदी सरकार !

मुकुल सरल

मोदी सरकार ने आगामी आम जनगणना के साथ जाति जनगणना कराने का ऐलान कर दिया है। सरकार इसे अपनी एक उपलब्धि की तरह पेश कर रही है, लेकिन इसे वास्तव में विपक्ष की ही जीत माना जा रहा है। जाति जनगणना की मांग बेहद पुरानी है और विपक्ष ख़ासकर राहुल गांधी पिछले कुछ सालों से इसको लेकर सरकार पर लगातार दबाव बनाए हुए थे, लेकिन इस घोषणा की टाइमिंग ने सबको चौंका ज़रूर दिया है, क्योंकि इस समय जब पहलगाम हमले को लेकर कार्रवाई की बात कही जा रही थी और पूरा गोदी/कॉरपोरेट मीडिया युद्ध का माहौल बनाए हुए था, उस समय लगातार हो रहीं हाई लेवल मीटिंग के बाद अचानक जाति जनगणना का ऐलान किसी को समझ में नहीं आया। यही वजह है कि इसे पहलगाम मुद्दे से ध्यान हटाने और बिहार चुनाव के संदर्भ में देखा-समझा जा रहा है। बुधवार, 30 अप्रैल की शाम केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव अचानक मीडिया के सामने आते हैं और घोषणा करते हैं कि केंद्र सरकार आगामी राष्ट्रीय जनगणना में जाति आधारित गणना को शामिल करेगी। यह निर्णय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट की राजनीतिक मामलों की समिति (सीसीपीए) की बैठक में लिया गया। यह एक तरीके से मोदी सरकार का यू-टर्न है। सरकारी प्रवक्ता और मीडिया भले ही इसे मोदी जी का एक और मास्टर स्ट्रोक बताए और कहे कि मोदी जी ने विपक्ष से उसका बड़ा मुद्दा छीन लिया, लेकिन हक़ीक़त यही है कि मोदी सरकार, विपक्ष का एजेंडा अपनाने पर ही मजबूर हुई है। अब बीजेपी समेत एनडीए के सभी दल इस फ़ैसले का स्वागत कर रहे हैं। लेकिन जाति जनगणना के मुद्दे पर बीजेपी और मोदी सरकार ने कभी अपना रुख़ साफ़ नहीं किया और हमेशा लगभग इंकार की मुद्रा में रही है। सरकार के कई मंत्री और बीजेपी नेताओं ने सार्वजनिक रूप से जाति जनगणना का विरोध भी किया है और ऐसी मांग करने वालों को हिंदू विरोधी और हिंदू धर्म तोड़ने की साज़िश के तौर पर प्रचारित किया। अब यह वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हैं। यही नहीं, पहलगाम आतंकी हमले के बाद भी बीजेपी की जो पहली पोस्ट सामने आती है उसमें भी यही लिखा गया था कि धर्म पूछा, जाति नहीं। इसे बीजेपी छत्तीसगढ़ के सोशल हैंडल से जारी किया गया था। लेकिन अब अचानक मोदी सरकार का रुख़ बदल गया है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि जाति आधारित जनगणना से समाज के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण में मदद मिलेगी और देश की प्रगति सुनिश्चित होगी। उन्होंने कहा कि कुछ राज्यों द्वारा कराए गए जातिगत सर्वेक्षण राजनीतिक उद्देश्यों से प्रेरित और अपारदर्शी थे, जिससे समाज में संदेह की स्थिति उत्पन्न हुई। अब केंद्र सरकार ने निर्णय लिया है कि जातिगत जानकारी को सर्वेक्षण के बजाय मुख्य जनगणना के माध्यम से एकत्र किया जाएगा, जिससे पारदर्शिता बनी रहेगी। उन्होंने इस निर्णय का बचाव करते हुए कांग्रेस और उसके इंडिया गठबंधन पर आरोप लगाया कि उन्होंने जातिगत जनगणना को हमेशा राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल किया है। अश्विनी वैष्णव जो आरोप विपक्ष पर लगा रहे हैं, वास्तव में वह अब उन्हीं पर लग रहे हैं, क्योंकि इस पूरी कवायद को बिहार चुनाव से जोड़कर देखा जा रहा है, जो इसी साल नवंबर-दिसंबर में होने हैं। लेकिन यहां भी एक पेच है बिहार में नीतीश सरकार जाति जनगणना कहें या जाति सर्वे करा चुकी है और वहां इससे आगे की मांग यानी जाति के आंकड़ों के अनुसार नई विकास योजनाओं और आरक्षण की सीमा 65 फ़ीसद तक बढ़ाने की मांग की जा रही है -- यानी वहां अब केवल जाति जनगणना मुद्दा नहीं है, बल्कि इससे आगे के क्रियान्वयन का मुद्दा है। इसलिए इससे बिहार में बीजेपी या नीतीश की गठबंधन सरकार को क्या फ़ायदा मिलेगा यह भी एक सवाल है। बिहार की राजनीति के जानकारों का भी यही कहना है कि लगता है कि इस दांव से बीजेपी नीतीश बाबू की बची-खुची ज़मीन भी खिसकाने की कोशिश कर रही है, क्योंकि यहां जाति गणना कराने का श्रेय नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव की महागठबंधन सरकार को है। बिहार में जाति आधारित सर्वेक्षण 2023 में कराया गया था। इस दौरान बिहार में महागठबंधन यानी नीतीश कुमार के नेतृत्व में जनता दल (यूनाइटेड), राष्ट्रीय जनता दल, कांग्रेस और वाम दलों की गठबंधन सरकार सत्ता में थी। बिहार में यह ऐसा मुद्दा था कि बीजेपी को न चाहते हुए भी मजबूरी में समर्थन करना पड़ा था। इसलिए माना जा रहा है कि अब इसके जरिये यह दिखाने की कोशिश की जा रही है कि हम पूरे देश में जाति जनगणना कराने जा रहे हैं यानी पिछड़ों के सामाजिक आधार में बीजेपी की सेंध लगाने की यह एक ओर कोशिश है और इसके जरिये नीतीश बाबू को अगले चुनाव में सियासी तौर पर 'निपटाने' की भी कोशिश है। कब होगी यह जनगणनाःहमारे देश में हर दस साल में आम जनगणना का नियम है। आख़िरी जनगणना 2011 में हुई थी। इस हिसाब से अगली जनगणना 2021 में पूरी हो जानी थी, लेकिन कोविड-19 महामारी के नाम पर इसे स्थगित कर दिया गया और इतना टाला गया कि अभी 2025 में भी इसका काम शुरू नहीं हो पाया है। अब सरकार ने इसमें जाति जनगणना भी जोड़ी है, तो लगता है कि इसमें और देर होगी, क्योंकि जनगणना फॉर्म को शायद अपडेट करना होगा। सरकार ने कहा कि वह जनगणना जल्द शुरू करने की तैयारी में है, लेकिन सटीक समय सीमा की घोषणा अभी नहीं की गई है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने यही सवाल उठाया है और एक समय सीमा तय करते हुए इससे आगे का भी रोड मैप मांगा है। सरकार की घोषणा के बाद राहुल गांधी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें कहा कि यह हमारा विजन था, जिसे सरकार ने एडाप्ट किया है, हम इसका स्वागत और समर्थन करते हैं। लेकिन साथ ही उन्होंने कहा कि यह पहला क़दम है। अपनी प्रेस कॉन्फ्रेंस में राहुल ने जाति जनगणना के तेलंगाना मॉडल का भी ज़िक्रिकिया और सरकार से उसे अपनाने की मांग की। दरअसल तेलंगाना में दिसंबर 2023 में चुनाव में जीत के बाद कांग्रेस की सरकार बनी और सत्ता में आने के तुरंत बाद मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने जाति आधारित सर्वेक्षण (समग्र सामाजिक सर्वे) कराने का ऐलान किया था। नवंबर 2024 में इस सर्वे की शुरुआत हुई और दावा किया जाता है कि दिसंबर 2024 तक इसमें 96% आबादी को कवर कर लिया गया था। राहुल गांधी ने इस मॉडल को बिहार के मॉडल से बेहतर बताते हुए कहा कि यह एक विस्तृत परामर्श प्रक्रिया के तहत तैयार किया गया है और इसे राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जा सकता है। कर्नाटक में भी 2015 में ऐसा सर्वे हुआ था। तत्कालीन कांग्रेस मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कर्नाटक राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के तहत सामाजिक-आर्थिक और शैक्षिक सर्वेक्षण कराया था, लेकिन इसकी रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं की गई। सिद्धारमैया ने अपने दूसरे कार्यकाल में 2025 में इसे कैबिनेट के सामने पेश किया ।हालांकि राहुल गांधी इसे अपना मॉडल नहीं बताते, क्योंकि इसके नतीजों को लेकर काफ़ी विवाद रहा। अब मोदी सरकार की घोषणा के बाद राहुल गांधी क्रेडिट लेने का कोई मौका छोड़ना नहीं चाहते। उन्होंने सोशल मीडिया पर भी लिखा झ्र "कहा था ना, मोदी जी को 'जाति जनगणना' करवानी ही पड़ेगी, हम करवाकर रहेंगे! यह हमारा विज़न है और हम यह सुनिश्चित करेंगे कि सरकार एक पारदर्शी और प्रभावी जाति जनगणना कराए। सबको साफ़-साफ़ पता चले कि देश की संस्थाओं और पावर स्ट्रक्चर में किसकी कितनी भागीदारी है। जाति जनगणना विकास का एक नया आयाम है। मैं उन लाखों लोगों और सभी संगठनों को बधाई देता हूं, जो इसकी मांग करते हुए लगातार मोदी सरकार से लड़ाई लड़ रहे थे -- मुझे आप पर गर्व है। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और सांसद अखिलेश यादव ने भी इसे इंडिया की जीत बताया। उन्होंने लिखाझ्र "जाति जनगणना का फ़ैसला 90% पीडीए की एकजुटता की 100% जीत है। हम सबके सम्मिलित दबाव से भाजपा सरकार मजबूरन ये निर्णय लेने को बाध्य हुई है। सामाजिक न्याय की लड़ाई में ये पीडीए की जीत का एक अतिमहत्वपूर्ण चरण है। भाजपा सरकार को ये चेतावनी है कि अपनी चुनावी धांधली को जाति जनगणना से दूर रखे। एक ईमानदार जनगणना ही हर जाति को अपनी-अपनी जनसंख्या के अनुपात में अपना वो अधिकार और हक़ दिलवाएगी, जिस पर अब तक वर्चस्ववादी फन मारकर बैठे थे। ये अधिकारों के सकारात्मक लोकतांत्रिक आंदोलन का पहला चरण है और भाजपा की नकारात्मक राजनीति का अंतिम। भाजपा की प्रभुत्ववादी सोच का अंत होकर ही रहेगा। संविधान के आगे मनविधान लंबे समय तक चल भी नहीं सकता है। ये इंडिया की जीत है! आरजेडी नेता और बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने भी इसे उनकी वैचारिक जीत बताया हैझ्रउन्होंने 'एक्स' पर लिखाझ्र "हमारी वैचारिक जीत, सामाजिक न्याय की हमारी लड़ाई अब अगले पड़ाव पर। जो आज हम करते है वो बाकी 35-40 साल बाद सोचते है। अब हम पिछड़ों/अतिपिछड़ों के लिए विधानसभा, विधानपरिषद, लोकसभा और राज्यसभा में सीटें आरक्षित करेंगे। मंडल कमीशन की अनेक सिफारिशें भी अभी लागू होना शेष है। सामाजिक न्याय ज़िंदाबाद!" उन्होंने अपने पिता और पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के भी एक ट्वीट को रिट्वीट किया। वाम दलों ने भी इस घोषणा का स्वागत किया है। लेकिन अपने सवाल भी सामने रखे है। सीपीआई-एम के नव-निर्वाचित महासचिव एमए बेबी ने एक्स' पर लिखा झ्र "जाति जनगणना को आम जनगणना का हिस्सा बनाने का सीसीपीए का निर्णय विपक्ष, जिसमें सीपीआई(एम) भी शामिल है, की सर्वसम्मत मांग के प्रति एक देर से आया हुआ जवाब है। हालांकि, अब भी कोई ठोस समय सीमा घोषित नहीं की गई है। सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए जातीय सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण बेहद ज़रूरी है ताकि सरकारी नीतियां वास्तव में समावेशी बन सकें। पार्टी ने भी एक ट्वीट करके बताया कि आज़ाद भारत में पहली जाति जनगणना का श्रेय कम्युनिस्ट पार्टी को ही जाता है -- "आज़ाद भारत में पहली जाति जनगणना केरल में ईएमएस नंबूदरीपाद के नेतृत्व वाली कम्युनिस्ट सरकार ने कराई थी। यह सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण 1968 में आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य विभिन्न जातियों की सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन का आकलन करना था। यह स्वतंत्र भारत की पहली और लंबे समय तक एकमात्र जाति आधारित गणना थी। इसके बाद दूसरी बार 2011 में सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना (एसईसीसी) कराई गई, जो पूरे प्रदेश के स्तर पर थी। सीपीआई महासचिव डी राजा ने भी इस मुद्दे पर अपनी पार्टी का पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि झ्र "विपक्षी दलों जिसमें सीपीआई भी शामिल है, के निरंतर दबाव और आंदोलन ने केंद्र सरकार को जाति जनगणना कराने पर मजबूर किया है।" उन्होंने सरकार की घोषणा को "चेहरा बचाने की कोशिश" बताया और 2021 से लंबित आम जनगणना में देरी की आलोचना की। उन्होंने सरकार से जनगणना की समय सीमा तय करने की मांग की है। साथ ही, पार्टी ने आरक्षण पर 50% की सीमा को हटाने और सार्वजनिक क्षेत्र में नौकरियों को बढ़ाने की मांग दोहराई है। उसके अनुसार, इन संरचनात्मक सुधारों के बिना जाति जनगणना सामाजिक न्याय के उद्देश्य को पूरा नहीं कर पाएगी। सीपीआई-एमएल (माले) महासचिव दीपंकर भट्टाचार्य ने एक बयान जारी कर कहा- 2024 के संसदीय चुनावों में जाति जनगणना इंडिया गठबंधन की एक प्रमुख मांग रही है। बिहार में पहले ही 2023 में जाति गणना हो चुकी है। मोदी सरकार द्वारा राज्य स्तरीय सर्वेक्षणों को राजनीति से प्रेरित बताना हास्यास्पद है, जबकि आगामी जनगणना में जाति गणना को शामिल करने का निर्णय बहुत देरी से घोषित किया गया है। आम जनगणना पहले से ही चार साल से विलंबित है। जाति सर्वेक्षण करने वाले राज्यों और इस मांग का समर्थन करने वाले विपक्ष को निशाना बनाने की बजाय, मोदी सरकार को बिहार विधानसभा द्वारा पारित किए गए 65 प्रतिशत आरक्षण नीति के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए तत्काल कदम उठाने चाहिए। खोखली बयानबाजी नहीं, बल्कि कार्रवाई होनी चाहिए!

पारंपरिक खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देने की जरूरत

शरद शर्मा

अमरीकन जर्नल ऑफ प्रिवेंटिव मेडिसिन में प्रकाशित ताजा शोध रिपोर्ट ने फिर चेताया है कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड्स का ज्यादा समय तक सेवन करना जानलेवा सबित हो सकता है। ब्राजील यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों की यह रिपोर्ट सचमुच चौंकाने वाली है। अमरीका, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया समेत आठ देशों में करीब ढाई लाख लोगों पर किए गए शोध में पाया गया कि जहां ऐसे खाद्य पदार्थों का कम उपयोग था वहां जीवन की गुणवत्ता और आयु बेहतर पाई गई। जबकि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य सामग्री न केवल हमारे पाचन तंत्र को प्रभावित करती हैं, बल्कि मोटापा, हृदय रोग, मधुमेह और यहां तक कि मानसिक तनाव जैसी समस्याओं को भी जन्म देती हैं। अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड का जिस तरह से पूरे विश्व में प्रचार-प्रसार हुआ है, उससे वह आर्थिक विकास के केंद्र में भी शामिल हो गया है। इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकॉनोमिक रिलेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में वर्ष 2011 में अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड का बाजार 723 करोड़ रुपए था, जो कि दस साल में यानी वर्ष 2021 में 2535 करोड़ रुपए तक पहुच गया है। पिछले वित्तीय वर्ष तक इसकी खपत 6000 करोड़ रुपए को पार

कर गई है। वहीं, इस साल भारत सरकार की ओर से जारी आर्थिक सर्वेक्षण 2024-25 के अनुसार भारत में चीनी, नमक और असंतृप्त वसा से भरपूर और पोषक तत्वों की कमी वाले अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों (यूपीएफ) की बढ़ती खपत कई पुरानी बीमारियों और यहाँ तक कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे रही है। भारतीय परिप्रेक्ष्य को देखें तो भी स्वस्थ भारत की कल्पना तभी साकार हो सकती है जब हम अपने खानपान की प्राथमिकताओं को पुनः परिभाषित करें और स्वाद से अधिक स्वास्थ्य को महत्व दें। आज की भाग-दौड़ भरी जीवनशैली ने हमारे खानपान की आदतों को पूरी तरह बदल दिया है। पहले जहां घर का बना पौष्टिक भोजन हमारी प्राथमिकता हुआ करती थी, वहीं अब केक, कूकीज और आइसक्रीम जैसे अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड ने हमारी थाली में स्थायी जगह बना ली है। झटपट बनने वाले, स्वादिष्ट और आसानी से उपलब्ध ये खाद्य पदार्थ आधुनिक जीवन का हिस्सा बन चुके हैं, लेकिन यह सुविधा हमारे स्वास्थ्य के लिए धीरे-धीरे ज़हर बनती जा रही है। भारत जैसे युवा और कृषि प्रधान देश में यह प्रवृत्ति और भी चिंताजनक है। खास तौर से युवाओं के बीच इन फूड्स को लेकर क्रेज इस कदर है कि इनके बिना दिन की शुरुआत और अंत ही अधूरा लगता है। स्वाद और सुविधा के इस जाल में फंसकर हम पारंपरिक, पौष्टिक और स्वदेशी भोजन से दूर होते जा रहे हैं। ऐसे में समय की मांग है कि सरकारें अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड पर नियंत्रण के लिए ठोस नीति बनाएं। मिलेट्स और पारंपरिक खाद्य पदार्थों को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएं। स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों पर हेल्दी फूड को प्रोत्साहित किया जाए। साथ ही, चरणबद्ध तरीके से ऐसे खाद्य पदार्थों के उपयोग को सीमित करने की दिशा में कार्य हो।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक व संपादक **सरोज चौधरी** द्वारा ई-37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित तथा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस लालगुटवा रांची से मुद्रित, **संस्थापक संपादक : स्व. राधाकृष्ण चौधरी, प्रबंध संपादक अरूण कुमार चौधरी * फोन :** 9471170557/08084674042, **ई-मेल :** aadivashiexpress@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

सड़क दुर्घटना में वृद्ध व्यक्ति हुआ घायल, अस्पताल में भर्ती

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। जिले के बरहेट में सड़क दुर्घटना में वृद्ध घायल हो गया घायल वृद्ध को इलाज के लिए शुक्रवार की रात सदर अस्पताल में भर्ती कराया बताया जा रहा है कि बरहेट करमटोला निवासी 60 वर्षीय वृद्ध सुबोध पंडित कुसमा जा रहा था लकड़ी का सामान लाने के लिए इस बीच दो बाइक आपस में टकरा गई और सड़क दुर्घटना में घायल हो गया मिली जानकारी के अनुसार घायल सुबोध पंडित कार्ड मिस्त्री का काम करता है व बाइक मैं सवार होकर कुसमा जा रहा था लकड़ी का सामान लाने के लिए विपरीत दिशा से आ रही बुधन पहाड़िया 30 वर्षीय की बाइक दोनों आमने-सामने टकरा गई जिसमें सुबोध पंडित गंभीर रूप से घायल हो गया. बुधन पहाड़िया को हल्की पांव में चोट लगी जबकि सुबोध पंडित को सिर व शरीर में चोट लगने से गंभीर रूप से घायल हो गया परिजनों ने घायल को इलाज के लिए शुक्रवार की रात सदर अस्पताल में भर्ती कराया चिकित्सा के देखरेख में घायल वृद्ध सुबोध पंडित का इलाज किया गया.

कांग्रेस के जिला अध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि बरकत खान ने जनता दरबार के माध्यम से विभिन्न ग्रामों की समस्याओं से अवगत हुए

मोहित मंसूरी संवाददाता आदिवासी एक्सप्रेस
बरहरवा प्रखंड स्थित विधायक कक्ष में शनिवार को विधायक निसात आलम जी के निर्देश पर कांग्रेस के जिला अध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि बरकत खान ने जनता दरबार के माध्यम से प्रखंड क्षेत्र अन्तर्गत सातगाछी,पलासबोना,दरियापुर, मधुआपाड़ा पंचायत के विभिन्न ग्रामों एवं बरहरवा नगर पंचायत के हाटपाड़ा, रेलवे मुशहरी,हरिजन टोला से पधारे आम लोगों की समस्याओं से अवगत होकर क्रमवार निदान करवाया।विधायक कक्ष में लोगों ने प्रधानमंत्री आवास से संबंधित,अबुवा आवास से संबंधित,अंचल से संबंधित,मैया सम्मान योजना से संबंधित,पेंशन स्वीकृत न होने से संबंधित,कन्यादान योजना से संबंधित अपनी-अपनी समस्याओं को रखा।प्राप्त शिकायत पर विधायक प्रतिनिधि बरकत खान ने संज्ञान लेते हुए संबंधित पदाधिकारी से वार्तालाप कर जल्द निष्पादन हेतु कार्रवाई करने की बात कही।
मौके पर ज़िला महासचिव मिथुन मण्डल, धर्मेन्द्र साह, आलमगीर, आफताब आलम सहित दर्जनों ग्रामीण उपस्थित थे।

कल्याणकारी योजना के अंतर्गत राज्य भर के समस्त अधिवक्ताओं का स्वास्थ बीमा कराया गया

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। राजमहल राज्य सरकार द्वारा अधिवक्ताओं के लिए कल्याणकारी योजना के अंतर्गत राज्य भर के समस्त अधिवक्ताओं का स्वास्थ बीमा कराया गया है। इस संदर्भ में व्यवहार न्यायालय राजमहल से भी अधिवक्ता संघ, राजमहल के अध्यक्ष अंजनी नंदन प्रसाद की अगुआई में अधिवक्ताओं का एक समूह टाना भगत स्टेडियम, रांची में आयोजित कार्यक्रम में हिस्सा लिया। कार्यक्रम में राज्य भर से आए अधिवक्ताओं को स्वस्थ बीमा कार्ड दिया गया। संघ के अध्यक्ष ने बताया कि राज्य सरकार द्वारा अधिवक्ताओं को दिए गए इस बीमा योजना लाभ के अंतर्गत अधिवक्ताओं तथा उनके पारिवारिक आश्रितों को पांच लाख रुपए तक की चिकित्सा सुविधा सूचीबद्ध अस्पतालों में मुफ्त में दी जाएगी। इस योजना को लेकर अधिवक्ताओं में हर्ष व्याप्त है। राजमहल के अधिवक्ताओं के समूह में कई वरिष्ठ एवं कनीय अधिवक्ता जिनमें अधिवक्ता विनय साहा, अधिवक्ता प्रदीप प्रामाणिक, अधिवक्ता अनिल सिंह, अधिवक्ता देवाशीष पांडे, अधिवक्ता राजीव कुमार दास, अधिवक्ता जहीर शेख, अधिवक्ता अनंत कुमार राय, अधिवक्ता पार्थ कुमार दत्ता, अधिवक्ता संदीप कुमार एवं कई अधिवक्ता गण उपस्थित थे।

अनुमंडल अस्पताल राजमहल में होमगार्ड के तौर पर सेवा दे रहे थे उसका अचानक मौत हो गया

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
राजमहल। प्रखंड क्षेत्र जमालपुर गांव निवासी चैता कुजूर के 30 वर्षीय पुत्र जीतू कुजूर जो अनुमंडल अस्पताल राजमहल में होमगार्ड के तौर पर सेवा दे रहे थे उसका अचानक मौत हो गया। परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार बीते शुक्रवार को अनुमंडल अस्पताल में 9 से 3 बजे तक की इसकी ड्यूटी थी। लेकिन दोपहर के लगभग 12:00 के करीब उसका तबीयत अचानक खराब होने लगा। तभी उन्होंने अस्पताल में ड्यूटी में मौजूद डॉक्टर से अपना इलाज कराया और प्रभारी उपाधीक्षक से छुट्टी लेकर घर चला गया। रात के लगभग 1 से 2:00 बजे उसकी तबीयत अचानक और बिगड़ गई जिससे उसकी मौत हो गई। इस हृदय विदारक घटना से परिजन सहित उसके साथ काम करने वाले सहयोगी होमगार्ड के जवान घर पहुंच कर शोक संवेदना व्यक्त किया है। अस्पताल के कर्मियों के बीच शोक की लहर है। मृतक ने अपने पीछे माता-पिता सहित पत्नी प्रेम बाड़ा, दो पुत्री एकनोशी कुजूर 6 वर्षीय, इस्पीहा कुजूर 4 वर्षीय को छोड़ गया है। परिजनों के अनुसार रिश्तेदार एवं दूर दराज रहने वाले सभी के आने के बाद शव का अंतिम संस्कार रविवार को किया जाएगा।

साहेबगंज में एक दिवसीय दत्तोपंत ठेंगड़ी रोजगार मेला का सफल आयोजन, 87 अभ्यर्थियों का चयन

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग, झारखण्ड, राँची के तत्वावधान में आज सिद्धो-कान्हू सभागार, साहेबगंज में एक दिवसीय दत्तोपंत ठेंगड़ी रोजगार मेला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन जिला नियोजनालय सह मॉडल कैरियर सेंटर, साहेबगंज द्वारा किया गया। रोजगार मेले में कुल 15 प्रतिष्ठित निजी कंपनियों ने भाग लिया, जिनमें से 8 कंपनियाँ

साहेबगंज जिले से संबंधित थीं। मेले में आई टी मैनेजर, सेल्स स्टाफ, ओ टी असिस्टेंट, कंप्यूटर ट्रेनर, इलेक्ट्रिशियन ट्रेनर, असिस्टेंट इलेक्ट्रिशियन ट्रेनर, जीडीए ट्रेनर, कंप्यूटर ऑपरेटर, केंद्र प्रबंधक, पंचायत पर्यवेक्षक, हाउसकीपिंग स्टाफ, मशीन ऑपरेटर, हेल्पर सहित अनेक पदों पर भर्ती की प्रक्रिया संपन्न हुई। इन पदों के लिए आवश्यक शैक्षणिक योग्यता में 10वीं, 12वीं, स्नातक, ओ टी में डिप्लोमा, आई टी आई, इलेक्ट्रॉनिक्स डिप्लोमा, एडीसीए, जीएनएम, एएनएम और बीएससी नर्सिंग जैसी योग्यताएँ शामिल थीं। इस दौरान कुल 820 रिक्तियों पर आवेदन आमंत्रित किए गए थे, जिसमें से 87 अभ्यर्थियों का चयन तथा 192 अभ्यर्थियों को शॉर्टलिस्ट किया गया। इसके अलावा, साहेबगंज जिले के विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा 107 अभ्यर्थियों को रोजगार एवं स्वरोजगार योजनाओं की जानकारी भी दी गई, जिससे वे सरकारी लाभों से लाभान्वित हो सकें। इस अवसर पर जिला उपायुक्त हेमंत सती ने उपस्थित युवाओं को संबोधित करते हुए कहा, हमारा लक्ष्य वर्ष 2025-26 में लगभग 7000 युवाओं को रोजगार से जोड़ने का है। जून 2025 से फरवरी 2026 के बीच यह लक्ष्य प्राप्त किया जाएगा। इसके लिए जिला प्रशासन कौशल विकास प्रशिक्षण को प्राथमिकता देगा और युवाओं को हुनरमंद बनाएगा। उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा ने भी अपने संबोधन में कहा कि जिला प्रशासन युवाओं को रोजगार से जोड़ने के लिए नियमित रूप से रोजगार मेलों का आयोजन करता रहेगा, ताकि जिले के युवा आत्मनिर्भर बन सकें।

शादी का झांसा देकर पीड़िता के साथ यौन शोषन, जांच में जुटी पुलिस

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। शहर के नगर थाना क्षेत्र में एक पीड़िता युवती के साथ शादी का झांसा देकर यौन शोषन का मामला प्रकाश में आया है.जहाँ शनिवार को नगर पुलिस ने सदर अस्पताल में मेडिकल जांच करवाने के लिए लेकर आई महिला चिकित्सक ने फौरन पीड़िता युवती का मेडिकल जांच किया। उधर मामले को लेकर पीड़िता युवती ने बताया कि बीते दिनों शहर के कॉलेज रोड के समीप एक दुकान में शादी का झांसा देकर सुजीत कुमार नामक युवक ने उससे शादी करने का प्रस्ताव रखा जहां उक्त युवक जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के झुमावती अस्पताल के समीप गली में भाड़े के

मकान पर रहता था। उधर उसके परिजनों ने उक्त युवक का अपना घर नहीं होने की बात को लेकर यह रिश्ता ठुकरा दिया मगर फिर से उक्त युवक ने उसे भरोसा दिलाया कि वो उससे शादी करके खुश रखेगा और कोई तकलीफ़ नहीं देगा। जिसके बाद पीड़िता युवती ने उससे शादी कर ली और उसके साथ रहने लगी। युवक सुजीत कुमार से शादी करने के बाद उसे पता चला कि वो पहले से ही शादीशुदा है. और उसकी पहली पत्नी से उसका केस चल रहा है जिसको लेकर वो अपने शहर गोड्डा से भागकर यहां भाड़े के मकान में छिपकर रहता है। वही शादी के बाद जब वो गर्भवती हो गई तो सुजीत कुमार नामक युवक ने उसे अपनाने से इंकार कर दिया. और उसे अपने घर से भगा दिया। जहां इस मामले को लेकर पीड़िता युवती ने नगर थाना क्षेत्र की पुलिस से संपर्क कि और अपनी दर्द को बताई जिसके बाद पुलिस ने केस दर्ज करते हुए पीड़िता युवती का मेडिकल जांच करवाने के लिए सदर अस्पताल लेकर आई हुई. नगर पुलिस पूरे मामले की जांच पड़ताल में जुटी है युवक की तलाश जारी है।

श्री श्याम मंदिर में विधिवत पूजन के बाद ज्योति जागृत किया गया

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। श्री श्याम भक्त मंडल साहिबगंज की ओर से शनिवार को श्री खाटू श्याम भगवान का शीश स्थापना दिवस पर कार्यक्रम का हुआ आयोजन। शहर के पुरुषोत्तम गली स्थित श्री श्याम मंदिर में विधिवत पूजन के बाद ज्योति जागृत किया गया। इस मौके पर सवामनी भोग व 56 भोग श्री खाटू श्याम को चढ़ाया गया। संध्या समय 6:00 बजे से मंदिर में भजन कीर्तन का आयोजन किया गया। दरभंगा की भजन गायिका विनीता सहित अन्य भजन प्रस्तुत की। उसके बाद पूजन हवन के उपरांत मंदिर में भोग का वितरण किया गया।

शराब की नशे में पति-पत्नी को मारपीट कर किया घायल

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। सकरीगली में जमीनी विवाद में मारपीट के दौरान महिला समेत दो लोग घायल हो गए दोनों घायल को इलाज के लिए सदर अस्पताल में शनिवार की शाम लाया गया बताया जा रहा है कि सकरीगली निवासी राजेश चौधरी की 28 वर्षीय पत्नी रेखा देवी व स्वर्गीय मोर चौधरी के पुत्र राजेश चौधरी 30 वर्षीय रेखा देवी की पति मारपीट के दौरान घायल हो गए घायल महिला रेखा देवी ने आरोप लगाते हुए बताई कि पड़ोस के ही सूरज चौधरी आया शराब की नशे में और गंदी-गंदी गाली देने लगा जब मना किया तो मारपीट करने लगा इसके बाद रेखा चौधरी रूपा चौधरी आकर लाठी डंडा एट पत्थर से मारपीट कर सिर फोड़ दिया मेरे पति बचाने राजेश चौधरी आया तो उसे भी मार पीट कर घायल कर दिया. बरहाल घायल महिला का इलाज सदर अस्पताल में किया गया. घायल महिला ने बताई कि थाने में जाकर मामले को लेकर आवेदन देगी.

उपायुक्त हेमंत सती ने बोरियो प्रखंड में विकास योजनाओं का लिया जायजा

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज।उपायुक्त हेमंत सती ने आज बोरियो प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों में चल रही विकास योजनाओं एवं निर्माण कार्यों का स्थल निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने पदाधिकारियों को सख्त निर्देश दिए कि सभी योजनाएं गुणवत्ता के साथ समयबद्ध तरीके से पूरी की जाएं। निरीक्षण की शुरुआत झारक्राफ्ट प्रदर्शनी के लिए बनाए जा रहे भवन से हुई, जहां उपायुक्त ने कार्य की प्रगति का जायजा लिया और उपस्थित अभियंताओं से निर्माण की गुणवत्ता सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने कहा कि यह भवन स्थानीय कारीगरों को एक मंच प्रदान करेगा, जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी। इसके बाद उपायुक्त ने लोहण्डा स्थित 500 एमटी कोल्ड स्टोरेज का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि यह कोल्ड स्टोरेज किसानों के लिए वरदान

साबित होगा, जिससे वे अपनी उपज को लंबे समय तक सुरक्षित रख सकेंगे और बेहतर मूल्य प्राप्त कर सकेंगे। उत्क्रमित मध्य विद्यालय दुर्गा टोला में अतिरिक्त दो कक्षों के निर्माण कार्य की समीक्षा करते हुए उपायुक्त ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में आधारभूत संरचना को मजबूत करना प्रशासन की प्राथमिकता है। उन्होंने कार्य में गुणवत्ता और समय सीमा का विशेष ध्यान रखने की हिदायत दी। इसके अतिरिक्त पहाड़पुर में प्रस्तावित प्रोकुलेशन टैंक तथा विद्यालय के लिए भूमि निरीक्षण किया गया, जहां उपायुक्त ने ग्रामीणों से संवाद भी किया और उनकी जरूरतों को समझा। उन्होंने ग्रामीणों को आश्वस्त किया कि प्रशासन उनकी समस्याओं के समाधान हेतु पूरी तरह तत्पर है। इसके बाद उन्होंने चतरा नाल चेक डैम निर्माण स्थल का निरीक्षण किया, जो जल संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण परियोजना है। साथ ही, तेलो पंचायत के छोटा बरमसिया, दुर्गा टोला पंचायत के आसनबोना तथा खैरवा पंचायत के रामपुर बासजोरी में तालाब निर्माण कार्यों का भी जायजा लिया गया। उपायुक्त ने कहा कि ये जल संसाधन परियोजनाएं न केवल सिंचाई सुविधा को बेहतर बनाएंगी, बल्कि जल संकट से जूझ रहे गांवों के लिए राहत का काम करेंगी। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्यों में पारदर्शिता और जनभागीदारी को प्राथमिकता दी जाए। निरीक्षण के दौरान जिला योजना पदाधिकारी अनुप कुमार, भुमि संरक्षण पदाधिकारी राहुल गुप्ता, जिला सहकारिता पदाधिकारी महादेव मुर्मू, उपस्थित थे।

डे बोर्डिंग एथलेटिक्स प्रशिक्षण केंद्र, सकरीगली के लिए सैकड़ों छात्रों ने दिखाई अपनी प्रतिभा

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। पर्यटन, कला संस्कृति, खेल कूद एवम युवा कार्य विभाग झारखंड सरकार एवं जिला प्रशासन, साहेबगंज द्वारा जिले में संचालित डे बोर्डिंग बालक एथलेटिक्स प्रशिक्षण केंद्र, सकरीगली के खिलाड़ियों के लिए सकरीगली में 3 मई को प्रातः 6:00 बजे से एन.एस.टी.सी विधि द्वारा चयन प्रतियोगिता आयोजित किया गया, जिसमें सैकड़ों छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

खिलाड़ियों का रजिस्ट्रेशन, ऊंचाई, वजन, मेडिसिन बॉल थ्रो,वर्टिकल जंप,10 गुणा 6 शटल रन,30 मीटर,800 मीटर स्पर्धा एवं स्पेसिफिक स्पर्धा का टेस्ट लिया गया। चयन के मौके पर जिला ओलंपिक संघ के सचिव माधव चंद्र घोष, एथलेटिक्स कोच योगेश यादव, अशोक कुमार, प्लस टू बी डी उच्च विद्यालय, सकरीगली के कोच आदित्य कुमार समेत प्रशिक्षण केंद्र के प्रशिक्षुओं का सराहनीय सहयोग रहा।

शैक्षणिक कार्यक्रमों की पारस्परिकता को ध्यान में रखते हुए लिया गया

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय(इग्नू), साहिबगंज महाविद्यालय के समन्वयक डॉ ध्रुब ज्योति कुमार सिंह ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि इग्नू अध्ययन केंद्र द्वारा प्रस्तावित इंडक्शन मीटिंग,4 मई.2025 को आयोजित की जानी थी.नीट परीक्षा के आयोजन को ध्यान में रखते हुए स्थगितकर दी गई है।यह निर्णय देवघर क्षेत्रीय केंद्र के निर्देशानुसार,विद्यार्थियों की सुविधा एवं अन्य शैक्षणिक कार्यक्रमों की पारस्परिकता को ध्यान में रखते हुए लिया गया है।उन्होंने बताया की इंडक्शन मीटिंग की नई तिथि एवं समय की सूचना संबंधित विद्यार्थियों को शीघ्र ही व्हाट्सएप ग्रुप एवं इग्नू पोर्टल के माध्यम से प्रदान की जाएगी।सभी संबंधित विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे नियमित रूप से इग्नू पोर्टल एवं व्हाट्सएप ग्रुप की जानकारी पर ध्यान दें।अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें इग्नू अध्ययन केंद्र,साहिबगंज महाविद्यालय से सम्पर्क कर सकते है.

परीक्षा केंद्रों के अंदर निम्नलिखित वस्तुएं ले जाने की अनुमति नहीं है

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
कोई भी वस्तु जैसे पाठ्य सामग्री (मुद्रित या लिखित), कागज के टुकड़े, ज्यामिति/पेंसिल बॉक्स, प्लास्टिक पाउच, कैलकुलेटर, पेन, स्केल, राइटिंग पैड, पेन ड्राइव, इरेज़र, कैलकुलेटर, लॉग टेबल, इलेक्ट्रॉनिक पेन/स्कैनर, आदि)
कोई भी संचार उपकरण जैसे मोबाइल फोन, ब्लूटूथ, इयरफ़ोन, माइक्रोफोन, पेजर, हेल्थ बैंड आदि।
अन्य वस्तुएं जैसे वॉलेट, चश्मा, हैंडबैग, बेल्ट, टोपी आदि
कोई भी घड़ी/कलाई घड़ी, कंगन, कैमरा, आदि
कोई भी आभूषण/धातु की वस्तुएँ।
कोई भी खाद्य पदार्थ जो खुला या पैक किया हुआ हो, खाद्य पदार्थ, पानी की बोतल आदि
कोई भी अन्य वस्तु जिसका अनुचित तरीके से उपयोग किया जा सकता हो, जैसे माइक्रोचिप, कैमरा, ब्लूटूथ डिवाइस आदि जैसे संचार उपकरण छिपाकर
ड्रेस कोड परीक्षार्थियों द्वारा नीट 2025 में शामिल होने के दौरान निम्नलिखित ड्रेस कोड का पालन किया जाना है-
भारी कपड़े और/ या लंबी आस्तीन की अनुमति नहीं है।
कम एड़ी वाले चप्पल, सैंडल की अनुमति है। जूते की अनुमति नहीं है।
अपरिहार्य (चिकित्सा आदि) परिस्थितियों के कारण किसी भी विचलन की आवश्यकता होने पर, एडमिट कार्ड जारी करने से पहले हज्ज़ की विशेष स्वीकृति लेनी होगी।
किसी भी परीक्षार्थी को अपराह्न 1.30 बजे के बाद परीक्षा केंद्र में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी
परीक्षार्थियों को परीक्षा के दिन परीक्षा केंद्र पर केवल निम्नलिखित दस्तावेज ही लाने होंगे। जो परीक्षार्थी ये दस्तावेज नहीं लाएंगे, उन्हें परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी
NTA के वेबसाइट से डाउनलोड किया हुआ एडमिट कार्ड की प्रिंटेड कॉपी, पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ के साथ (आवेदन पत्र पर अपलोड की गई फोटो के समान)
प्रवेश पत्र के साथ डाउनलोड किए गए प्रोफार्मा पर सफेद पृष्ठभूमि के साथ एक पोस्टकार्ड साइज(4×6) रंगीन फोटोग्राफ चिपकाया जाना चाहिए
अधिकृत फोटो आईडी में से कोई एक (मूल और वैध होना चाहिए और जैसे पैन कार्ड/ ड्राइविंग लाइसेंस/ वोटर आईडी/ पासपोर्ट/ आधार कार्ड/ राशन कार्ड/ फोटोग्राफ के साथ कक्षा 12 का एडमिट कार्ड/ सरकार द्वारा जारी कोई अन्य वैध फोटो आईडी)।
यदि पीडब्ल्यूबीडी श्रेणी के तहत छूट का दावा किया जाता है तो सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी लिखने के लिए शारीरिक सीमा का प्रमाण पत्र और या पीडब्ल्यूबीडी प्रमाण पत्र।
जिला प्रशासन, पाकुड़ द्वारा परीक्षार्थियों के लिए जारी।

घर खाली करने को लेकर महिला के साथ मारपीट, घायल

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam
साहिबगंज। जिरवाबाडी थाना क्षेत्र में महिला को घर से निकलने को लेकर महिला के साथ मारपीट कर घायल कर देने का मामला प्रकाश में आया बताया जा रहा है कि जिरवाबाडी थाना क्षेत्र गोड़ा वाली हॉट निवासी स्वर्गीय संजय ठाकुर की पत्नी 45 वर्षीय सविता देवी व झरना कॉलोनी निवासी राजरूप शर्मा की 50 वर्षीय पत्नी सुशीला देवी के साथ मारपीट की घटना घटी इस घटना में दोनों महिला घायल हो गए

दोनों घायल महिला को इलाज के लिए शुक्रवार को सदर अस्पताल लाया गया चिकित्सक ने दोनों महिला का इलाज प्रारंभ किया. महिला का आरोप है कि हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ अजय कुमार मुझे घर से जबरदस्ती भाग रहा है. नहीं जाने पर मुझसे मारपीट किया गया. इसके बाद हमारा इज्जत लूटने का प्रयास किया गया किसी तरह से अपनी जान बचाकर अस्पताल इलाज के लिए पहुंचे आगे घायल महिला ने बताई की डॉ अजय कुमार का कहना है कि यह मेरा घर है या घर हमारे बेटी का नाम से है यहां से जाइए मैंने कहा बेटी आ जाएगी तो हम चले जाएंगे नहीं जाने पर हमारे कपड़े भी फाड़ दिए इस घटना में हमारी दाएं सुशीला देवी भी घायल हो गई महिला का यह भी आरोप है कि हमारी बेटी के साथ डॉक्टर अजय कुमार शादी किया था यह लगाकर तीसरा शादी डॉक्टर अजय कुमार ने कर लिया जिसको लेकर बेटी ने केस किया था. बेटी ही हमें यहां पहुंच कर गई थी कि माँ आप यहां रहो जब बेटी रांची चली गई तो डॉक्टर अजय कुमार पहली पत्नी को लाकर यहां रख लिया. और हमारी बेटी रांची में रहती है. जब बेटी को बुलाने की बात कहता हूं तो डॉक्टर अजय कुमार हमेशा मारपीट करता है. और शुक्रवार की रात भी मारपीट कर घायल कर दिया बरहाल घायल महिला का इलाज सदर अस्पताल में किया गया इस संबंध में डॉ अजय कुमार से संपर्क करने की कोशिश की गई किसी कारणवश संपर्क नहीं हो पाई.

संक्षिप्त समाचार

डाली गांव के शाही मोड में ट्रैक्टर पलटने से चालक की मौत, एक मजदूर घायल, मौके पर पहुंची पुलिस

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

पलामू। जिले के छतरपुर थाना क्षेत्र के डाली पंचायत अंतर्गत शाही रोड में शनिवार सुबह 7:30 बजे अनियंत्रित होकर ट्रैक्टर पलटने से चालक की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि एक मजदूर को इस दुर्घटना में हल्का चोट आया है। ट्रैक्टर डाली से पाटन जाने के क्रम में दुर्घटनाग्रस्त हुई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ट्रैक्टर पाटन थाना क्षेत्र जयनाथ पांडे का बताया गया है। वही ट्रैक्टर से दबे मृतक चालक के शव को बड़ी मशक्कत के बाद ग्रामीणों की मदद से बाहर निकाल लिया गया है। खबर लिखे जाने तक मृतक चालक की पहचान नहीं किया जा सका है। घटना के संबंध में ग्रामीणों ने बताया कि ट्रैक्टर तेज गति से शाही रोड के ढलान में अनियंत्रित होने से दुर्घटनाग्रस्त हुई है। घटना की सूचना मिलने के बाद छतरपुर थाना पुलिस तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर ट्रैक्टर को कब्जे में ले लिया है, साथ ही मृतक चालक के परिजनों को घटनास्थल पर आने का सूचना दे दिया गया है। और मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है।

गर्मी में पेयजल संकट न हो, उपायुक्त ने की समीक्षा बैठक

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह उपायुक्त नमन प्रियेश लकड़ा ने समाहरणालय सभागार में गर्मी के मौसम में निर्बाध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु संबंधित अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में पेयजल आपूर्ति विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की समीक्षा करते हुए पानी की कमी, खराब चापाकल और जलमीनारों की स्थिति जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई।उपायुक्त ने जल संरक्षण, भूजल प्रबंधन और वैकल्पिक स्त्रोतों के उपयोग पर बल दिया। उन्होंने निर्देश दिया कि आंगनबाड़ी केंद्रों में खराब चापाकलों की मरम्मती और नए चापाकलों की स्थापना शीघ्र कराई जाए। साथ ही शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल समस्याओं के त्वरित समाधान को प्राथमिकता देने को कहा।

गिरिडीह में शुरू हुई जिला स्तरीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह जिला एथलेटिक्स एसोसिएशन के तत्वावधान में शनिवार को गिरिडीह स्टेडियम में दो दिवसीय 22वीं वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का भव्य आगाज हुआ। उद्घाटन मुख्य अतिथि एसी विजय सिंह बिरुआ सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा ध्वजारोहण कर किया गया। प्रतियोगिता में जिले के 15 स्कूलों और क्लबों से लगभग 700 खिलाड़ियों ने भाग लिया, जहां पहले दिन दौड़, लॉन्ग जंप, हाई जंप, शॉटपुट सहित विभिन्न खेलों में प्रतिभागियों ने शानदार प्रदर्शन किया। अंडर-12 से अंडर-20 तक बालक एवं बालिका वर्ग में आयोजित इस प्रतियोगिता के विजेताओं को मेडल और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता का समापन रविवार को होगा।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त नमन प्रियेश लकड़ा ने ईवीएम वीवीपैट वेयरहाउस का मासिक निरीक्षण

गिरिडीह, प्रतिनिधि। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त नमन प्रियेश लकड़ा के द्वारा प्रखंड कार्यालय गिरिडीह स्थित ईवीएम वीवीपैट वेयरहाउस का मासिक निरीक्षण किया गया। उन्होंने ईवीएम वेयर हाउस की विधि व्यवस्था से संबंधित आवश्यक पहलुओं की जांच की। ईवीएम वेयर हाउस की सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी ली। उपायुक्त ने सीसीटीवी व अन्य उपकरणों की स्थिति और रखरखाव का जायजा लिया। सीसीटीवी कंट्रोल रूम का भी निरीक्षण किया। इसके अलावा मासिक निरीक्षण दौरान जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा परिसर का अवलोकन के क्रम में सुरक्षा व्यवस्था, विद्युत व्यवस्था, बीयू हॉल, सीसीटीवी कंट्रोल रूम, जनरेटर रूम, तैनात सुरक्षा बलों के लॉग बुक, अग्निशमन यंत्र आदि सहित अन्य व्यवस्थाओं तथा कमरों के सीलिंग आदि का जायजा लिया गया। निरीक्षण के क्रम में तैनात सशस्त्र सुरक्षा बलों को अपने कार्य एवं दायित्वों के प्रति सचेत व सक्रिय रहने के निर्देश दिए। मौके पर उप निर्वाचन पदाधिकारी, सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

बेंगाबाद में अतिक्रमण के नाम पर पर्याप्त मौका दिए बिना गरीब फुटपाथी दुकानदारों को उजाड़ना गलतः राजेश यादव

- **गरीबों के रोजगार की वैकल्पिक व्यवस्था करे प्रशासन, गरीबों को मिले मुआवजा**
- **उच्चाधिकारियों तथा सरकार को जन प्रतिवेदन देकर करेंगे शिकायत**

गिरिडीह, प्रतिनिधि। ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक की एक टीम ने बेंगाबाद बाजार का दौरा कर वहां कल से चल रही अतिक्रमण के नाम प्रशासनिक कार्रवाई में कई गरीब फुटपाथी दुकानदारों को बिना पर्याप्त मौका दिए उजाड़कर उनकी जीविका को नष्ट करने, कथित रूप से कई दुकानदारों पर बिना नोटिस कार्रवाई करने, एकाध के ऊपर नोटिस पर अमल के बावजूद कार्रवाई कर देने तो एक की रैयती जमीन पर भी अतिक्रमण के नाम पर बुलडोजर चलाने की कार्रवाई करने जैसे कई मामलों का संज्ञान लिया। टीम की अगुवाई कर रहे बेंगाबाद के पूर्व जिप सदस्य सह फॉरवर्ड ब्लॉक नेता राजेश यादव ने कहा कि, अतिक्रमण हटना चाहिए लेकिन प्रशासन को मानवीय संवेदनाओं का भी पालन करते हुए पूरी एक प्रक्रिया के तहत। सिर्फ दिखाने के लिए प्रक्रिया कर इस तरह से गरीबों के रोजगार को उजाड़ना ठीक नहीं है। कहा कि, कई गरीब ऐसे हैं जिनके लिए सड़क पर रोजगार करना मजबूरी है। प्रशासन ने उन्हें हटाने से पहले कितना समय दिया या फिर उनके लिए वैकल्पिक रोजगार की व्यवस्था क्यों नहीं की। श्री यादव ने कहा कि, कई लोग बता रहे हैं कि उन्हें कोई नोटिस ही नहीं मिली और अचानक से माइक से अनाउंसमेंट कर यह कार्रवाई की गई है। अंचल कार्यालय द्वारा एक व्यक्ति को दी गई नोटिस में 1 फीट एस्बेस्टस हटाने को कहा गया, जिसे उसने बीती रात हटा भी दिया था। लेकिन नोटिस में ही त्रुटि बताकर उसपर भी कार्रवाई कर दी गई। एक रैयती जमीन पर भी कार्रवाई का आरोप लगाया गया है। इस तरह के मामलों से स्थानीय लोगों में काफी आक्रोश है। श्री यादव ने प्रशासन से जिन गरीबों का रोजगार अचानक से छिन गया है, उनके लिए मुआवजा व रोजगार के लिए वैकल्पिक स्थान उपलब्ध कराने की मांग की। बिना नोटिस या रैयती जमीन पर निर्माण अगर तोड़ा गया है, तो उन्हें भी मुआवजा मिलना चाहिए। इस पर उच्चाधिकारियों से निष्पक्ष जांच और उचित कार्रवाई की मांग करते हुए कहा कि, ऑल इंडिया फॉरवर्ड ब्लॉक एक जन प्रतिवेदन तैयार कर उच्च अधिकारियों को देगी। इस अवसर पर पार्टी नेता राजेंद्र मंडल, शिवनंदन यादव, शंभू तुरी सहित स्थानीय प्रवीण राम, छोटू राम, रंजीत राम, सुजीत कुमार बरबिगहिया, अरुण गुप्ता, सुजीत कुमार, सुमन कुमार, लक्ष्मी राम, सुमन गुप्ता, उज्ज्वल राम, वकील राम, राहुल गुप्ता, भुनेश्वर मंडल सहित अन्य थे।

डिज्नीलैंड मीना बाजार का हुआ शुभारंभ, अमरनाथ गुफा, वैष्णो देवी का लोग करेंगे दर्शन

मेला में शांति का प्रतीक दें ग्रामीणः योगेंद्र साव

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता

बड़कागांव। हजारीबाग रोड स्थित शांति सेवा सदन के समीप डिज्नीलैंड मीना बाजार का शुभारंभ किया गया। मेला का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि पूर्व कृषि मंत्री योगेंद्र साव , विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक लोकनाथ महतो के हाथों फीता काटकर किया गया। डिज्नीलैंड मीना बाजार मेला में चार धाम यात्रा माता वैष्णो देवी, अमरनाथ गुफा का दिव्य दर्शन लोग करगें। साथ ही टावर झूला, टोरा-टोरा, फ्रेज्जबील झूला, ब्रेक डांस झूला, नौका मारुति सर्कस, ड्रैगन बच्चों के मनोरंजन के लिए छोटे झूले, मीना बाजार में हरेक तरह की आधुनिक सामान की दुकानें लोगों को अपनी ओर काफी आकर्षित करेगी, मेले के आयोजक पंचम कुमार, मुखिया संघ अध्यक्ष रंजीत कुमार, मुखिया विमला देवी, हाजी तबस्सुम, विशेश्वर नाथ चौबे, मुखिया तकरीरमुलाह, खान जीप प्रतिनिधि मोहम्मद इब्राहिम रवि राम, गौतम कुशवाहा, कोलेश्वर साव, शांति सेवा सदन के प्रोपराइटर सुरेंद्र सोनी, गौतम कुशवाहा, सत्येंद्र गुप्ता, मजहर हुसैन, पंचम कुमार दिलीप के अलावा दर्जनों उपस्थित थे।

जमुआ प्रमुख प्रतिनिधि को पितृ शोक

- **अंतिम दर्शन को उमड़े लोग**

जमुआ, प्रतिनिधि। जमुआ प्रमुख मिष्टू देवी के ससुर एवं प्रमुख प्रतिनिधि संजीत यादव के पिता बासुदेव यादव का निधन शनिवार सुबह ह्रदय गति रुक जाने से हो गया।वे65वर्ष के एक सज्जन व्यक्ति थे। वे अपने पीछे चार पुत्र एवं एक भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन की खबर सुनते ही लोग प्रमुख आवास जमुआ प्रखंड के पेटहंडी पहुंचे। अंतिम दर्शन के लिए लोगों का तांता लग गया। जमुआ के पूर्व विधायक केदार हज़रा, धनवार के पूर्व विधायक राजकुमार यादव,जेएमएम नेता प्रणव वर्मा, भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता विजय चौरसिया,भाकपा माले के जिला सचिव अशोक पासवान,कांग्रेस के प्रखंड अध्यक्ष निजामुद्दीन अंसारी बीस सूत्री के अध्यक्ष मो जुनैद, सदस्य सच्चिदानंद सिंह, कांग्रेस नेता अनिल चौधरी, भाजपा नेता अंजन सिन्हा, वरिष्ठ पत्रकार सुधीर सिन्हा, मुखिया संघ के अध्यक्ष प्रदीप सिंह, जेकेएकएम की महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष सुनीता सिंह, पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता सुधीर द्विवेदी, परमेश्वर यादव, मघाकला के मुखिया अबुजर नोमानी, नवडीहा के पूर्व मुखिया ओमप्रकाश महतो, खरगडीहा के पूर्व मुखिया चीना खान सहित विभिन्न पंचायतों के मुखिया और पंसस पहुंचे। बाजे गाजे के साथ निकली उनकी शव यात्रा पारंपरिक रीति रिवाज के साथ स्थानीय श्मशान घाट पर उनकी अंत्येष्टि की गई। शव यात्रा में पूरा जमुआ उमड़ पड़ा। प्रमुख प्रतिनिधि संजीत यादव ने वैदिक रीति रिवाजों और मंत्रोच्चारों के बीच अपने पिता को मुखाग्नि दी।

चुरचू प्रखंड अंतर्गत कांग्रेस कमेटी के संगठन सृजन 2025 का महत्वपूर्ण बैठक संपन्न

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। शनिवार को, झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के निर्देशानुसार झारखंड प्रदेश में चलाए जा रहे, संगठन सृजन 2025 के तहत चुरचू प्रखंड कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन कांग्रेस कार्यालय चरही में कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष नौशाद आलम की अध्यक्षता में किया गया, इस बैठक में मुख्य रूप से चुरचू प्रखंड के पर्यवेक्षक निसार खान उपस्थित हुए, बताते चले कि इस बैठक में मूल रूप से संगठन विस्तार को लेकर चर्चा की गई, और लोगों से आग्रह किया गया कि जो भी व्यक्ति कांग्रेस पार्टी से जुड़े हुए हैं, वह अपना दायित्व को भली भांति निभाने का काम करें, इस दौरान 6/5/ 2025 दिन मंगलवार को पुराना विधानसभा के समीप, कांग्रेस पार्टी द्वारा संविधान बचाओ रैली में हजारों की संख्या में लोगों की उपस्थित होने की बात कही, मौके पर प्रखंड अध्यक्ष नौशाद आलम, चूरचू प्रखंड अध्यक्ष सह बहेरा पंचायत मुखिया देवकी महतो, कांग्रेस पार्टी प्रखंड उपाध्यक्ष चैलेश्वर महतो, पूर्व विधायक प्रतिनिधि आरीफ अंसारी, चरही पंचायत अध्यक्ष मुस्लिम अंसारी, रजाक आलम, सुखराम टुडू, मोहम्मद आजाद, विनोद कुमार केसरी, मोहम्मद निजाम अंसारी, एमडी नसीम, मोहम्मद इम्तियाज, महबूब अंसारी, नासिर अंसारी सहित कई कांग्रेसी कार्यकर्ता मौके पर मौजूद थे।

भगवान श्री चित्रगुप्त प्रकटोत्सव आज, छठ तालाब, श्री चित्रगुप्त मंदिर के प्रांगण में

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। बैसाख शुक्ल सप्तमी, दिन रविवार को हजारीबाग, छठ तालाब, श्री चित्रगुप्त मंदिर के प्रांगण में भगवान श्री चित्रगुप्त जी का प्रकटोत्सव मनाया जा रहा हैं। पूजा प्रभारी बप्पी करण ने जानकारी देते हुए बताया कि इस बार प्रकट उत्सव को विशेष रूप से भव्य स्वरूप में मनाया जा रहा हैं। आयोजन में आकर्षक पूजा, हवन, प्रसाद वितरण, महा विशाल भंडारा, संध्या आरती, प्रसाद, व खीर वितरण, तथा रंग-बिरंगी आतिशबाजी का भी होना है।

भगवान चित्रगुप्त की पूजा विधिवत वैदिक मंत्रोच्चार और पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ की जा रही हैं। इसके उपरांत सभी श्रद्धालुओं के लिए भंडारे का आयोजन किया जा रहा है , जिसमें सैकड़ों लोगों के भोजन की व्यवस्था की गई है। आतिशबाजी का आयोजन रात्रि में किया है, जो इस उत्सव में चार चाँद लगाएगा। इस पूजा में समाज के कई गणमान्य लोग एवं आयोजन समिति के सदस्य उपस्थित रहेंगे।

समिति के सदस्यों ने यह भी बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य न केवल धार्मिक आस्था को सुदृढ़ करना है, बल्कि समाज में एकता, सहयोग और सांस्कृतिक जागरूकता को भी बढ़ावा देना है। भगवान श्री चित्रगुप्त, जिन्हें धर्मराज भी कहा जाता है, लेखा-जोखा के देवता माने जाते हैं। उनके प्रकट उत्सव के अवसर पर श्रद्धालु विशेष श्रद्धा से पूजा-अर्चना करते हैं और समाज में सत्य, धर्म और न्याय के मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं। पूजा प्रभारी बप्पी करण ने अंत में सभी श्रद्धालुओं और समाज के सभी वर्ग के लोगों से अनुरोध किया कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस भव्य आयोजन में सम्मिलित होकर पुण्य लाभ अर्जित करें और इस सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में सहयोग दें।

भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाए सरकारः खतियानी परिवार

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। खतियानी परिवार की साप्ताहिक बैठक शनिवार को पुराना धरना स्थल के नजदीक अशोक राम की अध्यक्षता में आयोजित की गई जिसमें कई मुद्दों पर चर्चा हुई। सरकार किसी को उसे जन सेवा के प्रति तत्पर रहना चाहिए वर्तमान समय में झारखंड की जो सरकार है किसी भी भ्रष्टाचार पर नियंत्रण नहीं रख पा रही है इसमें देश की राजनीति करने वाली कांग्रेस पार्टी भी शामिल है, हम खतियानी परिवार के इस सरकार से उम्मीद लगाए बैठे हैं, लेकिन सरकारी कार्यालय में भ्रष्टाचार का जो आलम है, वह कष्ट देने वाली है जो सरकार इसको लपकने के लिए जिभ लंबी करके लालच की दृष्टि से देख रहे हैं जनता की सेवा के लिए कोटि-कोटि कसमे खा रहे हैं लेकिन झारखंड के लोग उस सरकार को भी देख चुके हैं वो पूंजी पतियों के लिए लैंड बैंक बनाने में व्यस्त रही जनता की यास उससे भी नहीं रही झारखंड के खतियानी लोग भ्रष्टाचार के विभिन्न कार्यालय से दुखित जनता इस सरकार को अजय ताकत प्राप्त करने वाली सरकार स्थापित है, हम खतियानी परिवार के इसकी शुभकामनाएं भी करते हैं लेकिन भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने की पुरजोर वकालत भी करते हैं,

बैठक में उपस्थित सदस्य गण मोःहकीम, प्रदीप कुमार मेहता, अजय मिश्रा, अमर कुमार गुप्ता, महेश विश्वकर्मा, बोधी साँव,गोविंद यादव, सोनू दास, बिरजू दास, सुरंजन कुमार, मोहम्मद मोबीन, वो अन्य उपस्थित थे।

गिरिडीह जिले में कुल 03 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं, सभी परीक्षा केंद्र गिरिडीह जिला मुख्यालय में है, जहां अपराह्न 02 से 05 बजे तक परीक्षा संचालित होगी

- **जिले में कुल 1309 परीक्षार्थी शामिल होंगे, परीक्षा के आयोजन को लेकर जिला प्रशासन की ओर से व्यापक तैयारी की गई है**
- **राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी, एन टी ए नई दिल्ली की टीम द्वारा परीक्षार्थियों की फ्रिस्किंग, रजिस्ट्रेशन, बायोमेट्रिक उपस्थिति बनाने की व्यवस्था**
- **सभी परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी, जैमर तथा बायोमेट्रिक उपस्थिति यंत्र का अधिष्ठापन**
- **परीक्षा केंद्रों पर पेयजल एवं दिव्यांग परीक्षार्थियों के लिए व्हीलचेयर की व्यवस्था**
- **एम्बुलेंस के साथ मेडिकल टीम रहेगी सक्रिय**

गिरिडीह, प्रतिनिधि। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी एनटीए, नई दिल्ली के द्वारा दिनांक 04.05.25 को निर्धारित नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट नीट यूजी 2025 परीक्षा की तैयारियों और व्यवस्थाओं से मीडिया बंधुओं को अवगत कराने के उद्देश्य से समाहरणालय सभागार में उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी नमन प्रियेश लकड़ा की अध्यक्षता में प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस दौरान जिला उपायुक्त ने बताया कि नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट नीट यूजी 2025 परीक्षा के लिए गिरिडीह जिले में कुल 03 परीक्षा केंद्र बनाए गए हैं। सभी परीक्षा केंद्र गिरिडीह जिला मुख्यालय में है, जहां अपराह्न 02 से 05 बजे तक परीक्षा संचालित होगी। 1. डिस्ट्रिक्ट सीएम एस.ओ.ई पचंबा, गिरिडीह, 2. सर जे.सी बोस सीएम एस.ओ.ई गर्ल्स, गिरिडीह तथा 3. गिरिडीह प्लस टू उच्च विद्यालय, गिरिडीह है। जिले में कुल 1309 परीक्षार्थी शामिल होंगे। परीक्षा के आयोजन को लेकर जिला प्रशासन की ओर से व्यापक तैयारी की गई है। कदाचार मुक्त, सुगमतापूर्वक एवं निष्पक्ष परीक्षा संचालन को लेकर जिला स्तर पर एवं राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी, एन टी ए नई दिल्ली की टीम द्वारा परीक्षार्थियों की फ्रिस्किंग, रजिस्ट्रेशन, बायोमेट्रिक उपस्थिति बनाने की व्यवस्था की गई है। उपायुक्त ने बताया कि परीक्षा के सफल आयोजन को लेकर केंद्र अधीक्षक/पर्यवेक्षक, दंडाधिकारी के साथ-साथ पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बलों की प्रतिनिधि कर दी गई है। वहीं सभी परीक्षा केंद्रों के केंद्राधीक्षक कक्ष एवं सभी कमरों में सीसीटीवी, जैमर तथा बायोमेट्रिक उपस्थिति यंत्र का अधिष्ठापन कराया गया है। इसके अलावा उन्होंने बताया कि परीक्षा के सफल संचालन हेतु कुल 7 स्टैटिक मजिस्ट्रेट, 03 पेट्रोलिंग मजिस्ट्रेट, 03 वरीय पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है। साथ ही जिला स्तर पर 01 नोडल ऑफिसर तथा 01 सहायक नोडल ऑफिसर नामित किए गए हैं। इसके अलावा उपायुक्त ने कहा कि शांतिपूर्ण, नकल विहीन, पारदर्शिता से परीक्षा को लेकर सुरक्षा के सभी इंतजाम को दुरुस्त रखने का निर्देश दिया गया है।साथ ही परीक्षा केंद्रों पर मूलभूत सुविधाओं की स्थिति के साथ अभ्यर्थियों के बॉयोमेट्रिक उपस्थिति, पेयजल, सीसीटीवी व बिजली व्यवस्था दुरुस्त रखने का निर्देश दिया।

अभ्यर्थियों की जांच के बाद प्रवेश

उपायुक्त ने स्टैटिक दंडाधिकारी/पुलिस पदाधिकारियों को जांच टीम द्वारा अभ्यर्थियों की जांच कराकर ही प्रवेश दिलाने की बात कहीं। उन्होंने कहा कि महिला अभ्यर्थियों की जांच महिला टीम एवं पुरूष अभ्यर्थियों की जांच पुरूष टीम द्वारा कराएं, ताकि अभ्यर्थी परीक्षा केन्द्र में किसी प्रकार की कोई अवांछित वस्तु, चिट-पुर्जा आदि परीक्षा केन्द्र के अंदर नहीं ले जा सकें।

गैर व्यक्तियों का प्रवेश नहीं

उन्होंने परीक्षा केन्द्र के अन्दर केवल परीक्षा संचालन से संबंधित पदाधिकारी एवं वीक्षक तथा कर्मी ही प्रवेश करें। कोई भी गैर व्यक्तियों को परीक्षा केन्द्र के अंदर प्रवेश नहीं करने देने का निदेश दिया है।

एम्बुलेंस के साथ मेडिकल टीम रहेगी सक्रिय

नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट नीट यूजी 2025 परीक्षा हेतु निर्धारित केंद्रों पर विद्युत/जेनरेटर, पेयजल, शौचालय, साफ सफाई, पर्याप्त बेंच/डेस्क एवं अन्य मूलभूत सुविधा, एम्बुलेंस, अग्निशमन, मेडिकल आदि की उपलब्धता रहेगी। विभागीय निर्देशानुसार किसी भी मीडिया को निर्धारित परीक्षा केंद्र में परीक्षा की तिथि को प्रवेश वर्जित रहेगा।

कदाचारमुक्त परीक्षा के लिए सख्त सुरक्षा इंतजाम

परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की गड़बड़ी से बचने के लिए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। इसको लेकर प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया जाएगा। प्रत्येक केंद्र पर एक मजिस्ट्रेट की तैनाती भी की जाएगी। साथ ही अफवाह फैलाने वालों पर भी नजर रखी जाएगी, ताकि ऐसे लोगों पर तत्काल कार्रवाई की जा सकें। समाहरणालय सभागार में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में पुलिस अधीक्षक डॉ बिमल कुमार, भूमि सुधार उप समाहर्ता, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी समेत सभी प्रिंट व इलेट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधि शामिल थे।

संक्षिप्त समाचार

पूर्व जिला परिषद सदस्य की माता के श्राद्ध क्रम में पहुंचे विधायक ने दिवंगत के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

बांका फुल्लीडुमर से कामेश्वर साह की रिपोर्ट
शुक्रवार को बेलहर विधायक मनोज यादव दर्जनों समर्थकों के साथ फुल्लीडुमर प्रखंड के नाढ़ातरी गांव शाम के लगभग 7:00 बजे पहुंचे। पूर्व जिला परिषद सदस्य नरेश यादव की माता गिरिजा देवी के श्राद्ध क्रम में पहुंचे विधायक ने दिवंगत आत्मा के तैल चित्र पर पुष्प अर्पित कर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। वही मौके पर उपस्थित ग्रामीणों से विधायक श्री यादव मुलाकात कर क्षेत्र की समस्याओं से अवगत हुए, एवं हर संभव समस्या के समाधान का भरोसा ग्रामीणों को दी। श्राद्ध क्रम के अवसर पर पहुंचे विधायक के साथ मुख्य रूप से प्रखंड मुखिया संघ के अध्यक्ष चंदन कुमार, समाजसेवी अशोक यादव, रामानंद यादव, पूर्व पंचायत समिति सदस्य अनंत कुमार, शिक्षक दीप नारायण यादव, सोनू कुमार, कुणाल भगत, राहुल सहित दर्जनों कार्यकर्ता गण मौजूद थे।

हवन पूजन के साथ दो दिवसीय अखंड रामधुन संकीर्तन का धूमधाम से हुआ समापन

बांका फुल्लीडुमर से कामेश्वर साह की रिपोर्ट
फुल्लीडुमर प्रखंड के राता पंचायत अंतर्गत धनकुड़िया गांव में आयोजित दो दिवसीय अखंड रामधुन संकीर्तन का शनिवार की शाम धूमधाम से समापन हो गया। जानकारी के अनुसार आयोजित अखंड रामधुन संकीर्तन के अवसर पर समिति के सदस्यों के सहयोग से भव्य भंडारे का भी आयोजन किया गया था। वही इस धार्मिक कार्यक्रम का समापन विद्वान पंडितों के वैदिक मंत्रोच्चारण एवं हवन पूजन के साथ धूमधाम से समापन हो गया। वहीं इस कार्यक्रम के सफल संचालन को लेकर अखंड रामधुन संकीर्तन के आयोजन कर्ता धर्मेंद्र पंडित के नेतृत्व में सहयोग कर्ता शैलेश पंडित, महेश पंडित, कैलाश पंडित, प्रमोद पंडित, कुणाल कुमार सहित अन्य के द्वारा सक्रिय सहयोग किया गया।

रिम्स निदेशक डॉ. राजकुमार का है विवादों से पुराना नाता

संवाददाता द्वारा
रांची। रिम्स के निदेशक डॉ. राजकुमार का विवादों से गहरा और पुराना रिश्ता रहा है। उनकी कार्यशैली पर हमेशा सवाल उठते रहे हैं।रिम्स में हालिया विवाद से पहले एम्स ऋषिकेश और उत्तर प्रदेश के सैफई मेडिकल यूनिवर्सिटी तक में अपनी नियुक्ति के दौरान वे विवादों में रहे हैं।वर्ष 2012 में एम्स ऋषिकेश के पहले निदेशक के रूप में नियुक्त डॉ. राजकुमार ने 2016 में केंद्र सरकार को पत्र लिखकर इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने आरोप लगाया था कि संस्थान और उनके पद को केंद्र सरकार द्वारा अपेक्षित महत्व नहीं दिया जा रहा। उनका इस्तीफा तत्काल प्रभाव से स्वीकार कर लिया गया था। इस दौरान उनपर एक सफाईकर्मी को थप्पड़ मारने का भी आरोप लगा। इससे कर्मचारियों में रोष फैल गया और हड़ताल की स्थिति उत्पन्न हो गई। वर्ष 2018 से 2021 तक सैफई मेडिकल यूनिवर्सिटी के कुलपति रहे डॉ. राजकुमार का कार्यकाल वहां भी असामान्य रहा। कोरोना महामारी के दौरान संस्थान में अव्यवस्थाएं सामने आई। प्रशासनिक अनियमितताओं, ठेकेदारों से टकराव और व्यक्तिगत सुरक्षा को लेकर दिए गए बयानों के कारण शासन तक शिकायतें पहुंचीं। कार्यकाल समाप्त होने से पूर्व ही उन्हें अवकाश पर भेज दिया गया और अंततः कार्यमुक्त कर दिया गया। मंत्री और अपर मुख्य सचिव से उलझे-रिम्स के निदेशक के रूप में डॉ. राजकुमार का कार्यकाल भी विवादों से भरा है। 17 अप्रैल को स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने उन्हें असंतोषजनक कार्य और निर्देशों की अवहेलना के आरोप में पद से हटा दिया। रिम्स शासी परिषद की 15 अप्रैल की बैठक में उनके और स्वास्थ्य मंत्री और अपर मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह के बीच तीखी बहस हुई थी। डॉ. राजकुमार ने इस्तीफे की धमकी दी थी। सरकार ने उन्हें हटाने का फैसला लिया। इस प्रस्ताव पर मुख्यमंत्री का भी अनुमोदन प्राप्त था। झारखंड हाई कोर्ट ने 28 अप्रैल को इस आदेश पर रोक लगा दिया। इसके बाद डॉ. राजकुमार ने दोबारा निदेशक पद संभाला और शासी परिषद के कुछ निर्णयों, जैसे एमआरआई मशीन खरीद को पलट दिया। पुत्र की नियुक्ति और स्टाइपेंड विवाद :डॉ. राजकुमार पर अपने बेटे ऋषभ कुमार को रिम्स के मास्टर इन हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन कोर्स में अनियमित तरीके से नामांकन कराने और 30,000 रुपये मासिक स्टाइपेंड देने का आरोप है।

महाराष्ट्र, तमिलनाडु और राजस्थान के बीच सीधी रेल सेवा शुरू

संवाददाता द्वारा
नई दिल्ली: केंद्रीय रेल तथा सूचना एवं प्रसारण, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने शनिवार को पुणे (हडपसर) - जोधपुर एक्सप्रेस और एमजीआर चेन्नई सेंट्रल - जोधपुर (भगत की कोठी) एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इन ट्रेन सेवाओं के शुरू होने से अब महाराष्ट्र, तमिलनाडु और राजस्थान के बीच सीधी रेल यात्रा की सुविधा उपलब्ध हो गई है। इन ट्रेनों के शुरू होने से तीनों ही राज्यों में व्यापार और वाणिज्य के साथ-साथ पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा इन क्षेत्रों के बीच व्यापार और व्यवसायिक संपर्क को बढ़ावा मिलेगा। लंबी दूरी के यात्रियों के समय में बचत होगी। इन ट्रेनों का संचालन शुरू होने से तीनों राज्यों के बीच सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा मिलेगा और क्षेत्रीय एकता को बढ़ावा मिलेगा।

इस अवसर पर केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि आज राजस्थान और विशेषकर पश्चिमी राजस्थान को जोड़ने वाली दो ट्रेनों एक महाराष्ट्र से और एक तमिलनाडु से रवाना हो रही हैं। प्रदानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्षों से जो हमारी डिमांड थी, आज उसे पूरी कर दी है। केंद्रीय रेल मंत्री ने कहा कि जो काम 70 सालों में नहीं हुआ, वो इन 10 वर्षों में केद्र की सरकार ने करके दिखाया है। 1300 रेलवे स्टेशनों का पुनर्निर्माण होने के बारे में कोई सोच नहीं सकता था। ऐसा काम प्रधानमंत्री ने हाथ में लिया। दुनिया में आज ये सबसे बड़ा स्टेशन रीडेवलपमेंट का कार्यक्रम अगर कहीं पर हो रहा है, तो वो भारत में हो रहा है। 34,000 किलोमीटर नए रेलवे ट्रैक बनाए गए हैं, जिसमें डबलिंग, गेज कनवर्जन, तीसरी लाइन, चौथी लाइन शामिल है। ये 34,000 का मतलब है कि जर्मनी जैसे समृद्ध देश का जितना रेल नेटवर्क है, उतना तो केंद्र की मोदी सरकार ने इन 10 वर्षों में जोड़ दिया है। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि ये 10 वर्षों का काम तो शुरुआत है, एक ट्रेलर है। आने वाले समय में सब देखेंगे कि कैसे विकसित भारत की नींव बनती है, कैसे हमारे सपनों का भारत बनता है। उन्होंने कहा कि ये नई टेकनोलॉजी की गाड़िया आई हैं, वंदे भारत का उसका सबने आनंद लिया। उन्होंने कहा कि महराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने नागपुर से पुणे के बीच वंदे भारत ट्रेन की मांग की है। प्रधानमंत्री जल्द ही इस मांग को भी पूरी करेंगे। पुणे से नगर की सीधी डबल रेल लाइन का भी पूरा डीपीआर तयार है। बहुत जल्दी उसका काम भी शुरू होगा। उन्होंने कहा कि पुणे की कैपैसिटी को डबल करने का को उन्होंने वादा किया था वो भी पूरा होगा। क्योंकि पुणे में बहुत कंजेशन है। पुणे का एक अलग ही गौरव है। यह छत्रपति शिवाजी महाराज की पुण्य भूमि है। इस भूमि का गौरव ही कुछ और है। इसके लिए यह पूरी डीपीआर तैयार की है। मास्टर प्लान तैयार किया है, जिसमें पुणे का कंप्लीट डी कंजेशन हो, किस तरह से 6 स्टेशन को लेके पूरा डी कंजेशन हो, हडपसर, खड़की, शिवाजीनगर, अलांधी और उरुली और पुणे जंक्शन को एक मास्टर प्लान में पिरोकर योजना बनाई गई है। पुणे जंक्शन का ऐसा भव्य नवनिर्मान होगा कि आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे। यह मेरा वादा है और इसके लिए अधिकारियों को दिशानिर्देश दिए हैं। चार प्लेटफार्म नए बनेंगे, बहुत सारी नई सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। प्रवेश और निकासी की बेहतर व्यवस्था होगी। डिजिटल कंट्रोल वाला पुणे जंक्शन तैयार होगा। पुणे इलेक्ट्रॉनिक्स की नगरी है। यहां पर अब विश्वस्तरीय नया सिस्टम बनेगा। पुणे से लोनावला के बीच तीसरी और चौथी रेल लाइन का और इंदौर-मनमाड की नई रेल लाइन प्रधानमंत्री ने स्वीकृत कर दी है। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि नासिक में पवित्र महाकुम्भ होने वाला है। भारत की संस्कृति का कुम्भ, जो एक बहुत ही बड़ा पवित्र अवसर है। उसके लिए तैयारियां जोरों पर हैं। जिस तरह से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में महाकुम्भ की तैयारी हुई, वैसे ही महाराष्ट्र के नासिक में, उज्जैन में और राजमुंद्री में भी महाकुम्भ की बड़ी तैयारी चालू हो चुकी है। पिछले ही हफ्ते नासिक के कुम्भ के लिए क्या-क्या तैयारियां करनी हैं, उसका पहला रिव्यू किया है। दूसरा रिव्यू मुंबई में आके, महाराष्ट्र शासन के साथ मिलकर करेंगे। फिर नासिक में जाके पूरा मास्टर प्लान तैयार करेंगे। उन्होंने कहा कि रेलवे ने पिछले वर्ष एक नया रिकॉर्ड बनाया था फ्लाईओवर और अंडरपास बनाने का। 1200 फ्लाईओवर और अंडरपास पूरे रेलवे नेटवर्क में देश भर में बने हैं। यह सब आपका गौरव है क्योंकि आप सबने मिलकर देश में ऐसा नेतृत्व चुना जो भारत को एक नई ऊंचाइयों तक ले जा रहा है। प्रयागराज में महाकुंभ की तैयारी हुई वैसे ही नासिक में, उज्जैन में और राजमुंद्री में भी चालू हो चुकी है।

उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के साथ पुणे रेलवे स्टेशन पर केंद्रीय सहकारिता और नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोल, सांसद मेधा कुलकर्णी और विधायक सुनील कांबले की उपस्थिति रहे। इसके अलावा केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन, जोधपुर से केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन राज्य मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत, जोधपुर के सांसद राजेंद्र गहलोत और विधायक अतुल भंसाली भी इस कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए शामिल हुए।

सीसीएल और पीवीयूएनएल के बीच फ्लाई ऐश उपयोग हेतु समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

संवाददाता द्वारा
रांची। सीसीएल और पतरातू विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड (पीवीयूएनएल) के बीच आज एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए, जिसका उद्देश्य है–खनन के बाद के खाली क्षेत्रों (Mine Voids) में फ्लाई ऐश के सतत उपयोग को बढ़ावा देना। यह समझौता "Fly-ash utilization in Mine Void of Dakra OCP, NK Area, CCL from FY 2027-28 शीर्षक परियोजना के तहत किया गया है, जो पर्यावरणीय पुनर्स्थापन और अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में एक अग्रणी कदम के रूप में देखा जा रहा है।समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर सीसीएल के एनके क्षेत्र के महाप्रबंधक और पीवीयूएनएल की पतरातू सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट (STPP) के महाप्रबंधक (संचालन) द्वारा किए गए।

इस अवसर पर सीसीएल के निदेशक (तकनीकी/संचालन) श्री चंद्र शेखर तिवारी, निदेशक (परियोजना एवं योजना) श्री शंकर नागाचारी, एवं पीवीयूएनएल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री आर. के. सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सीसीएल और पीवीयूएनएल के वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

इस समझौते का उद्देश्य केवल फ्लाई ऐश निपटान नहीं, बल्कि उसे एक संसाधन के रूप में उपयोग कर खनन के बाद की भूमि को पुनः उपयोगी बनाना है। यह पहल खनन क्षेत्रों में पर्यावरणीय पुनःस्थापन, जल संरक्षण, मिट्टी की गुणवत्ता सुधार और क्षेत्रीय जैव विविधता को पुनर्जीवित करने में सहायक सिद्ध होगी।

यह समझौता ज्ञापन उन प्रयासों की कड़ी है, जिनके माध्यम से सीसीएल पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान खोजते हुए टिकाऊ विकास की दिशा में कार्य कर रही हैं। यह पहल न केवल सरकार की पर्यावरण हितैषी ऊर्जा और खनन नीति का समर्थन करती है, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए हरित विरासत का मार्ग भी प्रशस्त कर रहा है।

नेशनल यूथ फेस्टिवल में विजेता छात्रों को सम्मानित करे विश्वविद्यालय: चन्दन सिंह

- महीनों बित जाने के बाद भी विजेता छात्रों को नहीं मिला सम्मान
- कुलपति को पत्र लिख कर चंदन सिंह ने छात्रों को सम्मानित करने का आग्रह किया

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। विनोबा भावे विश्वविद्यालय के छात्रों ने एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा में आयोजित नेशनल यूथ फेस्टिवल में अपना परचम लहराया है। छात्रों के द्वारा कई प्रतिस्पर्धाओं में प्रथम और द्वितीय श्रेणी प्राप्त किया है। छात्रों ने जहाँ कोलर्ज़, इंस्टालेशन, में प्रथम फ़ॉक आर्केस्ट्रा, कल्चरल प्रोसेशन में द्वितीय, स्किट और कार्टूनिंग में तृतीय स्थान प्राप्त किया है। वहीं मिमिक्री, वेस्टर्न ग्रुप सॉग में भी चतुर्थ स्थान प्राप्त किया है। परंतु विश्वविद्यालय के द्वारा इन्हें महीनों बित जाने के बाद भी सम्मानित नहीं किया गया, जिससे छात्रों का मनोबल टूटा है। इस संबंध में झारखंड मुक्ति मोर्चा के चंदन सिंह ने कुलपति से आग्रह किया है कि विजेता छात्रों को विश्वविद्यालय के ओर से सम्मानित करने का कार्य किया जाए।

केंद्र सरकार का ऐतिहासिक फैसला स्वागत योग्य: सुरेश ठाकुर

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। केंद्र सरकार द्वारा देश में जाति आधारित जनगणना कराने के फैसले को राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा ने स्वागत किया है।मोर्चा के प्रदेश सचिव सुरेश ठाकुर ने कहा कि केंद्र के इस फैसले से देश के विभिन्न सामाजिक और आर्थिक स्थिति को समझने में मदद मिलेगी। जिसे नीतियों को प्रभावी तरीके सेलागू किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि जाति आधारित जनगणना के मांग को लेकर राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा लगातार कई वर्षो से आंदोलन करते आ रहा हैं। मोर्चा ने राज्य और केंद्र सरकार से कई बार मांग पत्र भी सौंपा है। अब जाकर के हमारा आंदोलन सफल हुआ है। इसके लिए राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा,झारखंड ने माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त किया हैं। ओबीसी समुदाय के हक और अधिकार लिए बहुत बड़ा महत्वपूर्ण फैसला है। फैसला सामाजिक न्याय और सामाजिक विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के इस निर्णय से देश के विभिन्न वर्गो के सामाजिक और आर्थिक स्थिति को समझने में मदद मिलेगा। नीतियों और सिद्धांतों को अधिक प्रभावित से लागू किया जा सकता है। साथ देश के समस्त राजनीतिक दलों के नेताओं को जिन्होंने जाति जनगणना की आवाज बुलंद किया है।

दिल्ली में हुआ इंडस्ट्री एक्सपेक्टेशन विषय पर गेस्ट लेक्चर का आयोजन

- दिल्ली में आयोजित लेक्चर में नोकिया ग्लोबल के एक्सपर्ट ने बताया - आने वाले समय में इंडस्ट्री को क्या चाहिए

नई दिल्ली, (आरएनएस)। मैनेजमेंट एजुकेशन एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट (मेरी), दिल्ली कीआईक्यूएसी टीम ने हाल ही में इंडस्ट्री एक्सपेक्टेशन विषय पर एक खास गेस्ट लेक्चर का आयोजन किया, जिसमें नोकिया ग्लोबल के हेड ऑफ रेडियो सॉफ्टवेयर प्रोडक्ट मैनेजमेंट, अमित गोयल मुख्य स्पीकर के तौर पर शामिल हुए। इस सेशन में उन्होंने छात्रों को आज की टेक और टेलीकॉम इंडस्ट्री के बदलते माहौल के बारे में बताया।अमित गोयल, जो टेलीकॉम सेक्टर में लंबे समय से काम कर रहे हैं, ने छात्रों को आने वाले दो सालों में इंडस्ट्री को किन स्किल्स की सबसे ज्यादा ज़रूरत होगी के बारे में जागरूक किया। इस दौरान उन्होंने डिजिटल नॉलेज, डेटा के आधार पर सही फैसले लेना, इनोवेशन, इंटरनेशनल लेवल पर कम्यूनिकेशन, बदलते माहौल में खुद को ढालना और रोल के हिसाब से जरूरी टेक्निकल स्किल्स की भी अहमियत समझाई। इसी के साथ 5%, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी नई टेक्नोलॉजी और मल्टी-स्किल्ड लोगों की बढ़ती डिमांड पर भी चर्चा की गई। गोयल ने यह भी कहा कि लगातार सीखते रहना, रियल-टाइम प्रैक्टिकल एक्सपीरियंस लेना और कम्युनिकेशन व प्रॉब्लम सॉल्व करने की स्किल्स आज के समय में बहुत ज़रूरी हैं। मेरीइस मौके पर MERI की डायरेक्टर प्रो. डॉ. दीप्तिशिखा कालरा, प्रो. राकेश खुराना (एडवाइज़र, मेरी) और प्रो. देवेंद्र बहादुर भी मौजूद रहे, जिन्होंने छात्रों के साथ अपने विचार साझा कर उन्हें मोटिवेट किया कि वे इंडस्ट्री की जरूरतों के हिसाब से खुद को तैयार करें।

यह सेशन मेरी की उस कोशिश का हिस्सा है, जिसके जरिए वह स्टूडेंट्स को सिर्फ पढ़ाई ही नहीं, बल्कि करियर के लिए भी पूरी तरह तैयार कर रहा है। आइक्यूएसी की ये पहल बताती है कि MERI इंडस्ट्री और एजुकेशन के बीच की दूरी को कम करने में लगातार आगे बढ़ रहा है।

44 दिवसीय बाल श्रम उन्मूलन के तहत उच्च विद्यालय कुश्चिरा, गोपीकांदर में चलाया गया जागरूकता अभियान

दुमका। जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी दुमका के आदेशानुसार आज दिनांक 03.05.2025 शनिवार को जिला बाल संरक्षण इकाई के प्रतिनिधि एवं लोक कल्याण सेवा केंद्र के संयुक्त तत्वाधान में उच्च विद्यालय कुश्चिरा, गोपीकांदर में शिक्षक एवं बच्चों के बीच 44 दिवसीय बाल श्रम उन्मूलन अभियान के तहत सभी को जागरूक किया गया। साथ ही विद्यायल के बच्चों द्वारा शपथ लिया गया कि हमसब विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करेंगे, कोई भी बच्चा बाल श्रम नहीं करेंगे। जिला बाल संरक्षण इकाई के प्रतिनिधि निक्कू कुमार साह ने कहा कि 14 वर्ष से न्यून आयु के बच्चों से बाल श्रम कराना कानूनी अपराध है। साथ ही उन्होंने श्रम नहीं शिक्षा का संदेश गर्जन के साथ बच्चों को दिया और सभी बच्चें ने प्रत्युत्तर में बाल श्रम नहीं करने की शपथ ली। उच्च विद्यालय कुश्चिरा, गोपीकांदर के प्रधानाध्यापक मथियास मुर्मू ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों से कहा कि विद्यालय में निरंतरता बनाये रखें।साथ ही उन्होंने कहा कि हमारे विद्यालय में कोई भी बच्चे बाल श्रम में संलिप्त व छिजित नहीं है। लोक कल्याण सेवा केंद्र के अनिल कुमार साह ने अपने संबोधन में कहा कि अगर कोई बच्चे बाल श्रम करते हुए पाये जाते हैं तो इसकी सूचना चाइल्ड हेल्पलाइन के निःशुल्क नम्बर 1098 में दें। साथ ही उन्होंने कहा कि बाल श्रम उन्मूलन अभियान के तहत 30 अप्रैल से 12 जून 2025 तक संपूर्ण जिले में विभिन्न ग्रामों, पंचायतों एवं विद्यालयों आदि में दीवार लेखन व पेंटिंग कर आमजनों को जागरूक किया जा रहा है।

सड़क दुर्घटना में युवक की मौत के आक्रोश में सिसरिया के क्रशर प्लांट के गोदाम, ट्रैक्टर और बाइक को फूंका, जिमसें दर्जनों माल वाहक वाहनों को क्षतिग्रस्त कर दिया

- क्रशर प्लांट के स्टोर रूम में रखे लुब्रिकेंट, टायर, लेपटॉप और कैश सहित अन्य जला
- मामला खागा थाना क्षेत्र के सिसरिया का
- लगभग 35 से 40 लाख का नुकसान

आदिवासी एक्सप्रेस/ कृष्णा गोस्वामी
देवघर ज़िला के पालोजोरी अंचल के खागा थाना अंतर्गत के सिरसिया के पास हुवे सड़क दुर्घटना में एक युवक की मौत को लेकर लोगों ने जमकर बवाल काटा। जिसमें आक्रोशित लोगों ने क्रशर प्लांट के गोदाम सहित ट्रैक्टर ,बाइक एवं अन्य दर्जनों माल वाहक वाहनों को फूंक डालने का काम किया गया है। जिसमें कई ऐसे वाहनों को क्षतिग्रस्त कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही सारठ एसडीपीओ सहित खागा थाना पुलिस, सारठ पुलिस, चितरा पुलिस एवं पालाजोरी पुलिस घटनास्थल पर सदलबल पहुंचे। जबकि लोगों का कहना है की अज्ञात वाहन की चपेट में आने से सिरसिया पहाड़ी के समीप महेशबथान गांव के एक बाइक सवार युवक की मौत हो गयी। मृतक की पहचान महेशबथान गांव के सोनाराम मरांडी के पुत्र अजय मरांडी (30) के रूप में हुई है। जबकि ग्रामीणों ने शक के आधार पर क्रशर वाहन की चपेट में आने से होने की आशंकाएं जताते हुवे। आक्रोशित ग्रामीणों सैकड़ों की तादाद में क्रशर प्लांट को घेरकर उसके स्टोर रूम में और वहां खड़े वाहनों को आग के हवाले कर दी गई। जिसकी वजह से स्टोर रूम धूं-धूं कर जलकर खाक हो गया। उधर घटना की जानकारी मिलते ही देवघर से दमकल की गाड़ियां आग बुझाने उक्त क्रशर प्लांट पहुंचे व कुछ हद तक आग पर काबू पाया जा सका। तब तक लगभग सारा समान जलकर राख हो गया था।

बता दें सड़क दुर्घटना में हुवे युवक की मौत - सूत्रों के आधार मिली जानकारी के अनुसार खागा थाना क्षेत्र के महेशबथान गांव निवासी सोनाराम मरांडी के 30 वर्षीय पुत्र अजय मरांडी मोबाइल फोन मरम्मत करवाने को लेकर खागा बाजार आया हुआ था, वहीं इसी दौरान घर वापसी के क्रम में सिरसिया पहाड़ के समीप सड़क दुर्घटना में उनकी मौत हो जाती है। जबकि वहीं मुंशी बबलू सिंह ने कहा कि पानी छिड़काव कर रहे सड़क पर ट्रैक्टर को भी आकर्षित ग्रामीणों ने आपके हवाले कर दिए साथ ही क्रशर के स्टाफ रूम स्टोर रूम में आग लगा दी गई। साथ ही वही खड़ा बाइक के अलावा दर्जनों ऐसे माल वाहक वाहनों को फूंक डाला, तकरीबन 30 से 40 लाख के आसपास की क्षति बताई जा रही है।

'फिट इंडिया सन्डे ऑन साइकिल' में शिक्षकों संग पैडल मारेंगे खेल मंत्री मनसुख मांडविया

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय खेल एवं युवा मामलों के मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया रविवार (4 मई) को राजधानी दिल्ली में आयोजित होने वाले 'फिट इंडिया सन्डे ऑन साइकिल' के विशेष संस्करण 'साइकिलिंग विथ टीचर्स' कार्यक्रम में हिस्सा लेंगे। यह आयोजन मेजर ध्यानचंद नेशनल स्टेडियम में सुबह 7 बजे से शुरू होगा। इस विशेष कार्यक्रम में देशभर से आए शिक्षक,कोच और शैक्षणिक मार्गदर्शक भाग लेंगे। इस पहल का उद्देश्य 'फाइट ओबेसिटी' यानी मोटापे से लड़ने के राष्ट्रीय अभियान को आगे बढ़ाना है, जिसमें शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित किया गया है। देशभर में दिसंबर 2024 से शुरू हुई इस साइकिलिंग मुहिम में अब तक 5000 से अधिक स्थानों पर 2 लाख से अधिक लोग शामिल हो चुके हैं। यह पहल हर आयु वर्ग के लोगों को फिट रहने और पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से की जा रही है। हाल ही में मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पाने वाले बैडमिंटन डबल्स खिलाड़ी सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी ने भी इस पहल की जमकर तारीफ की। सात्विक ने कहा, आजकल लोग मोटरसाइकिल ज्यादा चलाते हैं, साइकिल नहीं। लेकिन ये पहल शानदार है। हाल ही में मैं हैदराबाद में घर गया तो बच्चों की साइकिल चलाकर देखा,बड़ा अच्छा लगा। चिराग शेट्टी ने कहा, साइकिल चलाना न केवल फिटनेस के लिए अच्छा है बल्कि पर्यावरण के लिए भी लाभकारी है। अगर हम सप्ताह में एक-दो बार या रोज़ाना साइकिल से काम पर जाएं या टहलें, तो यह डबल फायदेमंद साबित होता है।

वर्ल्ड कप 2026 तक नेमार को रोकना चाहता है सैंटोस क्लब, अध्यक्ष ने दी जानकारी

एजेंसी

रियो डी जेनेरियो। ब्राज़ीलियन फुटबॉल क्लब सैंटोस के अध्यक्ष मार्सेलो टेक्सेइरा ने जानकारी दी कि क्लब नेमार के साथ उनके अनुबंध को 2026 फीफा वर्ल्ड कप तक बढ़ाने की योजना पर काम कर रहा है। हालांकि नेमार इस समय चोट से जूझ रहे हैं, इसके बावजूद क्लब उन्हें लंबे समय तक बनाए रखना चाहता है।

नेमार की वापसी और मौजूदा प्रदर्शन

नेमार ने इस साल जनवरी में अपने करियर की शुरुआत करने वाले क्लब सैंटोस में वापसी की थी। उन्होंने यूरोप और सऊदी अरब में एक दशक से ज्यादा समय बिताने के बाद सैंटोस के साथ छह महीने का अनुबंध किया था। 33 वर्षीय नेमार ने वापसी के बाद अब तक क्लब के लिए 9 मैच खेले हैं, जिनमें उन्होंने 3 गोल किए और 3 असिस्ट दिए हैं।

क्लब ने तैयार किया स्पेशल रिकवरी प्लानः क्लब अध्यक्ष टेक्सेइरा ने कहा, जब हमने नेमार को वापस लाया, तो हमें पता था कि वह एक गंभीर चोट से उबर रहे हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए हमने अपनी मेडिकल टीम और रिकवरी सुविधाएं नेमार को समर्पित कर दी हैं। हमारा लक्ष्य है कि उनकी मैदान पर वापसी को इस तरह मॉनिटर करें जिससे वह वर्ल्ड कप तक हमारे साथ रहें।

चोटों से परेशान हैं नेमार

नेमार पिछले साल अक्टूबर में मैदान पर लौटे थे, लेकिन तब से लगातार पैर की मांसपेशियों की समस्याओं से जूझते रहे हैं। इससे पहले वह घुटने की गंभीर चोट के कारण एक साल से अधिक समय तक फुटबॉल से दूर रहे थे।

नए कोच की नियुक्ति

इस बीच, ब्राज़ीलियाई लीग में खराब प्रदर्शन के चलते सैंटोस फिलहाल 20 टीमों की तालिका में 19वें स्थान पर है। क्लब ने हाल ही में मुख्य कोच पेड्रो कैक्सिन्हा के जाने के बाद ब्राज़ील की राष्ट्रीय टीम के पूर्व सहायक कोच क्लेबर जेवियर को नया मैनेजर नियुक्त किया है।

ब्राज़ील के पूर्व मिडफील्डर डूडू ने क्रूज़ेरो क्लब छोड़ा, वापसी के 4 महीने बाद ही टूटा साथ

एजेंसी

रियो डी जनेरियो। ब्राज़ील की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम के पूर्व मिडफील्डर डूडू ने अपने पुराने क्लब क्रूज़ेरो से चार महीने के भीतर ही नाता तोड़ लिया है। डूडू ने दिसंबर के अंत में पाल्मेरास से फ्री ट्रांसफर पर वापसी की थी, लेकिन अब क्लब से उनका अनुबंध समाप्त हो गया है।

तुरंत प्रभाव से अनुबंध समाप्तः सोशल मीडिया पर जारी एक संक्षिप्त बयान में क्रूज़ेरो ने कहा, क्रूज़ेरो सूचित करता है कि खिलाड़ी के साथ उसके अनुबंध को तत्काल प्रभाव से समाप्त करने का निर्णय लिया गया है। हालांकि, क्लब ने इस फैसले के पीछे के कारणों का खुलासा नहीं किया।

सिर्फ 17 मैच और दो गोल

डूडू ने वापसी के बाद क्रूज़ेरो के लिए कुल 17 मुकाबले खेले और दो गोल किए। उनकी वापसी को लेकर प्रशंसकों में उम्मीदें थीं, लेकिन मैदान पर वह ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ सके।

मैनेजर से मतभेद की खबरें: स्थानीय मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, डूडू और क्लब के मैनेजर जॉन स्टोवंस के बीच रिश्तों में खटास आ गई थी, जिसके चलते यह निर्णय लिया गया।

लंबा रहा करियर, कई क्लबों में खेल चुकेः डूडू ने 2009 में क्रूज़ेरो से ही अपने प्रोफेशनल करियर की शुरुआत की थी और 2011 में डाइनामो कीव चले गए थे। इसके बाद उन्होंने कोरिंथिया, ग्रेमियो और कतर के क्लब अल-दुहैल के लिए भी खेला। डूडू ब्राज़ील की राष्ट्रीय टीम की ओर से तीन अंतरराष्ट्रीय मैच खेल चुके हैं।

मैड्रिड ओपन 2025: कोको गॉफ ने स्वियातेक को हराकर फाइनल में बनाई जगह

मैड्रिड। अमेरिकी टेनिस खिलाड़ी कोको गॉफ ने मौजूदा चैंपियन और दुनिया की नंबर दो खिलाड़ी इगा स्वियातेक को मैड्रिड ओपन 2025 के सेमीफाइनल में करारी शिकस्त दी। गॉफ ने यह मुकाबला महज 64 मिनट में 6-1, 6-1 से जीतकर टूर्नामेंट के फाइनल में प्रवेश किया।

स्वियातेक एक भी ब्रेक प्वाइंट नहीं बना सकीं

पोलैंड की पांच बार की ग्रैंड स्लैम विजेता स्वियातेक इस मुकाबले में पूरी तरह संघर्ष करती नजर आईं। वह एक भी ब्रेक प्वाइंट हासिल नहीं कर सकीं और अपनी सर्विस पांच बार गंवाई। गॉफ ने पहले सेट में तीसरे, पांचवें और सातवें गेम में ब्रेक कर स्वियातेक को पूरी तरह दबाव में ला दिया।

क्ले कोर्ट पर पहली बार गॉफ ने स्वियातेक को हराया

यह पहली बार है जब 21 वर्षीय कोको गॉफ ने क्ले कोर्ट पर स्वियातेक को हराया है। उन्होंने दूसरे सेट में भी दो बार ब्रेक किया और बिना कोई गलती किए पहला ही मैच प्वाइंट भुना लिया।

भारतीय और अमेरिकी टीम के बीच शतरंज महा-मुकाबला 4 अक्टूबर को

नई दिल्ली। शतरंज प्रेमियों के लिए एक रोमांचक खबर सामने आई है। हाल ही में विश्व चैम्पियन बने ग्रैंडमास्टर डी. गुकेश के नेतृत्व में भारतीय टीम 4 अक्टूबर को अमेरिका में जीएम हिकारू नाकामुरा की अगुवाई वाली अमेरिकी टीम से भिड़ेगी।

यह हाई-वोल्टेज मुकाबला

'चेकमैटः यूएसए वर्सेस भारत' नाम से अमेरिका के एरिंगटन स्थित ईस्पोर्ट्स स्टेडियम में खेला जाएगा। इस पांच-बोर्ड मुकाबले में शतरंज की दुनिया के बड़े सितारे, उभरते हुए खिलाड़ी, महिला प्रतिभाएं और लोकप्रिय कंटेंट क्रिएटर्स आमने-सामने होंगे। भारत की ओर से शीर्ष बोर्ड पर डी. गुकेश उतरेंगे, जिनका सामना अमेरिका के दिग्गज ग्रैंडमास्टर हिकारू नाकामुरा से होगा। दूसरे बोर्ड पर भारत के जीएम अर्जुन एरिगैसी और अमेरिका के जीएम फेबियानो कारुआना के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिलेगी। तीसरे बोर्ड पर शतरंज के दो चर्चित कंटेंट क्रिएटर्स आमने-सामने होंगे। अमेरिका की ओर से आईएम लेवी रोज़मैन (गौथमचेस) जबकि भारत की ओर से आईएम सागर शाह (चेसबेस इंडिया के संस्थापक) मुकाबले में उतरेंगे। यह भिड़ंत दर्शकों के बीच खासा रोमांच भरने वाली होगी।

मैं तो नेट्स में उन्हें देखकर हैरान हो गया था, बटलर ने की इस बल्लेबाज की तारीफ

अहमदाबाद। राजस्थान रॉयल्स के स्टार बल्लेबाज जोस बटलर ने आईपीएल 2025 में गुजरात टाइटंस के खिलाफ शानदार जीत को टीम का अब तक का सर्वश्रेष्ठ मैदानी प्रदर्शन बताया। बटलर ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में टीम की बल्लेबाजी, गेंदबाजी और फील्डिंग की तारीफ की, साथ ही GT के युवा बल्लेबाज साई सुदर्शन की जमकर प्रशंसा की। संपूर्ण प्रदर्शन पर बटलर ने कहा कि हां, यह काफी हद तक संपूर्ण प्रदर्शन था। यह हमारा मैदान पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। इस सीजन हमने कुछ कैच छोड़े, लेकिन राशिद खान का शानदार कैच ने माहौल सेट कर दिया। उन्होंने फील्डिंग में सुधार को जीत का बड़ा कारण बताया।टॉप ऑर्डर की आक्रामक बल्लेबाजी पर उन्होंने कहा कि हमारे टॉप ऑर्डर के खिलाड़ी शानदार फॉर्म में हैं। वे पारंपरिक तकनीक के साथ खेलते हैं, क्रीज पर टिकते हैं, लेकिन आज उनकी तेज स्कोरिंग ने सबको हैरान कर दिया। क्लासिकल शॉट्स के साथ इतनी तेजी से रन बनाना खास था। वहीं, साई सुदर्शन की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि पहले दिन नेट्स में उन्हें देखकर मैं उनकी प्रतिभा से हैरान था।

भारतीय स्कीट शूटिंग टीम साइप्रस पहुंची, आईएसएसएफ वर्ल्ड कप में दमदार प्रदर्शन की उम्मीद

एजेंसी

नोकोसिया (साइप्रस)। भारतीय स्कीट शूटिंग टीम वर्ष के तीसरे आईएसएसएफ शॉटगन वर्ल्ड कप में हिस्सा लेने के लिए साइप्रस पहुंच गई है। आज से शुरू हो रहे इस टूर्नामेंट में भारत को पेरू और अर्जेंटीना में किए गए शानदार प्रदर्शन को दोहराने की उम्मीद है। इस बार भारत की ओर से दो ओलंपियन खिलाड़ियों के साथ कई युवा और नए चेहरे मैदान में नजर आएंगे।

मैराज और महेश्वरी के कंधों पर जिम्मेदारी

स्कीट प्रतियोगिताएं सोमवार से शुरू होंगी, जिसमें भारत के लिए पुरुष वर्ग में ओलंपियन मैराज अहमद खान और महिला वर्ग में महेश्वरी चौहान अगुवाई करेंगी। पुरुष टीम में उनके साथ अभय सिंह सेखों और ऋतुराज सिंह बुंदेला होंगे। अभय इस बार सीनियर वर्ल्ड कप में डेब्यू कर रहे हैं, जबकि ऋतुराज पिछले दो सालों में चार विश्व कप खेल चुके हैं। महिला वर्ग में महेश्वरी के अलावा परीनाज़ धालीवाल और 18 वर्षीय यशस्वी राठौर टीम का हिस्सा हैं। यशस्वी का यह पहला सीनियर विश्व कप होगा।

विश्व चैंपियनों से टक्कर, 54 देशों के 350 से ज्यादा रहे हैं। इसमें इटली और अमेरिका जैसी ताकतवर टीमों के अलावा कई पूर्व और मौजूदा विश्व व ओलंपिक चैंपियन भी शामिल होंगे। क्वालिफाइंग राउंड सोमवार से शुरू होंगे, जिसमें रोज़ाना दो राउंड में 25-25 क्ले टारगेट्स शूट किए जाएंगे। बुधवार को पांचवां राउंड और फाइनल मुकाबले होंगे।

निशानेबाज शामिल

इस वर्ल्ड कप में 54 नेशनल ओलंपिक कमेटियों (एनओसी) के 350 से ज्यादा शूटर हिस्सा ले

आईपीएल 2025 में अपने शानदार प्रदर्शन पर बोले प्रसिद्ध कृष्णा - 'लेंथ पर मेरा कंट्रोल शानदार रहा है'

एजेंसी

अहमदाबाद। गुजरात टाइटंस के तेज़ गेंदबाज़ प्रसिद्ध कृष्णा का आईपीएल 2025 में शानदार प्रदर्शन जारी है। सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ उन्होंने 4 ओवर में सिर्फ 19 रन देकर 2 विकेट चटकाए और इस सीज़न में अपने विकेटों की संख्या 19 तक पहुंचा दी - जो उनके आईपीएल करियर का सर्वश्रेष्ठ आंकड़ा है। इससे पहले उन्होंने 2022 में भी 19 विकेट लिए थे, लेकिन इस बार उन्होंने यह कारनामा सिर्फ 10 मैचों में कर दिखाया है।

लेंथ पर कंट्रोल और तैयारी से मिली सफलता

मैच के बाद प्रसिद्ध कृष्णा ने कहा, मुझे लगता है कि मेरी लेंथ पर कंट्रोल इस सीज़न में अच्छा रहा है। हम जो मेहनत कर रहे हैं, उसमें टीम का और सभी का सहयोग मिला है। और हाँ, मैं इस बात का लुत्फ उठा रहा हूँ कि गेंद मेरे हाथ से अच्छी निकल रही है। इस सीज़न में प्रसिद्ध का इकोनॉमी रेट 7.48 रहा है, जो उनके अब तक के किसी भी आईपीएल सीज़न से बेहतर है। उन्होंने बताया कि उनकी तैयारी नेट्स में विपक्षी बल्लेबाज़ों के अनुसार होती है और वो मैच से पहले पिच को भी बारीकी से देखते हैं। उन्होंने कहा,अगर आप दूसरी पारी में गेंदबाज़ी कर रहे हो, तो पहले 20 ओवर की हर गेंद को ध्यान से देखना ज़रूरी है। मेरे पास अनुभव से भरे खिलाड़ी हैं, जिनसे बात करके मैं सही एरिया में गेंदबाज़ी करने की योजना बनाता हूँ।,

कप्तान **शुभमन गिल भी हुए गेंदबाज़ी आक्रमण से खुशः** गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि उनकी टीम के पास गेंदबाज़ों की भरमार है और हर मैच में कोई न कोई योगदान दे रहा है। टीम ने 7 गेंदबाज़ों का इस्तेमाल किया। हालांकि साई किशोर ने सिर्फ इसलिए गेंदबाज़ी की क्योंकि ईशांत शर्मा आखिरी ओवर में चोटिल

होकर मैदान से बाहर चले गए। गिल ने कहा, हर कोई योगदान दे रहा है - साई, प्रसिद्ध, राशिद भाई, सिराज, ईशी भाई और इस मैच में कोएट्ज़ी भी। जब आपके पास इतने सारे विकल्प होते हैं, तो डिफेंड करने में आसानी होती है, खासकर ऐसे मैदानों पर। गौरतलब है कि दक्षिण अफ्रीका के तेज़ गेंदबाज़ जेराल्ड कोएट्ज़ी ने इस मैच में गुजरात के लिए डेब्यू किया और 1 विकेट लिया।

आईपीएल 2025 : गुजरात टाइटंस ने सनराइजर्स हैदराबाद को 38 रनों से हराया

एजेंसी

अहमदाबाद। आईपीएल 2025 के 51वें मुकाबले में गुजरात टाइटंस ने सनराइजर्स हैदराबाद को 38 रनों से हरा दिया है। इसी के साथ गुजरात की टीम अंकतालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में गुजरात टाइटंस ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में छह विकेट पर 224 रन बनाए थे, जवाब में सनराइजर्स की टीम 20 ओवर में छह विकेट पर 186 रन ही बना सकी। हैदराबाद के लिए अभिषेक शर्मा ने 41 गेंदों पर चार चौकों और छह छक्कों की मदद से 74 रन बनाए लेकिन उनकी पारी भी टीम को जीत नहीं दिला सकी। गुजरात की ओर से मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा ने दो-दो विकेट

लिए जबकि ईशांत शर्मा और गेराल्ड कोएट्जे को एक-एक विकेट मिला। इससे पहले, गुजरात टाइटंस ने कप्तान शुभमन गिल और जोस बटलर के अर्धशतकों की मदद से सनराइजर्स हैदराबाद को 225 रनों का लक्ष्य दिया। सनराइजर्स ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला लिया और गुजरात ने 20 ओवर में छह विकेट पर 224 रन बनाए। गुजरात के लिए गिल ने सबसे ज्यादा 38 गेंदों पर 10 चौकों और दो छक्कों की मदद से 76 रन बनाए जबकि बटलर ने 37 गेंदों पर तीन चौकों और चार छक्कों की मदद से 64 रन की पारी खेली। सनराइजर्स की ओर से जयदेव उनादकट ने अंतिम ओवर में तीन विकेट झटके। पहले बल्लेबाजी करते हुए गिल और सुदर्शन ने एक बार फिर गुजरात को मजबूत शुरुआत दिलाई और पहले विकेट के लिए 87 रन जोड़े। गिल और सुदर्शन की शानदार बल्लेबाजी की मदद से गुजरात ने पावरप्ले का अपना सर्वोच्च स्कोर भी बनाया। सुदर्शन ने इसके साथ ही टी20 में 2000 रन पूरे किए और वह कम पारियों में ऐसा करने वाले भारत के पहले और दुनिया के दूसरे बल्लेबाज बन गए।

पाकिस्तान दौरे से पहले यूएई के खिलाफ दो टी-20 मैच खेलेगा बांग्लादेश

एजेंसी

नई दिल्ली। बांग्लादेश पुरुष क्रिकेट टीम पाकिस्तान दौरे से पहले इस महीने के अंत में यूएई का दौरा करेगी, जहां टीम दो टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेलेगी। ये मुकाबले 17 और 19 मई को शारजाह क्रिकेट स्टेडियम में रात 7 बजे (स्थानीय समयानुसार) खेले जाएंगे। यह दोनों देशों के बीच तीन वर्षों में दूसरी द्विपक्षीय टी20 श्रृंखला होगी।बांग्लादेश और यूएई के बीच पिछली द्विपक्षीय टी20 श्रृंखला 2022 में दुबई में खेली गई थी, जहां बांग्लादेश ने दोनों मुकाबले जीतकर 2-0 से सीरीज़ अपने नाम की थी। इस बार भी बांग्लादेश की टीम मजबूत नजर आ रही है, जबकि यूएई को घरेलू परिस्थितियों का फायदा मिल सकता है।

एमिरेट्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर सुब्हान अहमद ने एक आधिकारिक बयान में कहा, हम एक बार फिर बांग्लादेश पुरुष टीम की मेज़बानी करके उत्साहित हैं। पिछले तीन वर्षों में हमने न्यूजीलैंड, वेस्टइंडीज और अफगानिस्तान जैसी आईसीसी फुल मेंबर टीमों की मेज़बानी की है। अब बांग्लादेश की यह दूसरी द्विपक्षीय यात्रा हमारे लिए खास है। वहीं, बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी)के सीईओ निज़ामुद्दीन चौधरी ने कहा, यूएई में दोबारा खेलना हमारे लिए अच्छा अनुभव होगा। ये मुकाबले हमारी टीम के लिए एशिया कप और आगामी व्यस्त अंतरराष्ट्रीय सीज़न की तैयारी का अहम हिस्सा होंगे।

आईसीसी महिला टी20 टीम रैंकिंगः ऑस्ट्रेलिया ने टॉप पोजिशन की मजबूत की पकड़, थाईलैंड को दो स्थानों का फायदा

एजेंसी

नई दिल्ली। आईसीसी महिला टी20 टीम रैंकिंग का वार्षिक अपडेट जारी कर दिया गया है। इसमें ऑस्ट्रेलिया ने अपनी टॉप पोजिशन को और मजबूत कर लिया है। ऑस्ट्रेलिया अब 299 रेटिंग अंकों के साथ पहले स्थान पर है और उसने इंग्लैंड पर अपनी बढ़त 18 से बढ़ाकर 20 अंकों की कर ली है। रैंकिंग के टॉप-8 स्थानों में किसी तरह का बदलाव नहीं हुआ है। भारत 260 अंकों के साथ तीसरे स्थान पर कायम है जबकि टी20 वर्ल्ड कप विजेता न्यूजीलैंड (253) चौथे और उप-विजेता दक्षिण अफ्रीका (243) पांचवें स्थान पर बने हुए हैं। वेस्टइंडीज (240), श्रीलंका (228) और पाकिस्तान (220) ने भी अपनी-अपनी रैंकिंग बनाए रखी है, हालांकि इनमें कुछ टीमों के अंकों में मामूली उतार-चढ़ाव देखने को मिला। थाईलैंड को दो स्थानों की छलांग, टॉप-11 में पहुंचाः थाईलैंड

की टीम ने स्कॉटलैंड और पापुआ न्यू गिनी को पीछे छोड़ते हुए 11वें स्थान पर जगह बना ली है। थाईलैंड को यह बढ़त हांगकांग में खेले गए क्वाड्रैंगुलर सीरीज और नेपाल में त्रिकोणीय सीरीज में मिली जीतों के चलते मिली है। सबसे बड़े गेनरः सिएरा लियोन और कुवैतः इस वार्षिक अपडेट में सिएरा लियोन और कुवैत को सबसे अधिक फायदा हुआ है। दोनों टीमों ने सात-सात रेटिंग पॉइंट्स के साथ तीन-तीन स्थानों की छलांग लगाई है। अब सिएरा लियोन 34वें और कुवैत 46वें स्थान पर हैं।

चार टीमें हुई बाहरः अक्टूबर 2021 से अप्रैल 2024 के बीच आठ या उससे अधिक टी20 मैच न खेलने के कारण चार टीमों को रैंकिंग से बाहर कर दिया गया है। इनमें मैक्सिको, चेकिया, ओमान और घाना शामिल हैं। यूएई को ओडीआई स्टेटस, अमेरिका बाहरः वार्षिक अपडेट के तहत 2025-29 चक्र के लिए ओडीआई स्टेटस वाली 16 टीमों की नई सूची भी घोषित की गई है। इसमें अमेरिका को बाहर कर यूएई को जगह दी गई है। यूएई ने ञ्20ढ्ढ रैंकिंग में बेहतर प्रदर्शन के आधार पर यह दर्जा हासिल किया है।

इस लिस्ट में पांच एसोसिएट मेंबर्स हैं- थाईलैंड, स्कॉटलैंड, पापुआ न्यू गिनी, नीदरलैंड्स और अब यूएई। इन टीमों को या तो टी20 रैंकिंग या वर्ल्ड कप क्वालिफायर में प्रदर्शन के आधार पर ओडीआई स्टेटस मिला है।

मैच में हो गया 'पर्यावरण' को नुकसान, शुभमन ने भी तोड़ी चुप्पी

नई दिल्ली। आईपीएल में कुछ टीमें ऐसी रही हैं जिन्होंने पूरे 20 ओवर की पारी में सबसे कम डॉट गेंदें खेलकर आक्रामक बल्लेबाजी का रिकॉर्ड बनाया है। हाल ही में, गुजरात टाइटंस ने आईपीएल 2025 में अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ केवल 22 डॉट गेंदें खेलीं, जो संयुक्त रूप से एक पारी में सबसे कम डॉट खेलने का रिकॉर्ड है। यह रिकॉर्ड इससे पहले 2024 में हैदराबाद ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ हैदराबाद में बनाया था, जहां उन्होंने भी 22 डॉट गेंदें खेली थीं। असल में बीसीसीआई ने घोषणा की है कि मैच में प्रत्येक डॉट गेंद पर 500 पौधे लगाए जाएंगे। यह रिवाज पिछले कुछ सालों से आईपीएल में बना हुआ है। बीते साल भी बीसीसीआई ने लाखों पौधे लगवाए थे। इस साल भी ग्रीनरी बढ़ाने के उद्देश्य से बीसीसीआई ने इस नियम को लागू किया है।

घाट में अंतर-विद्यालय क्षेत्रीय स्तरीय टूर्नामेंट आयोजित

एजेंसी

डोडा। उपायुक्त हरविंदर सिंह के निर्देश और जिला युवा सेवा एवं खेल अधिकारी प्रीतम सिंह के मार्गदर्शन में आज घाट में अंतर-विद्यालय क्षेत्रीय स्तरीय खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय शारीरिक शिक्षा कार्यालय ने वॉलीबॉल, कबड्डी और खो-खो में जोशीले मुकाबलों वाले टूर्नामेंट का समन्वय किया। इस कार्यक्रम में घाट क्षेत्र के विभिन्न विद्यालयों के 162 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। युवा खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता के दौरान उल्लेखनीय प्रतिभा, टीमवर्क और खेल भावना का प्रदर्शन किया जिससे यह कार्यक्रम युवाओं और शारीरिक फिटनेस का जीवंत उत्सव बन गया।राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय घाट के प्रधानाचार्य दिनेश कुमार मुख्य अतिथि थे। उन्होंने प्रतिभागियों की समर्पण और ऊर्जा की सराहना की। पीईएल और प्रभारी जेडपीईओ सुरिंदर कुमार ने नोडल अधिकारी के रूप में कार्य किया और कार्यक्रम के आयोजन और देखरेख में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। टूर्नामेंट का सफल क्रियान्वयन सभी पीईएम, पीईटी और आरईके के सामूहिक प्रयासों से संभव हुआ।घाट के ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी को चिकित्सा कर्मचारियों की तैनाती और मौके पर प्राथमिक चिकित्सा सहायता सुनिश्चित करने के लिए विशेष धन्यवाद दिया गया। आयोजकों ने डायमंड यूथ क्लब घाट को निःशुल्क एम्बुलेंस सेवा प्रदान करने के लिए भी हार्दिक आभार व्यक्त किया जिससे कार्यक्रम की सुरक्षा और सुचारू संचालन में और अधिक योगदान मिला। टूर्नामेंट ने न केवल स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया बल्कि स्कूली छात्रों के बीच खेल और शारीरिक शिक्षा के महत्व को भी मजबूत किया।

प्रतियोगिता एकता, सहयोग व स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण मंच : महाप्रबंधक

एजेंसी

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे प्रशासन द्वारा खेल को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से रेलगांव स्थित स्पोर्ट्स ग्राउन्ड सूबेदारगंज में दो दिवसीय उत्तर मध्य रेलवे में 12वीं अंतर मंडलीय अधिकारी खेल एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया गया। मुख्य अतिथि महाप्रबन्धक उपेंद्र चंद्र जोशी एवं उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्ष श्रीमती चेतना जोशी ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। सभी मंडल रेल प्रबंधकों ने अपनी-अपनी टीमों का नेतृत्व किया। इस अवसर पर महाप्रबन्धक ने सभी टीमों के मार्च पास्ट का अवलोकन किया। महाप्रबंधक ने सभी को हार्दिक बधाई दी और कहा कि यह हम सबके लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि एक बार फिर हर वर्ष की भांति हम लोग इस समागम के लिए तैयार हैं। इस आयोजन में खेलों के साथ-साथ सांस्कृतिक स्पर्धाएं भी होंगी। मैं आशा करता हूं कि, इस आयोजन से हम सबमें भ्रातृत्व भाव विकसित होगा। यह प्रतियोगिता न केवल खेल और संस्कृति का एक अद्भुत संगम है, बल्कि यह हमारे संगठन के अधिकारियों के बीच एकता, सहयोग और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण मंच भी है। मुझे यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि हमारे अधिकारी और उनके परिवार के सदस्यगण अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर इस महत्वपूर्ण आयोजन में भाग लेने के लिए उत्साहित हैं। कार्यक्रम के प्रारंभ में दोनों अतिथियों का स्वागत एस पी द्विवेदी प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक एवं श्रीमती संगीता द्विवेदी ने किया। उन्होंने कहा कि मुख्यालय, तीनों मंडलों एवं कारखानों से आए हुए हमारे अधिकारी एवं परिवार के सदस्यों, आप सभी का यहां एकत्रित होना उत्तर मध्य रेलवे की एकता और सामूहिकता का प्रतीक है। यह मंच न केवल आपकी खेल प्रतिभा और

सांस्कृतिक दक्षता का प्रदर्शन करेगा, बल्कि आपसी मेलजोल और सौहार्द को भी बढ़ावा देगा। मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी शशि कांत त्रिपाठी ने बताया कि इस अंतर मंडलीय अधिकारी खेल एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता के अन्तर्गत विभिन्न खेल स्पर्धाओं जैसे क्रिकेट, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, लॉन टेनिस, कैरम, चेस प्रतियोगिताओं एवं एथलेटिक में 3 किलोमीटर की मिनी मैराथन, 3 किलोमीटर की वाक रेस, 100 मी. दौड़ आदि के साथ-साथ, बॉक्स क्रिकेट, सैक रेस एवं स्पून रेस आदि का भी आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर बी पी सिंह मुख्य संकेत एवं दूरसंचार इंजीनियर ने उत्तर मध्य रेलवे के तीनों मंडलों प्रयागराज, झांसी, आगरा, कारखानों एवं मुख्यालय के दलों को नियमों के अनुसार एवं खेल भावना से इस मीट में भाग लेने की शपथ दिलायी। इसी क्रम में सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं जैसे वाद्य संगीत, गायन, नृत्य, अभिनय के अतिरिक्त पेंटिंग, रंगोली एवं मिमिक्री का भी आयोजन किया जा रहा है। वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी अमित मालवीय ने बताया कि इस अवसर पर महाप्रबंधक ने रस्साकशी की पर्ची निकाल कर ड्रॉ फाइनल किया। रस्साकशी में आगरा मंडल प्रयागराज मंडल को हरा कर विजेता बना।

दुनिया के कंटेंट, फैशन और अध्यात्म पर छाने को तैयार हैं भारत - नीता अंबानी

एजेंसी

मुंबई। देश के सबसे बड़े मीडिया व एंटरटेनमेंट प्लेटफॉर्म्स में से एक जियोस्टार की चेयरपर्सन नीता अंबानी ने यकीन दिलाया कि जल्द ही भारतीय कला व शिल्प दुनिया के सौंदर्यशास्त्र या फैशन को आकार देने लगेगा। उन्होंने कहा कि न केवल फैशन, चिकित्सा, अध्यात्म, नृत्य और भारतीय कहानियां भी विश्व मानचित्र पर अपनी जगह बना लेगीं। नीता अंबानी मुंबई के जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में आयोजित हो रहे वर्ल्ड ऑडियो विजुअल एंड एंटरटेनमेंट समिट 2025 में बोल रही थीं। "Taking Indian Culture to the World" विषय पर बोलते हुए नीता अंबानी ने उन भारतीयों की याद दिलाई जो अपनी जड़ों को बिना भूले विश्व मंचों पर भारत को गौरवान्वित कर रहे हैं। संगीत में अनुष्का शंकर और ऋषभ शर्मा, व्यंजनों में विकास खन्ना और सिनेमा में प्रियंका चोपड़ा जैसे युवा दुनिया भर में भारतीयता का संदेश फैला रहे हैं। साथ ही नीता अंबानी ने न्यूयॉर्क के प्रतिष्ठित लिंकन सेंटर में, सितंबर में होने वाले 'ग्रेंड इंडियन वीकएंड' की भी जानकारी साझा की। यह वीकएंड 'नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर' की और से मनाया जाएगा। जिसमें भारतीय कला व संस्कृति को दुनिया के सामने रखा जाएगा। नीता अंबानी ने बताया कि हम भारत की आत्मा को दुनिया के सामने रखेंगे। हमारी कलाएं, कारीगर, हमारे बुनकर, हमारे गीत और नृत्य, हमारा फैशन, हमारा स्वादिष्ट भोजन यहां सभी कुछ होगा।

एफपीआई ने इस हफ्ते भारतीय शेयरों में डाले 10000 करोड़ रुपये से अधिक

मुंबई। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने इस हफ्ते भारतीय शेयर बाजारों में 10,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया। इससे यह साफ हो गया कि घरेलू इक्विटी में विदेशी रुचि फिर से बढ़ने लगी है। नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरी लिमिटेड (एनएसडीएल) की ओर से जारी आंकड़ों के अनुसार, एफपीआई ने 28 अप्रैल से 2 मई के बीच इक्विटी में 10,073 करोड़ रुपये का निवेश किया। आंकड़ों के अनुसार 2025 में पहली बार अप्रैल महीने में सकारात्मक शुद्ध एफपीआई प्रवाह देखा गया। अप्रैल में भारतीय इक्विटी में एफपीआई की ओर से शुद्ध निवेश 4,223 करोड़ रुपये रहा। एफपीआई ने मार्च में शुद्ध रूप से 3,973 करोड़ रुपये के शेयर बेचे थे। जनवरी और फरवरी में उन्होंने क्रमशः 78,027 करोड़ रुपये और 34,574 करोड़ रुपये की इक्विटी की बिकवाली की थी। इससे यह पता चलता है कि अप्रैल बीते कई महीनों के बाद एफपीआई की भारतीय बाजार में रुचि बढ़ी है।

भारत ने पाकिस्तान के साथ बंद किया कारोबार, पड़ोसी देश से आने वाली सभी वस्तुओं पर लगाई रोक

नई दिल्ली। भारत ने आतंकवाद के पनाहगाह पाकिस्तान को एक बार फिर सबक सिखाने के लिए एक बड़ा फैसला लिया है। इसके तहत भारत सरकार ने पाकिस्तान से किसी भी प्रकार की वस्तुओं के सीधे या परोक्ष आयात पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। वाणिज्य मंत्रालय की ओर से दो मई को जारी की गई अधिसूचना के अनुसार, यह फैसला राष्ट्रीय सुरक्षा और सार्वजनिक नीति के हित में लिया गया है। इस रोक के बाद अब पाकिस्तान से आने वाले किसी भी उत्पाद चाहे वह सीधे आयात हो या किसी तीसरे देश के जरिए परोक्ष रूप से हो इन सभी आयातों पर पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। बता दें कि भारत सरकार की तरफ से लगाए गए यह प्रतिबंध विदेश व्यापार नीति 2023 में नए प्रावधान के रूप में जोड़ा गया है, जिसको लेकर विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) ने साफ किया है कि अगर किसी मामले में आयात की अनुमति दी जाती है, तो उसके लिए भारत सरकार की विशेष मंजूरी जरूरी होगी। 2024-25 में अप्रैल से जनवरी के बीच भारत ने पाकिस्तान से केवल 0.42 मिलियन डॉलर का आयात किया था। इसमें तांबा और तांबे के सामान, खाद्य फल और सूखे मेवे , कपास, नमक, सल्फर और मिट्टी और पत्थर, जैविक रसायन, खनिज ईंधन, प्लास्टिक उत्पाद, ऊन, कांच के बने पदार्थ, कच्ची खाल और चमड़ा आदि शामिल है।

20 साल में 1.55 लाख करोड़ की संपत्ति अटैच

नई दिल्ली। प्रवर्तन निदेशायल की ताजा रिपोर्ट के अनुसार 50,000 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ती की जब्ती मुकदमेबाजी और स्थगन आदेश के कारण अटकी पड़ी है। इन संपत्तियों को ईडी ने धन शोधन निवारण कानून के तहत अनंतिम रूप से अटैच किया था। जांच एजेंसी को धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत जांच के दौरान उन संपत्तियों को अस्थायी रूप से अटैच करने का अधिकार है, जिनके बारे में संदेह है कि वे अपराध की आय हैं। इस तरह के अनंतिम आदेश को जारी होने के 180 दिनों के भीतर उक्त कानून के न्यायाधिकरण की ओर से पुष्टि की जानी चाहिए। रिपोर्ट के अनुसार ईडी ने 2005 से लेकर 2025 तक पीएमएलए के प्रभावी होने के बाद से 1.55 लाख करोड़ रुपये की संपत्ति अचैट की है, जिनमें से 1.07 करोड़ रुपये मूल्य की संपत्तियों की पुष्टि वित्तीय वर्ष 2024-25 के अंत तक न्यायाधिकरण की ओर से की जा चुकी है, लेकिन कानूनी बाधाओं के कारण 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक की जब्ती अभी भी अटकी हुई है। ईडी ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि देशभर में 100 विशेष पीएमएलए अदालतें होने के बावजूद मनी लॉन्ड्रिंग मामलों की सुनवाई समय पर पूरी नहीं हो पाती।

शेयर बाजार में स्टॉक होल्डिंग के मामले में पहली बार एफआईआई से आगे निकले डीआईआई

एजेंसी

नई दिल्ली। शेयर बाजार में जारी उतार-चढ़ाव के बीच पहली बार घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई) की स्टॉक होल्डिंग विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) से अधिक हो गई है। माना जा रहा है कि इक्विटी होल्डिंग मामले में घरेलू संस्थागत निवेशकों के आगे निकल जाने से आने वाले दिनों में बाजार में तुलनात्मक तौर पर अधिक स्थिरता की स्थिति बनेगी। इसके साथ ही विदेशी निवेशकों द्वारा अचानक की जाने वाली बिकवाली की स्थिति में भी शेयर बाजार बड़ी गिरावट का शिकार होने से काफी हद तक बच सकेगा। एसीआई इक्विटीज द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार मार्च में खत्म हुई तिमाही के दौरान घरेलू संस्थागत निवेशकों की स्टॉक मार्केट में होल्डिंग 16.91 प्रतिशत हो गई है, जबकि विदेशी संस्थागत निवेशकों की होल्डिंग 16.84 प्रतिशत ही है। इस तरह डीआईआई की इक्विटी होल्डिंग एफआईआई की इक्विटी

होल्डिंग से अधिक हो गई है। इक्विटी होल्डिंग के इस पैटर्न के मुताबिक घरेलू संस्थागत निवेशकों के पास अब 69.80 लाख करोड़ रुपये से अधिक के एसेट्स हो गए हैं। वहीं, विदेशी संस्थागत निवेशकों के पास 69.58 लाख करोड़ रुपये के एसेट्स हैं। पिछले साल अक्टूबर के महीने से ही विदेशी निवेशकों ने घरेलू शेयर बाजार में चौतरफा बिकवाली का दबाव बना दिया था। विदेशी निवेशकों की इस बिकवाली के दौरान बाजार को सहारा देने के लिए घरेलू संस्थागत निवेशकों ने भी बड़े पैमाने पर खरीदारी की। डिपॉजिटरी के आंकड़ों पर नजर डालें तो सितंबर 2024 के बाद से मार्च 2025 के अंत तक विदेशी निवेशकों ने घरेलू शेयर बाजार में 2.06 लाख करोड़ रुपये की बिकवाली करके अपने पैसे निकाले। दूसरी ओर, घरेलू संस्थागत निवेशकों ने इस अवधि में शेयर बाजार में 3.97 लाख करोड़ रुपये की खरीददारी करके बाजार को सहारा देने की कोशिश की। घरेलू संस्थागत निवेशकों की इस खरीदारी के कारण ही भारतीय शेयर बाजार के इतिहास में पहली बार उनकी इक्विटी होल्डिंग विदेशी संस्थागत निवेशकों की तुलना में अधिक हो गई है। कोटक सिक्योरिटीज के इक्विटी रिसर्च हेड श्रीकांत चौहान का कहना है कि पिछले 1 साल के ट्रेडिंग पैटर्न पर नजर डालें, तो इस अवधि में विदेशी संस्थागत निवेशकों ने खरीदारी करने की तुलना में बिकवाली अधिक की है। दूसरी ओर, घरेलू संस्थागत निवेशकों, विशेष रूप से म्युचुअल फंड्स ने एसआईपी के जरिए इक्विटी मार्केट में लगातार अपने निवेश को बढ़ाया है। इसके साथ ही गिरते बाजार में खरीदारी करके घरेलू संस्थागत निवेशकों ने अपना इक्विटी बेस भी मजबूत किया है।

शाहरुख खान बने हार्पिक के ब्रांड एंबेसडर

एजेंसी

मुंबई। बॉलीवुड के किंग खान शाहरुख खान हार्पिक के ब्रांड एंबेसडर बनाये गये हैं। टॉयलेट की सफाई में ब्रांड की श्रेष्ठता को दर्शाने के लिए हार्पिक ने शाहरुख के साथ अपनी नई मुहिम हार्पिक है ना की शुरुआत की है, यह मुहिम हर घर में टॉयलेट की अच्छी सफाई का वादा करती है। शाहरुख खान ने हार्पिक के साथ अपने इस जुड़ाव पर कहा, स्वच्छता की शुरुआत छोटे लेकिन असरदार कार्यों से होती है। हार्पिक के साथ काम करने पर मैं खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। यह एक ऐसा ब्रांड है, जो दशकों से भारतीय घरों में स्वच्छता और गरिमा को बढ़ावा दे रहा है। मैं हमरी गुमनाम हीरोज- गृहणियों - की बहुत इज्जत करता हूं, जिनकी अथक मेहनत से ही परिवारों के स्वास्थ्य और खुशी मिलती है। वे सर्वश्रेष्ठ की हकदार हैं। हार्पिक है ना के साथ, हर घर बेहतर स्वच्छता, सफाई और ताजगी पर भरोसा कर सकता है।जो सिर्फ पांच मिनट में मिल जाती है। जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों में जिस तरह का आश्वासन चाहिए, उसी तरह हार्पिक है ना हर घर में एक भरोसेमंद साथी के रूप में खड़ा रहता है।'

एनएसई में वेव्स इंडेक्स का अनावरण

एजेंसी

मुंबई। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने विश्व ऑडियो विजुअल एंटरटेनमेंट समिट (वेव्स) 2025 में ऑडियो-विजुअल और मनोरंजन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाला 43-एडीजीसी कंपनी बेंचमार्क वेव्स इंडेक्स लॉन्च किया, जो भारत की रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने लॉन्च को समिट की सबसे बड़ी सफलताओं में से एक बताते हुये इस बात पर जोर दिया कि नया इंडेक्स एक नए निवेश पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देगा, जो भारत के तेजी से बढ़ते रचनात्मक और सामग्री उद्योगों के लिए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पूंजी को आकर्षित करेगा। श्री फडणवीस ने कहा, 'मुझे खुशी है कि वेव्स शिखर सम्मेलन मुंबई में आयोजित किया जा रहा है। केंद्र ने महाराष्ट्र और मुंबई को इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम की मेजबानी का सम्मान दिया है। प्रधानमंत्री द्वारा शिखर सम्मेलन का उद्घाटन किए जाने के बाद से, दुनिया भर के प्रतिनिधियों ने इस मंच के पैमाने और गुणवत्ता की प्रशंसा की है, जिसे इस क्षेत्र में पहली बार बनाया

जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत ऑडियो-विजुअल क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाने की कगार पर है, जिसमें आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और उद्योगों में गुणक प्रभाव की अपार संभावनाएं हैं।एनएसई के प्रबंध निदेशक और सीईओ आशीष कुमार चौहान ने बताया कि वेव्स इंडेक्स का विचार महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री कार्यालय के एक प्रस्ताव से आया है। उन्होंने कहा कि जब वेव्स की अवधारणा बनाई जा रही थी, तो मुख्यमंत्री कार्यालय ने हमसे एक ऐसा सूचकांक बनाने के लिए संपर्क किया था जो इन सभी उद्योगों का एक साथ प्रतिनिधित्व करेगा। हालांकि कई क्षेत्रीय सूचकांक मौजूद हैं, लेकिन उनमें से किसी ने भी पूरे रचनात्मक क्षेत्र को समाहित नहीं किया है। उन्होंने कहा ÷ हमने इसे लॉन्च करने के लिए प्रतिबद्धता जताई थी और आज हमने वह वादा पूरा कर दिया है।

तमिलनाडु के लिए कोयले की आपूर्ति व्यवस्था मजबूत करने पर उच्च स्तरीय बैठक

एजेंसी

चेन्नई। तमिलनाडु के लिए कोयला और लिग्नाइट ईंधन की आपूर्ति व्यवस्था मजबूत करने के विषय पर चेन्नई में एक उच्च स्तरीय बैठक में चर्चा की गयी। बैठक में केंद्रीय कोयला सचिव विक्रम देव दत्त, राज्य के मुख्य सचिव एन. मुरुगनंदम और कोयला तथा बिजली कंपनियों के प्रतिनिधि शामिल थे।केंद्रीय कोयला मंत्रालय की एक विज्ञप्ति के अनुसार अधिकारियों ने राज्य में बिजली की अनुमानित मांग, लिग्नाइट और कोयले की उपलब्धता तथा गर्मियों और मानसून के मौसम के दौरान पीक लोड की स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक सक्रिय उपायों पर बातचीत की। बैठक में नेवेली लिग्नाइट कॉर्पोरेशन इंडिया लिमिटेड(एनएलसीआईएल) से संबंधित भूमि अधिग्रहण, नेवेली की खदानों में ओवरबर्डन (ऊपर के कंकड-पत्थर से रेत (एम-सैंड) बनाए जाने को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक सुविधा, लिग्नाइट खदानों के लिए भूमि अधिग्रहण, नेवेली हवाई अड्डे का संचालन शुरू करने और तमिलनाडु ग्रीन एनर्जी

कॉर्पोरेशन लिमिटेड (टीएनजीईसीएल) और एनएलसीआईएल के बीच संयुक्त उद्यम के गठन के मुद्दों पर भी चर्चा की गई।विज्ञप्ति के अनुसार इस काम के लिए राज्य सरकार आवश्यक सहायता प्रदान करेगी।

बैठक में एनएलसीआईएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक प्रसन्ना कुमार मोटुपल्ली, कोयला मंत्रालय में संयुक्त सचिव संजीव कुमार कास्सी, कोल इंडिया लिमिटेड के निदेशक (विपणन) मुकेश चौधरी और तमिलनाडु पावर जनरेशन कॉरपोरेशन लिमिटेड के प्रबंध निदेशक डॉ. एल्बी जॉन वर्गीस भी शामिल थे।

अमेरिकी मंदी की आशंका और एलओसी के तनाव से बिगाड़ा शेयर बाजार का मूड

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में आज पूरे दिन जोरदार उतार-चढ़ाव होता रहा। सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने आज शुरुआती कारोबार में जोरदार मजबूती दिखाई, लेकिन दोपहर होते-होते दोनों सूचकांक बड़ी गिरावट का शिकार हो गए। सेंसेक्स ऊपरी स्तर से 1 हजार अंक से अधिक टूट गया, वहीं निफ्टी ने भी दिन के ऊपरी स्तर से करीब 350 अंक का गोता लगाया। हालांकि दूसरे सत्र में खरीदारी का सपोर्ट मिलने के कारण सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहे। बाजार के इस उतार-चढ़ाव के लिए अमेरिका में मंदी की आशंका, कच्चे तेल की कीमत में आए उछाल, बाजार में मुनाफा वसूली के दबाव और भारत-पाकिस्तान सीमा पर बने तनाव को मुख्य वजह माना जा रहा है।धामी सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट प्रशांत धामी का कहना है कि अमेरिकी इकोनॉमी को लेकर बनी चिंता ने घरेलू शेयर बाजार के मूड को भी बिगड़ने में आज अहम भूमिका निभाई। अमेरिका के कॉमर्स डिपार्टमेंट के शुरुआती अनुमानों में पहली तिमाही के दौरान अमेरिका की जीडीपी में 0.30 प्रतिशत की गिरावट का अनुमान लगाया गया है। हालांकि इसके पहले की तिमाही में अमेरिका की जीडीपी 2.40 प्रतिशत की दर से बढ़ी थी। ऐसे में अमेरिकी विकास दर में गिरावट की आशंका से निवेशक आज सतर्क होकर कारोबार करते रहे। प्रशांत धामी का मानना है कि अमेरिका दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। ऐसे में अमेरिका में मंदी आने का असर दुनिया भर के बाजारों, खासकर उभरती अर्थव्यवस्था वाले देशों के मार्केट पर काफी ज्यादा पड़ सकता है। इसी तरह भारत और पाकिस्तान की सीमा पर बने तनाव से भी शेयर बाजार के कारोबार पर आज असर पड़ा। गुरुवार रात लगातार आठवीं बार पाकिस्तान की सेना ने जम्मू कश्मीर के कई सेक्टर्स में सीजफायर का उल्लंघन किया था। हालांकि भारतीय सेना ने पाकिस्तान सेना की इस हरकत का कड़ा जवाब दिया। इसके बावजूद एलओसी पर बढ़ता तनाव घरेलू शेयर बाजार में निवेशकों के सेंटीमेंट्स पर निगेटिव असर डालता हुआ नजर आया।

खुराना सिक्योरिटीज एंड फाइनेंशियल सर्विसेज के सीईओ रवि चंदर खुराना का मानना है कि शेयर बाजार ने शुरूआती कारोबार में जोरदार तेजी पकड़ी थी लेकिन पहले घंटे के कारोबार के बाद ऊपरी स्तर पर शुरू हुई मुनाफा वसूली के कारण बाजार पर दबाव बन गया। इसी तरह अमेरिकी अर्थव्यवस्था से जुड़े कुछ अहम आंकड़े जल्दी आने वाले हैं, इसके पहले निवेशकों ने सतर्कता बढ़ाते हुए मुनाफा वसूली के विकल्प को ज्यादा पसंद किया। इसके अलावा अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान पर सेकेंडरी लेवल बैन लगाने की धमकी देने के बाद एक दिन पहले तक लगातार कमजोरी दिखा रहा क्रूड ऑयल आज अचानक करीब 2 प्रतिशत तक महंगा हो गया। क्रूड ऑयल की कीमत में आई स्थिति से भी शेयर बाजार के सेंटिमेंट पर आज नेगेटिव असर पड़ा।

उच्च शिक्षा में सकल नामांकन 50 प्रतिशत तक पहुंचाने में निजी विश्वविद्यालय महत्वपूर्ण: टीजी सीताराम

एजेंसी

हैदराबाद। शिक्षा उद्योग से जुड़े विशेषज्ञों ने भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सकल नामांकान का अनुपात (जीईआर) बढ़ाने में निजी क्षेत्र के विश्वविद्यालयों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया है और कहा है कि 2025 तक नामांकन दर 50 प्रतिशत तक बढ़ाने के लिए उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निजी संस्थानों की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यहां महिंद्रा विश्वविद्यालय परिसर में भारतीय निजी विश्वविद्यालय परिसंघ (सीआईपीयू) द्वारा उच्च शिक्षा पर हुए सम्मेलन में इस उद्योग की प्रमुख हस्तियों ने कहा कि भारत की शिक्षा प्रणाली को शोध-आधारित और अंत:विषय शैक्षणिक वातावरण बनाकर दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनने का लक्ष्य रखना चाहिए। सम्मेलन के समापन पर जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) टी. जी. सीताराम ने प्रारंभिक सत्र में कहा, निजी विश्वविद्यालय 2035 तक 50 प्रतिशत सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में माध्यमिक शिक्षा के बाद उच्च शिक्षा में नाम लिखवाने वाले विद्यार्थियों का अनुपात 2014-15 में 23.7 प्रतिशत था जो 2021-22 में 28.8 प्रतिशत तक पहुंच गया था। डॉ सीताराम ने कहा, विश्वस्तर पर तकनीक के क्षेत्र में उथल-पुथल और परिस्थितियों की गतिशील को देखते हुए हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों पर दूरदर्शी नेतृत्व को गढ़ने की महती जिम्मेदारी है।

नीति आयोग की रिपोर्ट: एमएसएमई क्षेत्र में बड़ी संख्या में कर्मचारी औपचारिक तकनीकी प्रशिक्षण से वंचित

एजेंसी

नई दिल्ली। नीति आयोग के अनुसार एमएसएमई क्षेत्र में कौशल की भारी कमी है। बड़ी संख्या में कर्मचारी औपचारिक तकनीकी प्रशिक्षण से वंचित हैं, जिससे उत्पादकता और विस्तार की संभावनाओं पर असर पड़ता है। साथ ही कहा है कि 2020 से 2024 के बीच एमएसएमई की औपचारिक क्रेडिट तक पहुंच में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। फिर भी केवल 19 प्रतिशत डिमांड ही औपचारिक क्रेडिट से पूरी हो पा रही है। नीति आयोग ने आज 'भारत में एमएसएमई की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना' शीर्षक से विस्तृत रिपोर्ट जारी की। यह रिपोर्ट इंस्टीट्यूट फॉर कॉम्पिटिटिवनेस (आईएफसी) के सहयोग से तैयार की गई है और इसमें भारत के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) की क्षमता को सशक्त करने के लिए वित्त, कौशल, नवाचार और बाजार तक पहुंच में सुधार जैसे पहलुओं पर विस्तृत खाका प्रस्तुत किया गया है। रिपोर्ट में एमएसएमई क्षेत्र से जुड़ी प्रमुख समस्याओं और चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। यह रिपोर्ट कपड़ा और परिधान निर्माण, रासायनिक उत्पाद, ऑटोमोटिव और खाद्य प्रसंस्करण जैसे चार प्रमुख क्षेत्रों पर केंद्रित है। रिपोर्ट में पाया गया है कि 2020 से 2024 के बीच एमएसएमई की औपचारिक क्रेडिट तक पहुंच में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। इस अवधि में छोटे और सूक्ष्म उद्यमों द्वारा अनुसूचित बैंकों से ऋण प्राप्त करने की दर 14 प्रतिशत से बढ़कर 20 प्रतिशत हो गई, जबकि मध्यम उद्यमों के लिए यह आंकड़ा 4 प्रतिशत से बढ़कर 9 प्रतिशत तक पहुंचा है। हालांकि, रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि अब भी 80 लाख करोड़ रुपये का बड़ा क्रेडिट गैप बना हुआ है और केवल 19 प्रतिशत डिमांड ही औपचारिक क्रेडिट से पूरी हो पा रही है।रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि एमएसएमई क्षेत्र में कौशल की भारी कमी है। बड़ी संख्या में कर्मचारी औपचारिक तकनीकी प्रशिक्षण से वंचित हैं, जिससे उत्पादकता और विस्तार की संभावनाओं पर असर पड़ता है। इसके अलावा, तकनीक को अपनाने में बिजली की अनियमित आपूर्ति, कमजोर इंटरनेट कनेक्टिविटी और उच्च लागत जैसी समस्याएं भी सामने आ रही हैं। रिपोर्ट यह बताती है कि केंद्र और राज्य सरकारों की विभिन्न योजनाओं के बावजूद, एमएसएमई मालिकों में योजनाओं की जागरूकता और पहुंच की कमी बनी हुई है। इसके समाधान के लिए रिपोर्ट राज्य स्तर पर मजबूत नीतिगत ढांचे, बेहतर निगरानी, डेटा एकीकरण और नीति निर्माण में हितधारकों की भागीदारी बढ़ाने की सिफारिश करती है। नीति आयोग का मानना है कि लक्षित हस्तक्षेप, संस्थागत सहयोग और नवाचार को बढ़ावा दिये जाने पर एमएसएमई भारत की समावेशी आर्थिक वृद्धि का प्रमुख स्तंभ बन सकते हैं।

भारत के कुल निर्यात में 2024-25 में 6.01 प्रतिशत की वृद्धि, रिकॉर्ड 824.9 अरब डॉलर पर : आरबीआई

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मार्च 2025 के लिए सेवा व्यापार पर जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत का कुल निर्यात (वस्तु एवं सेवा निर्यात सहित) 6.01 प्रतिशत की वृद्धि के साथ वित्तीय वर्ष 2024-25 में 824.9 अरब डालर के सर्वकालिक उच्च स्तर को छू गया है। रिजर्व बैंक के आंकडों के अनुसार सेवा निर्यात ने विकास की गति को आगे बढ़ाया, जो 2024-25 में 387.5 अरब डॉलर के ऐतिहासिक उच्च स्तर पर पहुंच गया, जो पिछले वर्ष के 341.1 अरब डॉलर से 13.6 प्रतिशत अधिक है। मार्च 2025 में, सेवा निर्यात 35.6 अरब डॉलर रहा, जो मार्च 2024 में 30.0 अरब डॉलर की तुलना में 18.6 प्रतिशत की साल-दर-साल वृद्धि दर्शाता है। पिछले वर्ष सकल निर्यात 778.1

अरब डॉलर के बराबर था। वाणिज्य मंत्रालय ने एक विज्ञप्ति में कहा देश के व्यापार की प्रगति की राह में एक नया मील का पत्थर स्थापित करता है। वर्ष 2024-25 में, पेट्रोलियम उत्पादों को छोड़कर व्यापारिक निर्यात बढ़कर रिकॉर्ड 374.1 अरब डॉलर हो गया, जो 2023-24 में 352.9 अरब डॉलर से 6.0 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करता है - यह अब तक का सबसे अधिक वार्षिक गैर-पेट्रोलियम व्यापारिक निर्यात है।

विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियां 10 महीने के शीर्ष पर, नए ऑर्डर की रफ्तार 14 साल में सबसे ज्यादा

एजेंसी

नयी दिल्ली। देश के विनिर्माण क्षेत्र की गतिविधियां अप्रैल, 2025 में सुधरकर 10 महीने के उच्च स्तर पर पहुंच गईं। इसमें नए ऑर्डर में मजबूत वृद्धि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। एचएसबीसी इंडिया विनिर्माण खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) पिछले महीने बढ़कर 58.2 पहुंच गया, जो जून, 2024 के बाद सबसे ज्यादा है। मार्च में विनिर्माण पीएमआई 58.1 रहा था। एचएसबीसी इंडिया की मुख्य अर्थशास्त्री प्रांजुल भंडारी ने कहा, नए निर्यात ऑर्डर में उल्लेखनीय वृद्धि भारत में उत्पादन में संभावित बदलाव का संकेत दे सकती है। व्यवसाय उभरते व्यापार परिदृश्य और अमेरिकी शुल्क घोषणाओं के अनुकूल हो रहे हैं। इस सकारात्मक प्रवृत्ति के साथ रोजगार और खरीद गतिविधि में बड़ा उछाल देखने को मिला है। कीमतों के मोर्चे पर भंडारी ने कहा, भारतीय वस्तुओं की मजबूत मांग ने कंपनियों की मूल्य निर्धारण क्षमता को बढ़ावा दिया। इससे कच्चे माल की लागत में मामूली वृद्धि के बावजूद बिक्री शुल्क अक्तूबर, 2013 के बाद सबसे अधिक बढ़ गया। भंडारी ने कहा, अप्रैल के आंकड़े बताते हैं कि विनिर्माण क्षेत्र की कंपनियों में आने वाले वर्ष में उत्पादन बढ़ने की संभावनाओं को लेकर धारणा मजबूत है।

उतार-चढ़ाव के बीच मामूली बढ़त के साथ बंद हुआ शेयर बाजार, निवेशकों को 59 हजार करोड़ की चपत

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में लगातार उतार-चढ़ाव होता रहा। कारोबार की शुरुआत में खरीदारी के सपोर्ट से शेयर बाजार ने आज जोरदार बढ़त हासिल की। इसी दौरान सेंसेक्स 81 हजार अंक के स्तर को पार करने में भी सफल रहा। हालांकि बाद में हुई बिकवाली के कारण यह सूचकांक ऊपरी स्तर से एक हजार अंक से अधिक लुढ़क भी गया। पहले घंटे के कारोबार के बाद बाजार में बने बिकवाली के दबाव की वजह से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने पहले तो लाल निशान में गोता लगाया, फिर खरीदारी के सपोर्ट से हरे निशान में रिकवरी करने में भी सफल रहे। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.32 प्रतिशत और निफ्टी 0.05 प्रतिशत की तेजी के साथ बंद हुए।आज दिनभर के कारोबार के दौरान फार्मास्यूटिकल, मेटल और रियल्टी सेक्टर के शेयरों में जमकर बिकवाली होती रही। इसी तरह पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, एफएमसीजी, एनर्जी, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स और टेलीकॉम इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। दूसरी ओर आईटी, ऑयल एंड गैस, मीडिया और बैंकिंग इंडेक्स बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहे। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार बिकवाली का दबाव बना रहा, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.41 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.07 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज मिडकैप और स्मॉलकैप शेयरों में हुई बिकवाली के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में करीब 60 हजार करोड़ रुपये की कमी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद घट कर 422.65 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी बुधवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 423.24 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 59 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। आज दिनभर के कारोबार में बीएसई में 4,085 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,761 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 2,183 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 141 शेयर बिना किसी उतार-चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,534 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,047 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,487 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 19 शेयर बढ़त के साथ और 11 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। जबकि निफ्टी में शामिल 50 शेयरों में से 17 शेयर हरे निशान में और 33 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 57.95 अंक की मामूली मजबूती के साथ 80,300.19 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होने के बाद खरीदारी के सपोर्ट से पहले घंटे में ही यह सूचकांक 935.69 अंक की मजबूती के साथ आज के सर्वोच्च स्तर 81,177.93 अंक तक पहुंच गया। इसके बाद बाजार में मुनाफा वसूली शुरू हो गई, जिसकी वजह से दोपहर 12 बजे के थोड़ी देर बाद यह सूचकांक ऊपरी स्तर से 1 हजार अंक से अधिक टूट कर 73.65 अंक की कमजोरी के साथ 80,168.59 अंक तक पहुंच गया। हालांकि दिन के दूसरे सत्र में एक बार फिर खरीदारों ने लिवाली का जोर बनाने की कोशिश की, जिसके कारण सेंसेक्स दिन के निचले स्तर से 300 अंक से अधिक की रिकवरी करके 259.75 अंक की तेजी के साथ 80,501.99 अंक के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स के विपरीत एनएसई के निफ्टी ने 22.30 अंक की कमजोरी के साथ 24,311.90 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की।

'अदाएं तेरी' में

नोरा फतेही

और ईशान खट्टर ने मचाया धमाल! दर्शक उनकी ऑन-स्क्रीन अदाओं के हुए दीवाने

रोमांटिक कॉमेडी सीरीज, द रॉयल्स ने अभी-अभी अपना शानदार ट्रैक 'अदाएं तेरी' रिलीज किया है और यह इंटरनेट पर धूम मचा रहा है। ग्लोबल स्टार नोरा फतेही और हर दिल अज़ीज़ ईशान खट्टर के साथ यह शानदार गाना रोमांस, रिदम और शाही आकर्षण का एक बेहतरीन मिश्रण है।एक भव्य महल की पृष्ठभूमि पर फिल्माया गया यह वीडियो एक विजुअल ट्रीट है, जो फिल्म की थीम की भव्यता से मेल खाता है। नोरा फतेही ने लाल रंग की बोल्ड ड्रेस में स्क्रीन पर ग्लैमर का तड़का लगाया है और उन्होंने इसे इतनी खूबसूरती से कैरी किया है कि हर कदम, हर मोड़ एक राजसी पल जैसा लगता है। ईशान खट्टर के साथ उनकी केमिस्ट्री और बेहतरीन तालमेल ने 'अदाएं तेरी' को एक अविस्मरणीय अनुभव बना दिया है।

गाने को लेकर दर्शकों की प्रतिक्रियाएं ज़बरदस्त हैं। सोशल मीडिया पर लोग इस जोड़ी की तारीफ करते नहीं थक रहे, जो इस जोड़ी और उनकी शानदार केमिस्ट्री से मोहित हैं। एक यूज़र ने लिखा: ओएमजी ये जोड़ी तो लाजवाब है ईशान और नोरा साथ में कमाल लग रहे हैं, ये पूरा रॉयल फील दे रहा है.

दूसरे ने कहा: नोरा ने तो आग लगा दी! कोरियोग्राफी और लुक्स दोनों टॉप क्लास हैं। अब तो द रॉयल्स देखने का इंतजार नहीं हो रहा!एक फैन ने तो उन्हें ताज भी पहनाया: नोरा इस म्यूजिक वीडियो में इतनी रॉयल और खूबसूरत लग रही हैं कि सच में यूनिवर्स की क्वीन लगती हैं.

भूतनी ही 'द भूतनी' को ले डूबेगी, सनी सिंह भी बेअसर, संजय दत्त की फिल्म का पिटना तय!

संजय दत्त की हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'द भूतनी' को लेकर शुरुआती प्रतिक्रियाएं मिली-जुली आ रही हैं. जहां कुछ कलाकारों के काम को सराहा जा रहा है, वहीं फिल्म के 2 अहम किरदारों को इसकी कमजोर कड़ी बताया जा रहा है. 'द भूतनी' के ये कमजोर किरदार इस फिल्म की सफलता पर पानी फेर सकते हैं. आइए जान लेते हैं कि आखिरकार संजय दत्त की फिल्म 'द भूतनी' के दो कमजोर किरदार आखिर हैं कौन?

फिल्म में संजय दत्त 'बाबा' यानी 'कृष्णा त्रिपाठी' का किरदार निभा रहे हैं. बाबा एक घोस्ट हंटर है. उनका किरदार आपका खूब मनोरंजन करता है. आसिफ खान और निकुंज शर्मा ने भी अपने किरदारों को बखूबी निभाया है. श्वेता तिवारी की बेटी पलक तिवारी ने भी उन्हें मिले हुए मौके का खूब फायदा उठाते हुए बड़े पर्दे पर अपना कमाल दिखाया है. लेकिन फिल्म में 'भूतनी' का प्रमुख किरदार निभा रहीं मौनी रॉय दर्शकों को कुछ खास प्रभावित नहीं कर पातीं. उनकी एक्टिंग में कोई वैरायटी नहीं नजर आती. उनका ये किरदार बहुत ज्यादा बनावटी नजर आता है. उनकी वजह से ये फिल्म हॉरर कॉमेडी की जगह सिर्फ कॉमेडी फिल्म बनकर रह गई है.

फिल्म को हो सकता है नुकसान

मौनी रॉय के अलावा 'द भूतनी' में सनी सिंह का किरदार भी कुछ खास रंग नहीं जमा पाया है. फिल्म के इमोशनल सीन्स में उनकी एक्टिंग थोड़ी कमजोर लगती है और इस वजह से दर्शक उनके किरदार से कनेक्ट नहीं कर पाते. फिल्म के बाकी कलाकारों ने अपनी भूमिकाओं के साथ न्याय किया है, लेकिन फिल्म के इन दो प्रमुख किरदारों का कमजोर प्रदर्शन फिल्म के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है.

रेड 2 से हैमुकाबला

'द भूतनी' के साथ अजय देवगन की फिल्म 'रेड 2' भी रिलीज हुई है. 'रेड 2' के मुकाबले संजय दत्त की फिल्म को कम स्क्रीन्स मिले हैं. 'द भूतनी' के सॉन्ग लॉन्च पर संजय दत्त ने ये अपील भी की थी कि इंडस्ट्री को सभी फिल्मों को मौका देना चाहिए. हालांकि संजय के इस अपील के बाद भी फिल्म डिस्ट्रीब्यूटर्स और थिएटर के मालिकों ने अजय देवगन की रेड को ही ज्यादा स्क्रीन्स देने का फैसला लिया था.

वो एक्टर जो 1 हजार ऑडिशन में हुआ था रिजेक्ट, 340 करोड़ी फिल्म ने बदली किस्मत, अब दे डाली 800 करोड़ी पिक्चर

हिंदी सिनेमा में आपने संघर्ष से सफलता तक की कई हानियां सुनी होंगी. आज हम भी आपको एक ऐसी ही कहानी से रूबरू करा रहे हैं. ये कहानी एक ऐसे एक्टर की है, जो आज हिंदी सिनेमा के सबसे बेहतरीन एक्टर्स में से एक माना जाता है, लेकिन कभी ये ऑडिशन के लिए दर-दर भटकता था.